प्रथम संस्करण ज्येष्ठ वी० नि० २४७५ ३०० प्रति

मूल्य ६)

मुद्रक—
पं० भँवरलाल जैन न्यायतीर्थ
श्री वीर प्रेस, जयपुर।

प्राक्कथन

प्राचीन काल में मन्दिरों में बड़े बड़े शास्त्र भण्डार हुआ करते थे। इन शास्त्र भण्डारों का प्रबन्ध समाज द्वारा होता था। कुछ ऐसे भी शास्त्र भण्डार थे जिनका प्रबन्ध भट्टारकों के हाथों में था। भट्टारक-संस्था ने प्राचीन काल में जैन साहित्य की अपूर्व सेवा ही नहीं की; किन्तु उसे नष्ट होने से भी बचाया है। नवीन साहित्य के सर्जन में तो इस संस्था का महत्त्वपूर्ण हाथ रहा है। लेकिन जब इसका पतन होने लगा तो इनकी असावधानी से सैंकड़ों शास्त्र दीमक के शिकार बन गये, सैंकड़ों स्वयमेव गल गये और सैंकड़ों शास्त्रों को विदेशियों के हाथों में बेच डाला गया। इस तरह जैन साहित्य का अधिकांश भाग सदा के लिये लुप्त हो गया। लेकिन इतना होने पर भी जैन शास्त्र-भण्डारों में अब भी अमूल्य साहित्य बिखरा पड़ा है और उसको प्रकाश में लाने का कोई प्रबन्ध नहीं किया जाता। यदि अब भी इस बिखरे हुये साहित्य का ही संकलन किया जावे तो हजारों की संख्या में अप्रकाशित तथा अज्ञात ग्रन्थ मिल सकते हैं।

आमेर शास्त्र भण्डार, जयपुर, जिसका विस्तृत परिचय पाठक गण श्री मन्त्री महोदय के वक्तव्य से जान सकेंगे, राजस्थान में ही क्या, सम्पूर्ण भारत के जैन शास्त्र भण्डारों में प्राचीन तथा महत्त्वपूर्ण है। इसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी आदि भाषाओं के १६०० के लगभग हस्तलिखित ग्रन्थों का बहुत ही अच्छा संग्रह है। जिनमें बहुत से ऐसे ग्रन्थ हैं जो अभी तक न तो कहीं से प्रकाशित ही हुये हैं और न सर्वसाधारण की जानकारी में ही आये हैं। अपभ्रंश साहित्य के लिये तो उक्त भण्डार भारत में अपनी कोटिका शायद अकेला ही है। इस भाषा के अधिकांश ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित हैं। हिन्दी साहित्य भी यहां काफी मात्रा में है। १५ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी का बहुत सा साहित्य यहां मिल सकता है। भट्टारक सकलकीर्ति, ब्रह्मजिनदास, भट्टारक ज्ञानभूषण, पं० धर्मदास, ब्रह्म रायमल्ल, पं० रूपचन्द, पं० अखयराज आदि अनेक ज्ञात एवं अज्ञात कवियों और लेखकों के साहित्य का यहां अच्छा संग्रह है।

संस्कृत भाषा का साहित्य भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। काव्य, न्याय, धर्मशास्त्र, दर्शन, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि सभी विषयों के प्राचीन ग्रन्थों की प्रतियां हैं। कुछ ऐसा साहित्य भी है जो अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है।

इस भण्डार में संस्कृत प्राकृत आदि भाषाओं के लगभग निम्न संख्या वाले ग्रन्थ हैं—

संस्कृत	५००
हिन्दी	१५०
अपभ्रंश	७०
प्राकृत	५०
टीका ग्रन्थ	३५

इनके अतिरिक्त शेष इन्हीं ग्रन्थों की प्रतियां हैं। शास्त्रों में साहित्य, दर्शन, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, व्याकरण, स्तोत्र आदि अनेकानेक विषयों का विवेचन किया हुआ मिलता है। ग्रन्थों की प्रतियां प्राचीन है। भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति संवत् १३६१ की महाकवि पुष्पदंत द्वारा रचित महापुराण की है अतिरिक्त १४ वीं शताब्दी से लेकर १८ वीं शताब्दी तक की ही अधिक प्रतियां हैं १६ वीं और

शताब्दी की तो बहुत ही कम प्रतियां हैं। इससे मालूम होता है कि भण्डार का कार्य १८ वी शताब्दी त तो सुचारु रूप से चलता रहा किन्तु शेष दो शताब्दियों में नवीन कार्य प्रायः बन्द सा होगया।

शास्त्रों की प्राचीन प्रतियों से विद्वानों को साहित्य और इतिहास के अनुसंधान में काफी सहाय मिल सकेगी। विवादग्रस्त कवियों के समय आदि की समस्या को सुलझाने में प्रस्तुत सूची बहुत सहाय होगी ऐसी आशा है।

'श्री महावीर शास्त्र भण्डार' श्री महावीरजी, उतना अधिक पुराना नहीं है। इस भण्डार में प्राची प्रतियां प्रायः जयपुर, आमेर या अन्य शास्त्र भण्डारों से गयी हुई मालूम होती हैं। यहां १९ वीं तथ २० वीं शताब्दी की जो प्रतियां हैं वे यहीं पर लिखी हुई हैं। उक्त भण्डार में अधिकतर पूजा साहित्य तथ स्तोत्र संग्रह है।

उक्त दोनों भण्डारों में ही जैनेतर साहित्य भी पर्याप्त रूप में है। हिन्दी भाषा की अपेक्षा संस्कृ भाषा का अधिक साहित्य है। उपनिषदों से लेकर न्याय, साहित्य, व्याकरण, आयुर्वेद और ज्योति साहित्य का भी अच्छा संग्रह है। कितनी ही प्रतियां तो प्राचीन हैं। इस संग्रह से जैन विद्वानों की उदारत का पता लगाया जा सकता है।

श्री महावीर अतिशय क्षेत्र कमेटी की बहुत से दिनों से अनुसंधान विभाग खोलने की इच्छा थी पर्याप क्षेत्र की ओर से समय २ पर थोड़ा बहुत ग्रन्थ प्रकाशन का काम होता रहा है लेकिन व्यवस्थित रू से लगभग २ वर्ष से अनुसंधान का काम चल रहा है। इस अनुसंधान के फल स्वरूप आमेर शास्त्र भण्डा जयपुर तथा श्री महावीर शास्त्र भण्डार, महावीरजी का विस्तृत सूचीपत्र पाठकों के सामने है। इ सूचीपत्र के अतिरिक्त 'आमेर भण्डार प्रशस्ति-संग्रह' प्रेस में दिया जा चुका है जो शीघ्र ही पाठकों सामने आने वाला है। प्राचीन साहित्य के खोज का कार्य चल रहा है। अज्ञात और महत्त्वपूर्ण रचनाएं प्रकाशित होकर समय २ पर समाज के सामने आती रहेंगी।

प्राचीन साहित्य की खोज करने का मेरा प्रथम अवसर है, इसलिये बहुत सी त्रुटियों तथा कमियों का रहना संभव है। लेकिन मुझे आशा है कि विद्वान् पाठक इनकी ओर उदारता पूर्वक ध्यान देकर मुझे सूचित करने की कृपा करेंगे।

श्री महावीर अतिशय क्षेत्र कमेटी तथा विशेषतः श्रीमान माननीय मन्त्री महोदय धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस अनुसंधान के कार्य को प्रारम्भ करके अपनी साहित्य-प्रियता का परिचय दिया है तथा अन्य तीर्थ क्षेत्र कमेटियों के सामने साहित्य सेवा का आदर्श उपस्थित किया है। श्रद्धेय गुरुवर्य पंडित चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ को तो धन्यवाद देना सूर्य को दीपक दिखाना है—जो कुछ मैं हूं सब उन्हीं की कृपा का फल है।

जयपुर,
दिनाङ्क १५ मई सन् १९४९

कस्तूरचन्द कासलीवाल

प्रकाशकीय वक्तव्य

राजपूताना की रियासतों में जयपुर एक ऐसी रियासत है जिससे जैनों का सैकड़ों वर्षों से सम्बन्ध चला आ रहा है। आमेर इसी वर्तमान जयपुर राज्य की प्राचीन राजधानी है। आमेर या अम्बर शहर जयपुर से करीब ५ मील उत्तर में पहाड़ियों के बीच में बसा हुआ है। जिस समय जयपुर नहीं बसा था उस समय आमेर ही प्रमुख शहर गिना जाता था और उसमें जैनों के कई बड़े बड़े शिखरबंद मंदिर थे जिनकी कारीगरी आज भी देखने योग्य है। आमेर के बाद नई राजधानी जयपुर विक्रम संवत् १७८४ में बनी। उस समय महाराजा सवाई जयसिंहजी कछवाहा राज्य करते थे। महाराजा जयसिंहजी के जमाने में राज्य के मुख्य मुख्य काम दि० जैनों के ही हाथ में थे किन्तु इनके पश्चात् इनके द्वितीय पुत्र सवाई माधोसिंहजी जब उदयपुर से आकर अपने बड़े भाई महाराज ईश्वरीसिंहजी की जगह राज्य सिंहासन पर बैठे तो उनके साथ उदयपुर के कुछ शैव राजगुरु जयपुर में आये और जैनों से द्वेष भाव रख कर उनके कई विशाल मन्दिरों को हथिया लिया। जैन प्रतिमाओं को तोड दिया गया और उनकी जगह शिवलिंग स्थापित कर दिये गये। उस जमाने में जैनों पर अगणित अत्याचार हुए उनका नमूना आज भी जीर्ण शीर्ण आमेर नगरी में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। आमेर के जिन जैन मन्दिरों को बरबाद कर दिया गया वे आज भी अपने पुराने वैभव तथा अत्याचारियों के अन्याय को दुनियां के सामने प्रकट कर रहे हैं। उन प्राचीन व विशाल मन्दिरों और मूर्त्तियों के साथ में हमारा कितना ज्ञान भण्डार आततायियों द्वारा नष्ट हुआ होगा उसका कोई अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। उन प्राचीन जैन मन्दिरों में से सिर्फ एक श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर जो सांवलाजी के नाम से प्रसिद्ध है किसी प्रकार बच गया था। इस मंदिर में एक शास्त्र भण्डार भी था जो प्राचीन भट्टारकों ने किसी प्रकार बचा कर रख लिया था।

भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिजी तक यह भंडार ज्यों का त्यों सुरक्षित रहा; किन्तु इनके बाद करीब ३०–४० वर्ष तक देवेन्द्रकीर्त्ति के उत्तराधिकारी भट्टारक श्री महेंद्रकीर्त्तिजी तथा अन्य शिष्यों में मनोमालिन्य रहा और उस जमाने में नहीं कहा जा सकता कि इस शास्त्र भंडार में से कितने ग्रन्थ निकल गये और किस किस के हाथ में जा पडे तथा कितने ग्रंथ चूहों व दीमकों का आहार बन गये। भट्टारक श्री महेंद्रकीर्त्तिजी के स्वर्गवास के पश्चात् जयपुर पंचायत ने उक्त मंदिर व शास्त्र भंडार को वापिस अपने अधिकार में लिया और तभी से इसको खोल कर देखने व बचे खुचे ज्ञान भंडार की रक्षा करने का सवाल समाज के सामने आया। उस समय जैन धर्म भूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी ने भी इसके लिये समाज को बहुत प्रेरणा दी। गत कई वर्षों में मुनि महाराजों के चतुर्मास जयपुर में हुये और उनके आग्रह से कई बार उक्त भंडार को खोलने का अवसर भी आया। जो भी शास्त्र भंडार को देखने आमेर गये वे वहां एक दो दिन से अधिक नहीं ठहर सके इस लिये ग्रन्थों के वेष्टनों के दर्शन के अतिरिक्त और कोई विशेष लाभ नहीं हो सका।

जब जयपुर दि० जैन पंचायत की तरफ से श्री महावीर क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी समिति बनी तो उसने इस मन्दिर व शास्त्र भंडार को अपने अधिकार में लिया। उसने मंदिर का जीर्णोद्धार कराया और शास्त्र भंडार को भी खुलाकर देखा गया। शास्त्र भंडार में कैसे २ ग्रंथ रत्न हैं इसको देखने के लिये श्रीमान् श्रद्धेय पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ ने बहुत प्रेरणा दी और उनके शिष्यों ने जिनमें पं० श्री प्रकाशजी शास्त्री, पं० भंवरलालजी न्यायतीर्थ आदि मुख्य हैं, पांच–सात दिन आमेर ठहर कर ग्रन्थों की सूची भी बनाई, किन्तु उससे न तो पंडित चैनसुखदासजी को ही संतोष हुआ और न प्रबन्ध कारिणी समिति को ही। इसके पश्चात कई जैन विद्वानों से आग्रह किया गया कि वे महीने दो महीने आमेर में रह कर पूरा सूचीपत्र तो बनावें किन्तु किसी ने भी इस पुनीत कार्य को करने की तत्परता नहीं दिखायी। आखिर यही निश्चित हुआ कि जब तक यह भंडार जयपुर न लाया जावे इसकी न तो सूची ही बन सकती है और न कुछ उपयोग ही हो सकता है। फलतः ग्रन्थ भंडार को जयपुर लाया गया और श्रीयुत भाई साहब सेठ बधीचंदजी गंगवाल की हवेली में ही एक कमरा उनसे मांग कर ग्रन्थों को उनमें रखा गया। उक्त पंडितजी साहब ने स्वर्गीय भाई मानचन्द्रजी आयुर्वेदाचार्य को सूची बनाने के लिये नियत किया और उन्होंने स्वयं तथा अपने अन्य साथियों को लेकर एक सूची पत्र बना दिया। इसके पश्चात् क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी समिति ने पंडित चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ की सम्मति के अनुसार भंडार का बड़ा सूची पत्र बनाने व प्रशस्ति संग्रह आदि अनुसंधान कार्य के लिये भाई कस्तूरचंदजी शास्त्री एम. ए. को नियत किया और उन्होंने नियमित रूप से कार्य करके यह सूची पत्र तैयार किया जो आज आप महानुभावों के समक्ष उपस्थित है।

करीब २ वर्ष से उक्त भण्डार का अनुसंधान कार्य व्यवस्थित रूप से चल रहा है। इस थोड़े से समय में ही भण्डार का विस्तृत सूचीपत्र और वृहद् प्रशस्ति–संग्रह तैयार हो चुके हैं। सूचीपत्र तो आपके सामने है तथा प्रशस्ति-संग्रह भी प्रेस में दिया जा चुका है। उक्त दोनों पुस्तकें साहित्य के अनुसंधान कार्य में काफी महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी साबित होंगी ऐसी आशा है।

इसी विभाग की ओर से समय २ पर "वीरवाणी" आदि प्रसिद्ध जैन पत्रों में अनेक खोजपूर्ण लेख प्रकाशित कराये चुके हैं। अभी तक ब्रह्म रायमल्ल, ब्रह्मजिनदास, भट्टारक ज्ञानभूषण, पं० धर्मदास, पंडित अखयराज, पंडित रूपचंद, कविवर त्रिभुवनचन्द्र आदि लेखकों और कवियों के साहित्य पर खोज पूर्ण लेख प्रकाशित हो चुके हैं।

चतुर्दश गुणस्थान चर्चा नामक महत्त्वपूर्ण हिन्दी गद्य के ग्रन्थ का सम्पादन भी प्रारम्भ हो गया है। उक्त ग्रन्थ शीघ्र ही प्रकाशित होकर स्वाध्याय प्रेमियों के सामने आने वाला है।

जयपुर में जब अखिल भारतीय हिस्टारिकल रिकार्डस कमीशन (All India Historical Records Commission) का २४ वां अधिवेशन हुआ था जब उसके तत्त्वावधान में ऐतिहासिक सामग्री की एक प्रदर्शिनी भी हुई थी। प्रदर्शिनी में उक्त भण्डार के प्राचीन ग्रन्थों को रखा गया था। ग्रन्थों की प्रशस्तियों में लिखित ऐतिहासिक सामग्री को पढकर बड़े २ विद्वानों ने सराहना की थी।

श्री वीर सेवा मन्दिर सरसावा की तरफ से पं० परमानन्दजी ने भी कई दिन तक जयपुर में ठहर कर इस ग्रंथ भण्डार का निरीक्षण किया है तथा खास खास ग्रंथों की प्रशस्ति आदि भी नोट करले गये हैं। इन ग्रन्थों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग हो, इसके लिये बाहर की सुप्रसिद्ध ग्रंथ प्रकाशन संस्थाओं, जैसे शान्ति निकेतन बोलपुर, भारतीय ज्ञानपीठ काशी, वीर सेवा मंदिर सरसावा आदि को समय २ पर प्राचीन प्रतियां भेज कर उनके कार्य में पूर्ण सहयोग दिया जाता है।

प्रबन्ध कारिणी समिति का विचार है कि अब इस भंडार को अधिकाधिक उपयोगी बनाया जाय और जगह जगह से अलभ्य ग्रंथों को लाकर या उनकी प्रतिलिपियां मंगाकर बडा ग्रंथालय स्थापित किया जाय ताकि विद्वान् लोग इससे लाभ उठा सकें। इस कार्य के लिये जयपुर के नये बनने वाले त्रिपोलिया (चौडा रास्ता) सदर बाजार में एक बड़ी बिल्डिंग खरीद भी ली गयी है। उसी बिल्डिंग में एक बडा हाल बनवा कर उसमें इस ग्रन्थालय की स्थापना करने का विचार किया गया है।

जैन समाज के विद्वान् तथा साहित्यप्रेमियों से हमारी प्रार्थना है कि वे प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ इस ग्रंथालय को भेट करें तथा अन्य सभी प्रकार की सहायता द्वारा इसे समृद्ध बनाने में सहयोग दें। वर्तमान काल में जैनधर्म के प्रचार तथा सच्ची प्रभावना का इससे बढिया और कोई उपाय नहीं है। जैन समाज को जीवित रहना है तो उसको चाहिये कि सबसे पहले अपने साहित्य की रक्षा तथा प्रचार करने के लिये दृढ संकल्प करलें और वृहत् राजस्थान की संभावित राजधानी जयपुर नगर में जो कि हमेशा से जैनियों का केन्द्र रहा है, इस ग्रंथालय को उन्नत बना कर जैनधर्म की सच्ची सेवा व प्रभावना में हमारा हाथ बटावें—सबसे हमारी यही प्रार्थना एवं अनुरोध है।

समाज का नम्र-सेवक
रामचन्द्र खिन्दूका
मन्त्री—
प्रबन्ध कारिणी कमेटी
श्री दि० जैन अतिशयक्षेत्र श्री महावीरजी

शुद्धाशुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	जोड़िये
२	६	अंतरायमला	अंतरायमल	
४	१४			टीकाकार–महेन्द्रसूरि
६	४	माणिक्क	माणिक्कराज	
१४	१८	गौतम स्वामी	पूज्यपाद स्वामी	
१५	१०	प्राकृत	अपभ्रंश	
२५	१२	सिन्दी	हिन्दी	
५३	६	गोवालोत्तर	गोपालोत्तर	
५३	१३	दशन	दर्शन	
७२	११	रचना	लिपि	
७२	११	लिपि	रचना	
७५	१४	गोहीका	गोदीका	
७८	६	नान्दितादिछद	नन्दिछंद	
६६	५			
६७	२	रचयिता	भाषाकार	
११८	२०	ब्रह्मजिनदास	पांडे जिनदास	
१५४	३	गद्य	पद्य	
१५६	२२			रचयिता हरिभद्र सूरि टीकाकार गुणरत्नसूरि
१६६	१६	अहर्छेव	अहर्देव	
१६१	५	विन्दी	हिन्दी	
१६३	८	नसुनन्दि	वसुनन्दि	
१६७	१६	अन्मित	अन्तिम	

श्री दिगम्बर जैन शास्त्र भण्डार, आमेर

(जयपुर)

ग्रन्थ--सूची

अ

अंकुरारोपण विधान

रचयिता पं० आशाधर। भाषा-संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। विषय—धार्मिक। पं० आशाधर कृत प्रतिष्ठापाठ में से उक्त प्रकरण लिया गया है।

अजित शांति स्तोत्र

रचयिता—अज्ञात। भाषा प्राकृत। पृष्ठ संख्या ३. गाथा संख्या ४०.

प्रति नं० २. पत्र संख्या २. साइज १०॥×४ इञ्च। लिपि संवत् १६२६. लिपिकर्त्ता ने बादशाह अकबर के शासन काल का उल्लेख किया है।

अजीर्ण मंजरी

रचयिता—अज्ञात। पृष्ठ संख्या ३. साइज १२×४॥ इञ्च। विषय-आयुर्वेद।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३. साइज ११×४॥ इञ्च। लिपिकर्त्ता पं० तेजपाल।

अर्जुन गीता

रचयिता—अज्ञात। भाषा—संस्कृत। पत्र संख्या ७. साइज १०×४॥ इञ्च। श्री कृष्ण ने अर्जुन को महाभारत युद्ध के समय जो कर्मयोग का पाठ पढाया था उसी विषय का इसमें वर्णन किया गया है।

अठारह नाता

रचयिता—अज्ञात। भाषा—हिन्दी। पत्र संख्या ४. साइज १०×४. मनुष्य के भव परिवर्तन से उसके सम्बन्धों का भी किस प्रकार परिवर्तन हो जाता है, आदि वर्णन बड़े सुन्दर ढंग से इसमें किया गया है।

अढाई द्वीपविधान

रचयिता—श्री मुनि शिवदत्त । भाषा—संस्कृत । पत्र संख्या २६. साइज १२॥×६ इञ्च । दीमक लग जाने से आरम्भ के १० पृष्ठ फट गये हैं । मंगलाचरण इस प्रकार है—

> ऋषभादिवर्द्धमानांतान् जिनान् नत्वा स्वभक्तितः ।
> सार्द्धद्वयद्वीपजिनः पूजां विरचयाम्यहं ॥ १ ॥

अंतरायमला

रचयिता—अज्ञात । भाषा—हिन्दी । पत्र संख्या २ साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रतिलिपि संवत् १७२७. मंगलाचरण इस प्रकार है—

> इंदं सयंचियजलणेति दुणवरनागंद नरण पईवो ।
> वंदे अरुहं वोत्थं समासउ अंतरायमलं ॥ १ ॥

अनगारधर्मामृत

रचयिता—महा पं० आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६० साइज १२×५ इञ्च । विषय—साधुओं के आचार धर्म का वर्णन । लिपि संवत् १८२७. सिरोंज नगर निवासी श्री धरमचन्द ने उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४५. साइज १२॥×५ इञ्च । ग्रन्थ अपूर्ण । ४५. से आगे के पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ३४४. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १५४६ प्रति सटीक है । टीका का नाम भव्यकुमुद चन्द्रिका है ।

अनर्घराघव

रचयिता—श्री मुरारी । भाषा—संस्कृत । पत्र संख्या ६४. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३६. विषय श्री रामचन्द्र का जीवन-चरित्र का वर्णन ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३०. साइज ११॥×४॥ प्रति अपूर्ण है ।

अनंतजिन पूजा

रचयिता—अज्ञात । भाषा—हिन्दी । पत्र संख्या ५. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । अन्तिम पृष्ठ नहीं है । विषय—श्री अनंतनाथ की पूजा ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८. साइज १०×४॥ इञ्च लिपि संवत १५६०.

अनंत व्रत कथा

रचयिता–श्री जीवणराम गोधा। हिन्दी पत्र संख्या ३. साइज ११×५. इञ्च। रचना संवत् १८७१. रचना करने का स्थान रेणी (जयपुर)

अनंत व्रत कथा

रचयिता–ब्रह्म श्री श्रुतसागर। भाषा–संस्कृत। पत्र संख्या ३. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत १८६५. लिपिकर्त्ता विजयराम।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३. साइज १२×५॥ इञ्च।

अनंतव्रत लघु कथा

रचयिता–अज्ञात। पत्र संख्या १. भाषा–हिन्दी (पद्य) साइज ११॥×५ इञ्च। पद्य संख्या २४.

अन्नपान विधि

रचयिता–अज्ञात। भाषा–संस्कृत। पत्र संख्या ४८. साइज १०×४॥ इञ्च। ग्रन्थ अपूर्ण है। विषय खाने पीने के विधान का वर्णन।

प्रति नं० २. पत्र संख्या-४६. साइज १०×६ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

अनिट् कारिकावृत्ति

रचयिता–अज्ञात। भाषा–संस्कृत। पत्र संख्या ३. साइज १०॥×४॥ इञ्च। विषय व्याकरण।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज १०॥×४॥

१ अनुप्रेक्षा प्रकाश

रचयिता–आचार्य कुन्दकुन्द। भाषा–प्राकृत। पत्र संख्या ६. गाथा संख्या ८५. साइज ६॥×४. विषय-बारह अनुप्रेक्षाओं का वर्णन।

२ अनुप्रेक्षा

रचयिता—श्री जोगेन्द्रदेव लक्ष्मीचन्द्रदेव। भाषा—प्राकृत। पत्र संख्या ३. साइज ६×४. इञ्च

अनेकार्थध्वनि मंजरी

रचयिता—श्री नन्ददास। भाषा—हिन्दी। पत्र संख्या ६. साइज १२×५. इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १५६. रचना संवत् १८२४. मंगसिर कृष्णा दशमी। विषय—शब्दकोष। मंगलाचरण यह है—

यो प्रभु ज्योतिमय जगतमय कारन करत अभेव।
विघन हरन सब शुभ करन नमो नमो भा देव॥

अन्तिम पाठ—

मार्गशीर्ष दशमी रवौ असित पक्ष शुभ जानि।
अब्द अठारह सै वरषि ऊपर चौविस मान॥ १॥
पठन काज लिखि प्रेम कर नंदकिसोर द्विवेद।
ज्ञानी लेहु सुधारि कवि अक्षर ही को भेद॥ २॥

अनेकार्थ नाम माला वृत्ति

रचयिता—आचार्य हेमचन्द्र। भाषा—संस्कृत। पत्र संख्या २५६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। ग्रन्थ श्लोक संख्या १२६१०.

इत्याचार्य श्री हेमचन्द्र विरचितायामनेकार्थाकोर वाकर कोमुदीत्यभिधानायां स्वोपज्ञानेकार्थ संग्रहटीकायामानेकार्थी शषाव्ययः कांडः समाप्तः।

श्री हेमसूरिशिष्येण श्रीमन्महेंद्रसूरिणा।
भक्तिनिष्टेन टीकायां तन्नाम्नेव प्रतिष्ठिता॥ १॥
सम्यक् ज्ञानानघेगुणो रत्नवाघः श्रीहेमचन्द्रप्रभोः।
ग्रंथव्याकृतिकोशलं व्यसति क्वास्मादृशां तादृशं॥
व्याख्यामः स्म तथापि तं पुनरिदं नाश्चर्यमंतर्मन—
स्तस्या स्रजमपि स्थितस्य हिमवयं व्याख्याम तु त्रूमह॥ २॥
यल्लक्ष्यं स्मृतिगोचरसमभवत् दृष्टं च शास्त्रांतर।
तत् सर्वे समदर्शि किंतु कतिचित् नादृष्ट लक्ष्याः क्वचित्॥
असूक्ष्यं स्वयमेव तेषु सुमुखिः शाकेषु लक्ष्यं बुधेः।

यस्मात् संप्रति तुच्छकश्मलधियां ज्ञानं कुतः सर्वतः ॥ ३ ॥

(इति श्री अनेकार्थनाममालावृत्ति संपूर्णा ।)

अनेकार्थ मञ्जरी ।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या २०. साइज ८॥×५॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १२२.

अनेकार्थ संग्रह ।

रचयिता आचार्य हेमचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३३. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १५५६. विषय—शब्दकोष।

अमरकोश ।

रचयिता श्री अमरसिंह। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५३. साइज १०॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८०२.

प्रति नं० २, पत्र संख्या ३१. साइज ११×५ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार का कहीं पर भी नाम नहीं लिखा हुआ है। कोश अपूर्ण है। ३१ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४६. साइज १२॥×६ इञ्च। कोष अपूर्ण है। केवल २ ही अध्याय हैं।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १२८. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १८८०. लिपि स्थान तक्षकपुर। लिपिकार श्री गुमानीराम।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या १४६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६२०. लिपिस्थान वगरू। लिपिकार श्री उदयराज।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ३०८. साइज १०॥×४॥ इञ्च। टीकाकार पं० क्षीर स्वामी। लिपि संवत् १७४६.

प्रति नं० ७, पत्र संख्या ४१. साइज १०×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या १०८. साइज १०×४॥ इञ्च। ५० से पहिले के तथा १०८ से आगेके पत्र नहीं हैं।

प्रति नं० ६ भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६६. साइज़ १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७५२. लिपिस्थान पाटली पुत्र।

अमर सेन चरित्र।

रचयिता श्रीमाणिक्य। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १५७७. प्रति अपूर्ण तथा जीर्ण शीर्ण हो चुकी है। ५७ पृष्ठ पर एक मोहर है जिसमें अरबी भाषा में शब्द लिखे हुये हैं।

अलंकार शेखर

रचयिता न्यायाचार्य श्री केशवमिश्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३५. साइज १०×४॥ इञ्च। विषय—अलंकार शास्त्र। लिपि संवत् १७५८.

अव्ययार्थ।

रचयिता अज्ञात। भाषा—संस्कृत। पत्र संख्या ३. साइज १०॥×४॥ इञ्च। विषय—व्याकरण

अस्तिनास्तिविवेकनिगमनिर्णय।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २००. साइज १०×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८। ३२ अक्षर। ग्रन्थ न्याय शास्त्र का है। २२ अध्याय हैं।

अश्व चिकित्सा।

रचयिता श्री नकुल। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २०. साइज १०×६ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

अष्ट कर्म प्रकृति वर्णन।

रचयिता श्री दुलराम। भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या १६. साइज १२॥×५॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या २०५. आरम्भ के तीन पृष्ठ नहीं हैं। प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट है।

अन्तिम भाग—

> करमखंड आगम अगम वरनैं कुं कवि एव।
> कै जाने जिन केवली कै जानें गनदेव ॥ १ ॥
>
> स्याद्वाद जिनवर वचन सत्य करि गहै सयान।
> सो भवि कर्म निवारिकै लहै मुक्ति पुरथान ॥ २ ॥

टीका सूत्र सिद्धांत सौं कर्मकांड गुन गाय।
जथा सकति कछु वरनयौं बाल बोध हित लाय ॥ ३ ॥

× × × ×

यह करम की परकति वखानत एकसो अठताल।
तस मांहि वंध अवध वरनन कटत कर्म जंजाल ॥
दलराम केवल वचन सरदहि सत्य करि परमान।
सो भेद कर्म विनासि भवि जन लहत शिवपुर थान ॥ ४ ॥

अष्टम चक्रवर्ति कथा

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २. साइज १०×४॥ इञ्च। पद्य संख्या १६. उक्त कथा, 'कथा-कोश' में से ली गयी है।

अष्ट सहस्री।

रचयिता श्री विद्यानन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २०६. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १६११ लिपि स्थान गिरिसोपा-दुर्ग (कर्णाटक प्रान्त) विषय-जैन न्याय।

अष्टाध्यायी सूत्र।

रचयिता आचार्य श्री पाणिनी। लिपी कर्त्ता श्री सूरि जगन्नाथ। पत्र संख्या ४६. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १७००. विषय-व्याकरण।

प्रति नं०२ पत्र संख्या ३६. साइज ११×५॥ इञ्च।

अष्टातक।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज ११×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५/४४ अक्षर। विषय-साहित्य।

अष्टाह्निका कथा।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्र कीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज ११॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ४७/५२ अक्षर। कथा के अन्त में कवि ने अपना परिचय दिया है।

अष्टाह्निका कथा ।

रचयिता पं० खुशालचन्द । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४. साइज १२×५ इञ्च । रचना संवत् १७७४. सम्पूर्ण पद्य संख्या ११७. प्रति सुन्दर है ।

अष्टाह्निका कथा ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७. साइज १०॥×५. इञ्च । लिपि संवत् १८४६. लिपिस्थान जयपुर ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६. साइज ११॥×६ इञ्च लिपि संवत् १८६१ ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४. साइज १२×६ इञ्च ।

अष्टाह्निका कथा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । साइज १०॥×४॥ इञ्च रचना संवत १८७१. "रेणी नगर के निवासी श्री जीवणराम के लिये ग्रन्थ की रचना की गयी" उक्त शब्द प्रशस्ति में लिखे हुये हैं ।

अष्टाह्निका व्रतोद्यापन पूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३६. लिपिस्थान सवाई माधोपुर (जयपुर) लिपिकार भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति ।

अज्ञान बोधिनी ।

रचयिता श्री शंकराचार्य । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १३. साइज १०×५॥ इञ्च । विषय न्याय ।

अक्षयनिधि पूजा ।

रचयिता अज्ञात । पत्र संख्या ५. भाषा संस्कृत । साइज ११×४॥ इञ्च लिपि संवत् १७६८. लिपिकार पं० दोदराज ।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या २१. साइज ११॥×४॥ इञ्च । पुस्तक में अन्य पूजाएँ भी हैं ।

आ

आकाश पंचमीव्रत कथा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत १६७७. प्रति अपूर्ण है ।

आचारांग सटीक।

टीकाकार आचार्य श्री शीलाङ्का। भाषा प्राकृत-संस्कृत। पृष्ठ संख्या १४३. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर २२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ६४-७०. अक्षर। विषय-धार्मिक। लिपि संवत् १६०४. श्री कुंभमेरुमहा दुर्ग में श्री गुण लाभ गणि ने ग्रंथ की प्रतिलिपि बनायी।

आचारांग सूत्र।

लिपि कर्त्ता—अज्ञात। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ६१. साइज ११×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रथम तथा अन्तिम पत्र नहीं हैं।

आचारसार।

रचयिता सिद्धान्तचक्रवर्ति श्री वीरनन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८३. साइज १०×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६-३२ अक्षर। लिपि सवत १८०५० लिपि स्थान जयपुर।

प्रति नम्बर २. पत्र संख्या ६१. साइज १०॥×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है दीमक लगी हुई है।

आत्म संबोधन काव्य।

रचयिता अज्ञात। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ४०. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २२-२६ अक्षर। प्रति लिपि संवत् १६०७।

प्रारम्भ—

जयमंगलगारउ वीसभडारउ भुवणसरणकेवलनयणु।
लोगोत्तमु गोत्तमु संजयशोत्तमु आराहमितहो जिणवयणु॥

प्रति नं० २. पत्र संख्या २६. साइज ८×५ इञ्च। लिपि संवत् १४४८. लिपिकर्त्ता श्री लक्ष्मण। प्रथम दो पत्र नहीं है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २७. साइज १०॥×४॥ इञ्च २२ से २६ तक के पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ३२. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पत्र पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०×३५ अक्षर। लिपि संवत् १५३४।

आत्म संबोधन पंचासिकाटीका ।

टीकाकार अज्ञात । भाषा प्राकृत-संस्कृत । पत्र संख्या १८. साइज ६।।×३।। इञ्च । प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ के तथा अन्तिम पृष्ठ नहीं हैं ।

आत्मानुशासन ।

मूलकर्त्ता आचार्य श्री गुणभद्र । भाषाकार– पं० दौलतरामजी । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । पत्र संख्या १४८. साइज १०।।×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०–३६ अक्षर । लिपि संवत् १६०५ भाषा सुन्दर और सरल है ।

आत्मावलोकन ।

रचयिता श्री दीपचन्द कासली वाल । पत्र संख्या ६३. भाषा-हिन्दी गद्य साइज ८।।×५ इञ्च । प्रारम्भ में प्राकृत भाषा की ११ गाथाओं का १७ पृष्ठ तक हिन्दी गद्य में अर्थ लिखा गया है किन्तु आगे ग्रन्थ समाप्ति तक लेखक स्वयं विना गाथाओं के ही विषय को पूर्ण करता है । भाषा बड़ी अच्छी है । उक्त रचना १८ वीं शताब्दि की है । गाथाएं किस महा ग्रन्थ में से ली गयी हैं यह भी अभी मालूम नहीं हो सका है ।

प्रति नं०२ पत्र संख्या ६८ साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १८८३ लिपिकार पं० दयाराम ।

आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्ण ।

रचयिता श्री भुवन तुंग सूरि । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ८ साइज ११।।×५।। इञ्च । लिपि संवत् १६०० प्रति अपूर्ण पहिला, तीसरा और आठवां पृष्ठ नहीं है ।

आदित्यवार कथा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पृष्ठ संख्या १०. साइज १०।।×४।। इञ्च । पद्य संख्या १५२.

आदिपुराण ।

ग्रन्थकर्त्ता महाकवि पुष्पदन्त । पत्र संख्या २५७ साइज ८।।×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४५–५५ अक्षर । कागज मोटा है । सील लगने से बहुत से पत्रों के अक्षर साफ पढने में

नहीं आते हैं। पृष्ठ १४ पर आधे कागज में सोलह स्वप्न और मरुदेवी का चित्र है। चित्र अभी तक स्पष्ट है। पृष्ठ १२ और १३ में दूसरे के हाथ की लिखावट है। प्रतिलिपि संवत् १४६१ भादवा बुदि ६ बुधवार। ३७ परिच्छेद। ग्रन्थ के अन्त में लिखाने वाले ने अपना वंश परिचय दिया है लेकिन वह अपूर्ण है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३०७. साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६६३. आमेर नगर में श्री महाराजा मानसिंह के राज्य में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २८८। साइज १२×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६६३। लिपिस्थान चोमदुर्ग।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या २०५। साइज १२×६॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। गाथाओं के ऊपर संस्कृत में भी शब्दार्थ दे रखा है।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या २१८। साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या १४५। साइज १०॥×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ६१। साइज १३॥×६ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

आदिपुराण।

रचयिता—श्री जिनसेनाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६७०। साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १६८१. लिपिस्थान मोजमाबाद (जयपुर) लिपिकर्त्ता श्री जोशी राघो।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३६६। साइज १२×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८०३। लिपिकर्त्ता श्री हरिकृष्ण

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४०४। साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८०६। लिपि स्थान जयपुर। लिपिकर्त्ता छाजूरामजी। लिपिकर्त्ता ने जयपुर के महाराजा श्री माधवसिंह जी के शासन काल उल्लेख किया है। प्रति सुन्दर, स्पष्ट और नवीन है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ३७१। साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि बहुत प्राचीन मालूम पड़ती है। अन्तिम पत्र कुछ फटा हुआ है।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ६७२। साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १७४६। पंडित शिवजीराम के पुत्र श्री नेमीचन्द्र के पढ़ने के लिये ग्रन्थ को भेंट किया गया।

आदिपुराण।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८२। साइज ११॥×५॥ इञ्च।

प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-४० अक्षर। लिपि संवत् १६६२। लिपिकार ने संग्रामपुर के महाराजा मानसिंह के नाम का तथा जयपुर के दीवान बालचन्दजी का उल्लेख किया है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १६६। साइज १३×५ इञ्च।

प्रति नं० ३। पत्र संख्या १८२। साइज ११×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६६२। लिपि स्थान संग्रामपुर। लिपिकर्त्ता ने महाराजा मानसिंह के नाम का उल्लेख किया है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १६६। साइज १३×५ इञ्च। लिपि संवत् १८२३।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १८८। साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४२ अक्षर। प्रति प्राचीन है।

आदिनाथपुराण।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या २१५. साइज १०॥×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर। लिपि संवत् १८५६. लिपिकर्त्ता ब्रह्मचारी प्रेमचन्द।

मंगलाचरण—

आदि जिनेश्वर आदि जिनेश्वर आरणसेसु सरस्वती सामीने वलस्तवु;
बुधि सार हूं मांगउ निरमल, श्री सकलकीर्ति पाय मरणमीने।
मुनि भुवनकीर्ति गुरुवाहुं सौहजला, रासकरी सीहुरुवडो,
तमपरसादेसार, श्री आदि जिणंद गुण वर्णवु चारित्र जोइ भवतार ॥१॥

प्रति नं० २। पत्र संख्या १६। साइज ११×६ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

आदीश्वर फाग।

रचयिता भट्टारक श्री ज्ञान भूषण। भाषा संस्कृत हिन्दी। पत्र संख्या ३१। प्रत्येक पृष्ठ पर ६-११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३०-३८ अक्षर। साइज १०॥×५ इञ्च। श्लोक संख्या ५६१। लिपि संवत् १६३५। लिपि स्थान मालपुरा। ग्रन्थ में भगवान आदिनाथ के निर्वाण कल्याण का वर्णन किया गया है।

प्रारम्भ—

यो वृंदारकवृंद वंदितपदो जातो युगादौ जयां,
हत्वा दुर्जयमोहनीयमखिलं शेषं च घातित्रयं।

केवलबोधनं जगदिदं संबोध्य मुक्ति गत—
कल्याणिकपंचकं सुरकृतं व्याख्यास्यामि स्फुटं ॥१॥
हे प्रणमीय भगवति सरसति जगति विबोधनमाय।
गाइस्यूं आदि जिणंद सुरदेवि वंदित पाय॥ १॥

आनंदस्तोत्र।

रचयिता श्री महानन्द। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४. गाथा संख्या ४३। साइज १०×४। इञ्च। विषय—चरणानुयोग।

आलाप पद्धति।

रचयिता श्री पं० देवसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११। साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४–४० अक्षर। लिपि संवत् १७६४। लिपि स्थान-बसवा (जयपुर) विषय तत्व विवेचन।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ७. साइज ११||×४||.

प्रति नं० ३. पृष्ठ संख्या २०. १०||×६ इञ्च। लिपि संवत् १७७५ फागुण सुदी ११।

प्रति नं० ४. पृष्ठ संख्या १८. साइज १०||×४|| इञ्च।

प्रति नं० ५. पृष्ठ संख्या १३. साइज १०||×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

प्रति नं० ६. पृष्ठ संख्या १३. साइज १०||×४ इञ्च।

प्रति नं० ७. पृष्ठ संख्या ६. साइज १२×५ इञ्च।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ८. साइज ६×५|| इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

प्रति नं० ९. पत्र संख्या १४. साइज १०||×४|| इञ्च। लिपि संवत् १७६३। लिपिकार—लूणकरण।

प्रति नं० १० पृष्ठ संख्या १०. साइज १०||×४|| इञ्च। अन्त में नयसंकेतदीपिका भी इसका नाम दे रखा है।

प्रति नं० ११. पत्र संख्या ८। साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत् १७७२. लिपिस्थान-पाटलिपुत्र।

आरम्भसिद्धि वार्त्तिक।

रचयिता श्री उदयप्रभ। टीकाकार श्री वाचनाचार्य हेमहंस गणि। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १२८. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४-५० अक्षर। रचना संवत् १५१४. विषय–ज्योतिष। ग्रंथ के अन्त में प्रशस्ति दी हुई है।

आराधनासार।

रचयिता पं० देवसेन। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ४१। साइज १०॥×५॥ इञ्च। गाथा संख्या ११५। संस्कृत में भी कहीं २ अर्थ दे रखा है। विषय–आध्यात्मिक।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ११. साइज ६॥×६ इञ्च।

प्रति नं० ४. पृष्ठ संख्या १२. साइज १०×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। १२ पृष्ठ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

आराधनासार वृत्ति।

रचयिता श्री पं० आशाधर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७. साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १५८१. विषय–धार्मिक।

आत्रेय संहिता।

रचयिता श्री आत्रि ऋषि। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १३७. साइज १३×५ इञ्च। लिपि संवत् १८४०. विषय–आयुर्वेदिक।

इ

इष्टोपदेश।

रचयिता गौतमस्वामी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। पद्य संख्या ५२. विषय-आध्यात्मिक।

इष्टोपदेश।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६. साइज ६×५ इञ्च।

उ

उड्डीस सहस्रतन्त्र ।

रचयिता अज्ञात । पत्र संख्या ३३. साइज ८×४॥ इञ्च । भाषा संस्कृत । लिपि संवत् १८८३.

उणादि सूत्रवृत्ति ।

टीकाकार श्री उज्वलदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८४. साइज ८॥×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३०.

मंगलाचरण—

देवमीश्वरं वाचं नमस्कृत्य पदं गुरो: ।
श्रीमदुज्वलदत्तेन क्रियते वृत्तिरुत्तमा ॥ १ ॥

उत्तरपुराण ।

रचयिता महाकवि पुष्पदन्त । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या ४७३. साइज १०॥×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८–४४ अक्षर । ग्रन्थ अपूर्ण । ४७३. से आगे पृष्ठ नहीं है ।

उत्तरपुराण (सटीक) ।

टीकाकार प्रभाचन्द्राचार्य । भाषा अपभ्रंश-संस्कृत । पत्र संख्या ५७. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३७–४३ अक्षर । टीकाकाल १०८० . लिपि संवत् १५७७। लिपिस्थान नागपुर ।

उत्तरपुराण ।

रचयिता गुणभद्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३७३. साइज १०॥×६ इञ्च । प्रति नवीन तथा स्पष्ट है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या २७६. साइज ११॥×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८७५ ज्येष्ठ बुदि ५ बृहस्पतीवार । लिपि स्थान जयपुर । लिपि कर्त्ता यति श्री चिमनसागर । श्री धणराजजी जीवणरामजी ने लिपि करवायी । प्रति के दोनों तरफ कठिन शब्दों का सरल अर्थ दे रखा है । प्राचीन शोधित प्रति है ।

उत्तरपुराण।

रचयिता भट्टारक सकलकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २१६. साइज १०॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १६०५. प्रति नवीन है।

उदय प्रभारचना।

रचयिता श्री उदयप्रभाचार्य। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ४४ साइज १२॥×५॥ प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५–४० अक्षर। विषय-जैन दर्शन। ग्रन्थ कार ने आचार्य हेमचन्द्र श्री सिद्धसेन दिवाकर महाराज कुमार पाल आदि का भी उल्लेख किया है। श्री सिद्धसेन दिवाकर विरचित द्वात्रिंशद्‌त्रिं-शका के अनुसार इस ग्रन्थ की रचना की गयी है। ग्रन्थ सटीक है। कारिकाओं की टीका है जो स्पष्ट और सरल है। ग्रन्थ अपूर्ण है ४४ से आगे के पृष्ठ नहीं है।

मंगलाचरण—

यस्य ज्ञानमनंतवस्तुविषयं पूज्यते देवतैः।
नित्यं यस्य वचो न दुर्नयकृतैः कोलाहलैर्लुप्यते॥
रागद्वेषमुखाद्विषो च परिषत् क्षिप्ताक्षणार्धेन सा.
स श्री वीरप्रभुर्विधूतकलुषां बुद्धिर्विधत्तां मम॥ १॥

उपदेशरत्नमाला।

रचयिता आचार्य श्री सकल भूषण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १३६ पद्य संख्या ३३८३. रचना संवत् १६२७. लिपि संवत् १७४५. भट्टारक श्री जगत्कीर्ति के शासनकाल में श्री गंगाराम छावडा श्री वनमाली-दास पहाड्या, श्री मनरामसेठी, श्री वेणा पांड्या, श्री माधोसाह पाटणी, श्री जंगा सोनी, श्री पूरा अजमेरा आदि सज्जनों ने उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई।

आरम्भ—

तीर्थंकरों की स्तुति करने के पश्चात् पूर्व प्रसिद्ध आचार्यों का इस प्रकार स्मरण किया है—

श्रीमद्वृषभसेनादिगौतमांतगणेशिनः।
वंदे विदितसर्वार्थान् विश्वर्द्धिपरिभूषितान्॥ १॥
श्रीकुन्दकुन्दनामानं यतीसंयतमत्सरं।
उमास्वातिसमंतादिभद्रांतपूज्यपादकं॥ २॥

अकलंकं कलाधारं नेमिचंद्रं मुनीश्वरं ।
विद्यानंदं प्रभाचंद्रं पद्मनंदं गुरुं परं ॥ ३ ॥
श्रीमत्सकलकीर्त्याख्यं भट्टारकशिरोमणि ।
भुवनादिसुकीर्त्यं तत् गच्छाधीशं गुणोद्धुरं ॥ ४ ॥

अन्तिमभाग—

श्रीमूलसंघतिलके वरनंदिसंघे, गच्छे सरस्वतिसुनाम्नि जगत्प्रसिद्धे ।
श्रीकुंदकुंदगुरुपट्टपरंपरायां श्रीपद्मनंदि मुनयः समभूज्जिताद्यः ॥ १ ॥
तत्पट्टधारी जनचित्तहारी पुराणमुख्योत्तमशास्त्रकारी ।
भट्टारक श्रीसकलादिकीर्त्तिः प्रसिद्धतामाजनि पुण्यमूर्त्तिः ॥ २ ॥
भुवनकीर्त्तिगुरुस्ततदर्ज्जिते भुवनभासनशासनमंडनः ।
अजनि तीव्रतपश्चरणक्षमो विविधधर्मसमृद्धिसुदेशकः ॥ ३ ॥
श्रीज्ञानभूपापरिभूषितांगं प्रसिद्धपांडित्यकलानिधानः ।
श्रीज्ञानभूपाख्यगुरुस्तदीय पट्टोदयाद्राविवभानुरासीत् ॥ ४ ॥
भट्टारक श्रीविजयादिकीर्त्तिस्तदीयपट्टे परिलब्धकीर्त्तिः ।
महामनामोक्षसुखाभिलापी बभूव जैनावनियार्च्यपादः ॥ ५ ॥
भट्टारकः श्री शुभचन्द्रसूरिः तत्पट्टपंकेरुहतिग्मरश्मिः ।
त्रैविद्यवंद्यः सकलप्रसिद्धो वादीभसिंहोजयतिधरित्र्यां ॥ ६ ॥
पट्टे तस्य प्रीणितप्राणिवर्गः शांतोदांतः शीलशाली सुधीमान् ।
जीयात्सूरिश्रीसुमत्यादिकीर्त्तिः गच्छाधीशः कम्रकांतिकलावान् ॥ ७ ॥
तस्याभूच्च गुरुभ्राता नाम्नासकलभूषणः ।
सूरिर्जिनमतेलीनमनाः संतोषपोषकः ॥ ८ ॥
तेनोपदेशसद्रत्नमालसंज्ञोमनोहरः ।
कृता कृतिजनानंद निमित्तं ग्रंथएकः ॥ ९ ॥
श्री नेमिचंद्राचार्यादियतीनामाग्रहाकृतः ।
सवर्द्धमानाद्येलादि प्रार्थनातोमयैपकः ॥ १० ॥
सप्तविंशत्यधिके षोडशशतसंवत्सरे सुविक्रमतः ।
श्रावणमासे शुक्ले पक्षे षष्ठं कृतोग्रंथः ॥ ११ ॥

ग्रन्थ का दूसरा नाम षट्कर्मोपदेशरत्नमाला भी है ।

इति श्री भट्टारक श्री शुभचन्द्रशिष्याचार्य श्रीसकलभूषणविरचितायामुपदेशरत्नमालायां षट्कर्म—प्रकाशिकायां तपोदानवर्णनो नामाष्टादशमः परिच्छेदः ॥

उपदेशमाला ।

रचयिता श्री धर्मदासगणि । भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १८. साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४/५० अक्षर । प्रति प्राचीन है । कुछ कुछ पत्र गलने भी लग गये हैं ।

मंगलाचरण—

नमि ऊण जिणवरिंद इंदनरिंदचियतल्लोय गुरू ।
उवएं समालमिणमो वुछामि गुरुवएसेण ॥ १ ॥
जगचूडामणिभूउ उस भोरातिलोयसिरि तिलउ ।
एगोलागाइच्चोए गोचरकू तिहुयणस्स ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

इयधम्मदासगणिणा जिणवयणुवएसकज्जमालाए ।
मालुव्वविविहकुसुमा कहियाउ मुसीसवग्गस्स ॥ १ ॥
संतिकरी वुद्धिकरी कल्लाणकरी सुमंगलकरीय ।
होउ कहगस्सपरिसाए तहय निव्वाणफलदाई ॥ २ ॥
इत्थ समचय इणमो माला उवएसपगरणंयगयं ।
गाहाणं सव्वग्गं पंचसयाचेवचालीसा ॥ ३ ॥
जावइ लवणसमुद्दो जावइमरकत्तमंडिउमेरु ।
तावय रईयामाला जयंमिमिवावराहा ॥ ४ ॥

प्रति नं० २ पत्र संख्या २० साइज १०॥×४॥ प्रति पूर्ण तथा शुद्ध है ।

उपासकाध्ययन ।

रचयिता आचार्य वसुनन्दि । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या २५. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १६०२. चैत्र शुक्ला चतुर्दशी । लिपि स्थान—तक्षक महादुर्ग ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या २६. साइज १०॥×५ इञ्च । लिपि संवत् १६१२. लिपिस्थान तक्षकगढ महा-

दुर्ग। लिपि कर्त्ता ने अन्त में एक लम्बी चौडी प्रशस्ति लिखी है। प्रशस्ति में महाराजाधिराज श्री रामचन्द्र के राज्य का उल्लेख किया है।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ३७. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत १६२३. लिपि स्थान गढचंपावती। अन्त में प्रतिलिपि कराने वाले का अच्छा परिचय दे रखा है।

उपासकाचार।

रचयिता आचार्य श्री लक्ष्मीचंद्र। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या २०. साइज १०॥×५ इञ्च। सम्पूर्ण गाथा संख्या २२४. लिपि संवत १८२१. लिपिस्थान जयपुर।

ऊ

ऊष्म विवेक कोष।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १४. साइज १०॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२-३८ अक्षर। विषय-व्याकरण।

ए

एकावली व्रतकथा।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या १५. साइज १०×४ इञ्च। भाषा संस्कृत। प्रति अपूर्ण है। लिपि कार ने जगह २ खाली स्थान छोड रखे हैं शायद लिपिकर्त्ता ने भी अशुद्ध लिपि से प्रतिलिपि बनाई है।

एकीभावस्तोत्र।

रचयिता श्री वादिराजसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०. साइज ११॥×४॥ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार ने अपना उल्लेख नहीं किया है।

प्रति नं० २. साइज १०×५ इञ्च। पत्र संख्या १०. प्रति सटीक है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २३. साइज १३×५ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार श्री श्रुतसागर सूरि हैं।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ८. साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत १७६६. प्रति सटीक है।

एकीभावस्तोत्र।

मूलकर्त्ता श्री वादिराज। भाषाकार श्री पंडित हीरानन्द। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४. साइज ११×४ इञ्च।

ऋ

ऋतु वर्णन।

रचयिता अज्ञात। भाषा। संस्कृत। पत्र संख्या ३. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

ऋतुसंहार।

रचयिता महाकविकालिदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १३. साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १८६६. लिपि स्थान पचेवर। लिपि भट्टारक श्री सुरेन्द्र कीर्त्ति के शिश्य नैनसुख के पढने के लिपि बनायी गयी।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १५. साइज ६×६॥ इञ्च। लिपि संवत् १८३०।

ऋषिमंडलस्तोत्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १२. साइज ६×५ इञ्च। प्रति नवीन है।

ऋषिमंडलपूजा।

रचयिता गुणनन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८. साइज ११×४॥। लिपिकार पं० मगाइ। लिपि स्थान टोंक।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २२. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७६२. श्री कनककीर्त्ति के शिष्य श्री सदाराम ने उक्त पूजा की प्रतिलिपि बनायी।

क

कथाकोष।

अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३५. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७१७. लिपि स्थान सिलपुर। प्रति अपूर्ण है। प्रथम २३. पृष्ठ नहीं है।

ग्रन्थ का अन्तिम भाग—

> न्यासेन कथिता पूर्वल्लेखको गणनायकं।
> तस्यैव चलिता दृष्टिः मनुष्यानां च का कथा॥ १॥

कथासंग्रह ।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ११. साइज ११॥×५ इञ्च । दीमक लगजाने से ग्रंथ फट गया है ।

कथासंग्रह ।

संग्रह कर्त्ता अज्ञात । भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या २६. साइज १०॥×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में २५–३० अक्षर । संग्रह में बारह व्रत कथा, मौन एकादशी व्रत कथा, श्रुतस्कंध व्रत कथा, कोकिला पंचमी व्रत कथा, और रात्रि भोजन कथा हैं । ये कथायें निम्न कवियों के द्वारा लिखी हुई हैं ।

नाम कथा	कवि नाम
बारह व्रत कथा	ब्रह्म चंद्र सागर
मौन एकादशी व्रत कथा	ब्रह्म ज्ञान सागर
श्रुतस्कंध व्रत कथा	„
कोकिला पंचमी व्रत कथा	„
रात्रि भोजन कथा	अज्ञात

कथाविलास ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ८०. साइज १०॥×४॥ इञ्च । विषय गंगावतरण । प्रति अपूर्ण है । ८० से आगे के पृष्ठ नहीं हैं । प्रति नवीन है ।

कमलचंद्रायणव्रतोद्यापन ।

रचयिता श्री देवेन्द्रकीर्ति । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ३. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७८२. लिपि स्थान सवाईमाधोपुर ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३६ ।

कर्णामृतपुराण

रचयिता भट्टारक श्री विजयकीर्त्ति । भाषा हिन्दी । पृष्ठ संख्या ८२. साइज ८×७ इञ्च । विषय— भगवान आदिनाथ से लेकर भगवान महावीर के पूर्व भवों का वर्णन दिया हुआ है । अध्याय अड़तीस । रचना

संवत् १८२६. अन्त में लेखक ने अपना भी परिचय दिया है लेकिन ६० से आगे के पृष्ठ एक दूसरे के चिपकने से पढने में नहीं आसकते।

कर्मकांड सटीक।

ग्रंथ कर्त्ता श्री नेमिचन्द्राचार्य। भाषा प्राकृत। टीकाकार श्री सुमतिकीर्त्ति सूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६०. साइज ११॥×४॥ इञ्च। ग्रंथ प्रमाण १३७५. श्लोक। लिपि संवत् १७७६।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २५. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १६२२।

कर्मचूरव्रतोद्यापन।

रचयिता श्री लक्ष्मीसेन। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ७. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८५८.

कर्मदहन पूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १३. साइज १२×५॥ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १५. साइज ११॥×५ इञ्च

कर्मप्रकृति।

मूलकर्त्ता आचार्य नेमिचन्द्र। टीकाकार अज्ञात। भाषा प्राकृत-संस्कृत। पत्र संख्या ४६. साइज ११॥×४॥ इञ्च। विषय—गोम्मटसार कर्मकाण्ड की मुख्य २ गाथाओं का संकलन और उन पर संस्कृत में टीका। टीका सरल और स्पष्ट है। लिपि संवत् १७७७. मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र के शासनकाल में खंडेलवालवंशोत्पन्न श्री पयाइल ने नागपुर नगर में ग्रंथ की प्रतिलिपि कराई।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या १४. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८००.

प्रति नं० ३. पृष्ठ संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। केवल मूल है। गाथा संख्या १६०.

प्रति नं० ४ पृष्ठ संख्या १६. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ५. पृष्ठ संख्या १४. साइज १०×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ६. पृष्ठ संख्या २७. साइज ११×४ इञ्च। लिपि संवत् १७७६ श्री आनंदरामजी के लिए श्री हेमराज ने लिखी।

प्रति नं० ७. पृष्ठ संख्या ५४. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार श्री सुमतिकीर्ति। टीका संस्कृत में है।

प्रति नं० ८. पृष्ठ संख्या २१. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६२१. लिपिस्थान चंपावती।

प्रति नं० ९. पत्र संख्या १३. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं०. १०. पृष्ठ संख्या १२. साइज ११॥×५ इञ्च।

प्रति नं० ११. पृष्ठ संख्या १३. साइज ११॥×५॥ इञ्च।

प्रति नं० १२. पृष्ठ संख्या १८. साइज १२×५॥ इञ्च।

प्रति नं० १३. पृष्ठ संख्या १६. साइज १२×६ इञ्च।

कर्मविपाक।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २०. साइज १०×४॥ इञ्च।

अन्तिम अंश—

इति भट्टारक सकलकीर्तिदेवविरचितकर्मविपाक ग्रंथ समाप्तः। माहिसासिनपुरे आदिनाथचैत्यालये ब्रह्म साह साख्येन स्वहस्तेन लिखितः।

कर्मस्वरूप।

टीकाकार पं० श्री जगन्नाथ। भाषा प्राकृत-संस्कृत। पत्र संख्या ५४. साइज १३×६॥ इञ्च। लिपि संवत् १७५८. श्री नेमिचन्द्राचार्य के गोमट्टसार कर्मकांड नामक ग्रंथ से प्रमुख २ गाथाओं का संस्कृत में अर्थ लिखा गया है। आदि के पृष्ठ नहीं हैं।

कल्पसूत्र।

रचयिता श्री भद्रबाहु स्वामी। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या १५७. साइज १०×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४८-५४ अक्षर। लिपि संवत् १७८६. प्राकृत भाषा से संस्कृत में टीका भी है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८८. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १५४५. मन्त्री श्री साराक ने श्री देवनंदन के उपदेश से ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनवाई थी।

कल्याणमंदिरस्तोत्र ।

रचयिता श्री कुमुदचन्द्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४. साइज १०॥×५ इञ्च । प्रति सटीक है । प्रथम पृष्ठ फटा हुआ है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १५. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १५६५. प्रशस्ति है लेकिन अपूर्ण है । लिपि स्थान चंपावती ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १५. साइज १०॥×४ इञ्च । लिपि संवत् १६३६. लिपिस्थान—मालपुरा (जयपुर) । प्रति सटीक है । टीकाकार केशवगणि हैं ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ४. साइज ११॥×५ इञ्च । लिपि संवत् १५१८. लिपिकार—अमरदेवगणि ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १५. साइज १०॥×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । प्रथम पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १३. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति सटीक है ।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ७. साइज ११×४ इञ्च । प्रति सटीक है ।

प्रति नं० ८ पत्र संख्या २०. साइज १२×६ इञ्च । प्रति सटीक है । टीका विस्तृत है । प्रति अपूर्ण है । २० से आगे के पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ७. साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १७८७.

प्रति नं० १०. पत्र संख्या ८. साइज १०×४ इञ्च ।

प्रति नं० ११. पत्र संख्या ४. साइज १०×४ इञ्च । स्त्रोत्र की लिपि की मानबाई ने करवायी लिपिकाल अज्ञात ।

प्रति नं १२. पत्र संख्या४. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८०६ । लिपि स्थान उदयपुर । लिपि कर्ता श्री जिनदास मुनि ।

प्रति नं १३. पत्र संख्या ३०. साइज १३×४॥. लिपि संवत् १८३८.

करकण्डु चरित्र ।

रचयिता मुनि कनकामर । भाषा अपभ्रंश ।पत्र संख्या ६८ साइज १०×४॥ इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर १०

पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८–४२ अक्षर। प्रतिलिपि संवत् १५६३ माघ बुदि १३।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६२. साइज १०॥×५ इञ्च। प्रतिलिपि संवत १५८१ चैत्र बुदि ६। लिपि कर्त्ता की प्रशस्ति दी हुई है।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ६१. साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत् १६१६. भट्टारक अभयचन्द्र के समय में क्षुल्लिका चन्द्रमती ने प्रतिलिपि बनाई।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ८३. पत्र संख्या ६×४ इञ्च। आदि के २ तथा अन्त के पृष्ठ नहीं हैं।

करकंडु चरित्र।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र और मुनि श्री सकल भूषण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०६. साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८–३६ अक्षर। ग्रन्थ के अन्त में २३ पद्यों की एक विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है। प्रथम चार पृष्ठ नहीं है।

कविप्रिया।

रचयिता कवि केशवदास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४६. साइज १०×४ इञ्च। प्रथम २ पृष्ठ नहीं हैं।

कातन्त्र व्याकरण।

रचयिता श्री सर्ववर्मा। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४५. साइज ११॥×५ इञ्च। केवल सूत्र मात्र हैं।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २०. साइज १०×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १२। साइज १०×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

काम प्रदीप।

रचयिता श्री गुणाकर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २३. साइज १०×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्त के पृष्ठ नहीं हैं।

कारकविलास।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या ४. भाषा संस्कृत। साइज १०॥×५॥ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज १०॥×५ इञ्च।

कालज्ञान ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०. साइज १०॥×५ इञ्च । विषय–आयुर्वेद । प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ के पृष्ठ नहीं हैं ।

कालज्ञान ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५४. साइज ११×५ इञ्च । विषय ज्योतिष ।

काव्यादर्श ।

रचयिता महाकवि श्री दंडी । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३८. साइज ६×३ इञ्च । केवल तीन परिच्छेद हैं ।

प्रति नं० २, पत्र संख्या १२. साइज १०॥×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

काव्यप्रकाश ।

रचयिता श्री मम्मट । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४३. साइज १०×४॥ इञ्च । विषय–अलंकार शास्त्र । लिपि संवत् १६६८.

प्रति नं० २. प्रति सटीक है । टीकाकार श्री महेश्वर न्यायालंकार । पत्र संख्या २२५. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १६११ प्रति नवीन ।

प्रति नं ३ कारिका मात्र । पत्र संख्या ५. कारिका संख्या १८६ ।

काव्यालंकार ।

रचयिता श्री रुद्रट । टीकाकार पंडित श्री नमि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४२. साइज १०×४॥ इञ्च ।

किरणावली सटीक ।

रचयिता उदयनाचार्य । टीकाकार अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७६. साइज १०×४॥ इञ्च । विषय–न्याय । लिपि संवत् १६२४. इस ग्रंथ की भण्डार में ४ प्रति और हैं ।

किरातार्जुनीय ।

रचयिता महाकवि भारवि । टीकाकार प्रकाशवर्ष । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २१६. साइज १०×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० २. मूलमात्र है। पत्र संख्या ४३. साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत् १७५०. लिपि कर्त्ता श्री केशर सागर।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १६६. साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८२०. प्रति सटीक है। टीकाकार श्री एकनाथ भट्ट।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या १४५. साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत् १७५३. लिपि कर्त्ता महात्मा सांवलदास।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १५८. साइज १०॥×४ इञ्च। लिपि संवत् १७१६. लिपि स्थान मोजमाबाद (जयपुर)।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १३७. साइज १०×५ इञ्च। प्रति सटीक है। प्रति प्राचीन है।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या १७१. साइज ११×४ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार मल्लिनाथ सूरि।

क्रियाकोष।

भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या २०. साइज ध॥×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

मंगलाचरण—

समोसरण लछिमी सहित वरधमान जिनराय।
नमो विबुध वंदित चरण, भवि जन कौं सुखदाय॥ १॥

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५१. साइज ११॥×५ इञ्च। ग्रन्थ अपूर्ण है। ५१ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

क्रियाकल्पलता।

रचयिता श्री साधु सुन्दर गणि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३२३. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७७४।

कुमार संभव।

रचयिता महाकवि श्री कालिदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५२. साइज १०॥×४ इञ्च। सप्तमें सर्ग पर्यन्त है। लिपि संवत् १६६५. लिपि स्थान चंपावती। इस महाकाव्य की ८ प्रतियां और है।

केवलभुक्तिनिराकरण।

रचयिता पं० जगन्नाथ। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ६. साइज १०×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १०

पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३८ अक्षर। लिपि संवत् १७३०. विषय-केवलज्ञानियों के अहार का खंडन।

कोकसार।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ६. साइज ८x४॥ इञ्च।

कोष्टक टीका।

टीकाकार पं० श्री वेदा। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७. साइज १०x४ इञ्च। विषय-ज्योतिष।

ख

खंडप्रशस्तिकाव्य।

रचयिता अज्ञात। पृष्ठ संख्या ४. साइज ६x५॥ इञ्च। पद्य संख्या २१. विषय-रघुवंश स्तुति।

प्रति न० २ पृष्ठ संख्या ४. साइज १०x४ इञ्च। लिपि संवत् १६२४।

ग

गणक कौमुदी।

रचयिता ज्योतिषाचार्य श्री मणिलाल। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११. साइज १०x४ इञ्च। विषय ज्योतिष। लिपि संवत १६६२।

गणितशास्त्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७. साइज ११x४॥ इञ्च। विषय-ज्योतिष।

गणितकौमुदी।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४२. साइज १२x६॥ इञ्च। विषय-गणित। प्रति अपूर्ण है।

गणित नाममाला।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ७. साइज १०x४ इञ्च। विषय-ज्योतिष।

गणितलीला ।

रचयिता श्री पं० भास्कर । भापा संस्कृत । पत्र संख्या २३. साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

गणधरवलय पूजा ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भापा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १०॥×५ इञ्च ।

ग्रन्थसार ।

रचयिता भट्टारक सकलकीर्ति । भापा संस्कृत । साइज ११×४ इञ्च । विपय मुनियों का आचार शास्त्र । ग्रन्थ के अन्त में चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति भी दी हुई है ।

गर्भपडारचक्र ।

रचयिता श्री देवनन्दी । भापा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १०॥×५ इञ्च । प्रति सटीक है ।

ग्रहलाघव ।

रचयिता श्री दैवज्ञ गणेश । पत्र संख्या ११. साइज १०॥×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण । ११ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं ।

ग्रहलाघवभारण ।

रचयिता अज्ञात । भापा संस्कृत । पुस्तक में नक्षत्रों के अलग २ फल दिखलाये गये हैं ।

ग्रहलाघव ।

रचयिता श्री गणेश गण कवि । भापा संस्कृत । पत्र संख्या २५. साइज १०॥×४॥ इञ्च । विपय—ज्योतिप । लिपि संवत् १६०६. प्रति सुन्दर है ।

ग्रहागमकौतूहल ।

रचयिता श्री देदचंद । भापा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ८२. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६७१. विपय—ज्योतिप ।

गिरधरानन्द ।

रचयिता श्री गिरधर । भापा संस्कृत । पत्र संख्या ३५. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रारम्भ के ८ तथा आगे के पृष्ठ नहीं है। विषय—ज्योतिष।

गुटका नं० १

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १००. साइज ८॥×६ इञ्च।

विषय-सूची—

(१) जिन सहस्रनाम (जिनसेनाचार्य) (संस्कृत)
(२) अनंत व्रत पूजा विधान (संस्कृत)
(३) चतुर्विंशति तीर्थंकरपूजा (संस्कृत)
(४) मोक्ष शास्त्र
(५) पूजन संग्रह

गुटका नं० २

लिपिकार अज्ञात पत्र संख्या १७५. साइज १०॥×६॥ इञ्च। लिपि संवत १६०७।

मुख्य विषय-सूची—

(१) त्रिशच्चतुर्विंशति का पूजा (आचार्य शुभचन्द्र)
(२) नन्दिसंघ गुर्वावली (संस्कृत)
(३) जिनयज्ञकल्प (पं० आशाधर)
(४) अंकुरार्पण विधि (संस्कृत)
(५) रूपमंजरी नाममाला (रूपचन्द कृत)

गुटका नं० ३

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १५०. साइज ६॥×५ इञ्च। इस गुटके में कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है।

गुटका नं० ४

लिपिकार श्री जगानन्द और लिखमीदास। पत्र संख्या १७५. साइज ७×५ इञ्च। लिपि संवत् १७१०. और १७२६. लिपिस्थान नेवटा (जयपुर)

विषय-सूची—

(१) जिनसहस्रनाम स्तवन (संस्कृत)

(२) आदित्यवार की कथा (हिन्दी)
(३) नेमिजिनेश्वर रास "
(४) लब्धि विधान विधि "
(५) निर्दोष सप्तमी की कथा "
(६) रत्नत्रयविधान कथा "
(७) पुष्पाञ्जलि व्रत कथा " (पं० हरिश्चन्द्र)
(८) धर्मरासो "
(९) जिनपूजा फल प्राप्ति कथा "

गुटका नं० ५

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या २००, साइज ७×७ इञ्च।

विषय-सूची—

(१) शकुन पाशा केवली (संस्कृत)
(२) चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन (संस्कृत)
(३) भक्तामर स्तोत्र
(४) हिंदोला (अपभ्रंश)
(५) प्रश्नोत्तर रत्नमालिका (संस्कृत)
(६) द्वादशांगानुप्रेक्षा (प्राकृत) लक्ष्मीचन्द्र
(७) श्रावक प्रतिक्रमण (प्राकृत)
(८) पट्टावली (संस्कृत)
(९) आराधना प्रकरण (प्राकृत)
(१०) संबोध पंचासिका (प्राकृत)
(११) यति भावनाष्टक (संस्कृत)
(१२) तत्त्वसार (प्राकृत)
(१३) समाधिशतक (संस्कृत)
(१४) सज्जन चित्तवल्लभ (संस्कृत)
(१५) कषाय जय भावना (संस्कृत)

(१६) श्रुतस्कंध
(१७) इष्टोपदेश (संस्कृत)
(१८) अनस्तमितिव्रताख्यान (अपभ्रंश)
(१९) प्रतिक्रमण (संस्कृत)

गुटका नं० ६

लिपिकार अज्ञात। लिपि संवत् १६३४. पत्र संख्या ३५०. साइज ७×७ इञ्च।

मुख्य विषय-सूची—

(१) ज्ञानांकुश (संस्कृत)
(२) सुप्पयदोहा (प्राकृत)
(३) अनुप्रेक्षा (अपभ्रंश) (पं० जगसी)
(४) णवकार पाथजी (प्राकृत)
(५) उपासकाचार (संस्कृत)
(६) ज्ञानसार (प्राकृत)
(७) रत्नकरण्ड श्रावकाचार
(८) आराधनासार (प्राकृत)
(९) आराधनासार टीका (प्राकृत-संस्कृत)
(१०) दर्शनज्ञान चरित्र पाहुड (प्राकृत)
(११) भाव पाहुड (प्राकृत)
(१२) मोक्ष पाहुड ,,
(१३) स्वयम्भू स्तोत्र (संस्कृत)
(१४) त्रैलोक्य स्थिति (संस्कृत)

गुटका नं० ७

लिपिकार श्री छीतर। पत्र संख्या १२५. साइज ८×५ इञ्च। लिपि संवत् १५०५. लिपि स्थान अजयगढ मत्स्य प्रदेश।

विषय-सूची—

(१) जिनस्तोत्र (संस्कृत) पं० जगन्नाथ वादि कृत

(२) नेमिनरेन्द्र स्तोत्र (संस्कृत)
(३) त्रिरत्नकोप (संस्कृत)
(४) शाकुन विचार (हिन्दी)
(५) पुण्याह मन्त्र (संस्कृत)

गुटका नं० ८

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १३५. साइज १०×६ इञ्च। गुटका जीर्ण शीर्ण हो चुका है।

विषय-सूची—

(१) नाटक समय सार (हिन्दी)
(२) स्तुति संग्रह (हिन्दी)

गुटका नं० ९

लिपिकार अज्ञात। संख्या ५०. साइज ७॥×७॥ इञ्च।

विषय-सूची—

(१) सोलह कारण पूजा (अपभ्रंश)
(२) दश लक्षण पूजा (संस्कृत)
(३) चतुर्विंशति स्वयम्भू स्तोत्र (संस्कृत)
(४) निर्वाण काण्ड गाथा
(५) लब्धि विधान पूजा
(६) तत्त्वार्थ सूत्र, रत्नत्रय पूजा आदि

गुटका नं० १०

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १५०. साइज १०॥×७॥ इञ्च।

विषय-सूची—

(१) हितोपदेश भाषा पत्र ८६
(२) सुन्दर शृंगार

(३) समयसार नाटक
(४) प्रतिक्रमण
(५) भक्तामर स्तोत्र
(६) उपसर्ग स्तोत्र

गुटका नं० ११

लिपिकार जीता पाटणी। पत्र संख्या ३७६. साइज ५॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १६६०. लिपिस्थान आगरा। प्रारम्भ के १६ पृष्ठ नहीं हैं।

विषय-सूची—

(१) भविष्यदत्त कथा (हिन्दी) ब्रह्म राइमल।
(२) आदित्यार कथा (हिन्दी)
(३) जिनवर पद्धडी ,,
(४) नेमीश्वर रास ,,
(५) पंचेंद्रिय वेलि (हिन्दी) रचना संवत् १५८५।
(६) श्रीपाल रासो ,, ब्रह्मराइमल्ल। रचना संवत् १६३०।
(७) माधवानल चौपई। रचना संवत १६१६।
(८) पुरंदर कथा।

गुटका नं० १२

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १२१. साइज ६॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १५७१।

विषय-सूची—

(१) णमोकार पाथडी (हिन्दी)
(२) सुदर्शन पाथडी (अपभ्रंश)
(३) विद्युच्चोर की कथा (अपभ्रंश)
(४) बाहुबलि पाथडी ,,
(५) शिवकुमार की जयमाल ,,
(६) द्वादशानुप्रेक्षा ,,

(७) नदियों का वर्णन

गुटका नं० १३

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या ६७. साइज ६॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १७८८।

विषय-सूची—

(१) विषापहार स्तोत्र भाषा अचलकीर्त्ति कृत
(२) दशलक्षण व्रत कथा (हिन्दी) ब्र० जिनदास
(३) सोलह कारण व्रत कथा " "
(४) बांहरण षष्टि व्रत कथा " "
(५) मौक्ष सप्तमी कथा " "
(६) निर्दोष सप्तमी कथा " "
(७) पंच परमेष्ठि गुण वर्णन " "

गुटका नं० १४

लिपिकार उपाध्याय सुमति कीर्त्ति। पत्र संख्या १२०. साइज ७×५ इञ्च। लिपि संवत १७०६।

विषय-सूची—

(१) अंकुरारोपण विधि (संस्कृत)
(२) जिनसहस्रनाम स्तवन (संस्कृत)
(३) सकली करणविधि (संस्कृत)
(४) जिनयज्ञ विधान (संस्कृत)
(५) यज्ञ दीक्षा विधान (संस्कृत)
(६) त्रिंशद्द्वार्चन विधि (संस्कृत)
(७) पल्यविधानरास (हिन्दी)

गुटका नं० १५

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १२५. साइज ६॥×६ इञ्च

विषय-सूची—

(१) मेरुपंक्ति कथा (हिन्दी)
(२) सीमंधर स्वामी की स्तुति (हिन्दी)
(३) कलिकुंड पार्श्वनाथ वेल (हिन्दी)

गुटका नं० १६

लिपिकार अज्ञात पत्र संख्या २३१. साइज ६॥×५॥ इञ्च।

विषय-सूची—

(१) सामायिक पाठ (संस्कृत)
(२) लघु पट्टावली ''
(३) चौतीस अतिशय भक्ति ''
(४) सिद्धालोचन भक्ति ''
(५) श्रुत भक्ति ''
(६) दर्शन भक्ति ''
(७) चारित्र भक्ति ''
(८) नंदीश्वर भक्ति ''
(६) योग भक्ति ''
(१०) चोवीस तीर्थंकर भक्ति ''
(१२) निर्वाण भक्ति ''
(१३) वृहत प्रतिक्रमण ''
(१४) वृहद्स्वयम्भु ''
(१५) आह्मचार प्रतिक्रमण ''
(१६) वृहद् पट्टावली ''
(१७) तत्त्वार्थ सूत्र स्तुति ''

गुटका नं० १७

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १३६, साइज ६॥×६॥ इञ्च। गुटके में उल्लेखनीय सामग्री नहीं है।

गुटका नंबर १८

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १५०. साइज ७×५ इञ्च।

विषय-सूची—

(१) अठारह नाता की कथा (हिन्दी)
(२) श्रीपालरास (हिन्दी) (ब्रह्म रायमल्ल)
(३) नेमीश्वर रास " "
(४) सुदर्शन चरित्र " "
(५) परमात्म प्रकाश (प्राकृत)

गुटका नं० १६

पत्र संख्या २५०. प्रारम्भ के १६० पत्र संवत् १६५६ में भट्टारक श्री धर्म्मचन्द्र के द्वारा आमेर में लिखे हैं तथा आगे के ६० पत्र संवत् १७५१ में अन्य महोदय ने लिखे हैं।

मुख्य विषय सूची—

(१) विषापहार स्तोत्र (संस्कृत)
(२) एकीभाव स्तोत्र "
(३) भूपालस्तवन "
(४) मुक्तावली गीत (हिन्दी)
(५) यमकाष्टक (संस्कृत)
(६) अंतरीक्ष पार्श्वनाथ स्तुति (हिन्दी)
(७) आदिनाथ स्तुति "
(८) चौरासीलाख योनि के जीवों की स्तुति (हिन्दी)
(९) त्रेपन क्रिया विनती (हिन्दी)
(१०) अकृत्रिम चैत्यालयों की स्तुति "
(११) नंदीश्वर भक्ति (अपभ्रंश)
(१२) प्रतिक्रमण (संस्कृत)
(१३) आराधना सार (प्राकृत)

(१४) आदित्यवार कथा (हिन्दी)
(१५) सप्तव्यसन (हिन्दी)
(१६) ऋषिमंडल स्तोत्र (संस्कृत)

गुटका नं० २०

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या ५०. साइज ७×५॥ इञ्च। गुटके में विशेष उल्लेखनीय सामग्री नहीं है।

गुटका नं० २१

पत्र संख्या ४०. साइज १०॥×४ इञ्च। लिपिकार अज्ञात। गुटके में कोई महत्त्वपूर्ण सामग्री नहीं है।

गुटका नं० २२

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १७०. साइज ६॥×६ इञ्च।

गुटका नं० २३

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या ४०. साइज ६॥×६॥ इञ्च। गुटके में विशेष उल्लेखनीय सामग्री नहीं है।

गुटका नं० २४

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या ४०. साइज ६॥×६॥ इञ्च। लिपि संवत् १८२८. लिपिस्थान चाटसू (जयपुर) गुटके में विशेष उल्लेखनीय सामग्री नहीं है।

गुटका नं० २५

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या ३०. साइज ६॥×६॥ इञ्च। लिपि संवत् १८२२. लिपिस्थान चकवाडा (जयपुर राज्य) गुटके में केवल भजनों का संग्रह है।

गुटका नं० २६

लिपिकार सदाराम। पत्र संख्या १००. साइज ७॥×६॥ इञ्च। लिपि संवत् १७७३. गुटके में स्तोत्र भजन आदि का संग्रह है।

गुटका नं० २७

लिपिकार भट्ट तुलाराम। भाषा संस्कृत हिन्दी। पत्र संख्या ४५. साइज १०×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८६६. लिपिस्थान पाटण।

गुटका नं० २८

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या ७०. साइज १०×६ इञ्च। गुटके में पद्मनन्दि कृत पात्रभेद (हिन्दी) के अतिरिक्त कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है।

गुटका नं० २९

लिपिकार श्री हंसराज। पत्र संख्या १२६. साइज ८×७ इञ्च। लिपि संवत् १७५९।

विषय-सूची—

(१) निशल्याष्टमी कथा (हिन्दी)

(२) हिन्दी पद्यावली। इसमें ८३ दोहों का संग्रह है। कवि का नाम कहीं पर भी नहीं दिया है। भाषा और शैली के लिहाज से दोहे बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं।

(३) पहेली संग्रह। इसमें ७१ पहेलियां दी हुई हैं। आगे उनका उत्तर भी दिया हुआ है।

(४) नवरत्न कवित्त

(५) संस्कृत पद्य संग्रह। इसमें नीति तथा धार्मिक ६६ पद्यों का संग्रह है।

(६) दशलक्षण व्रतोद्यापन

(७) कर्णामृत पुराण की भाषा

(८) हरिवंश पुराण की भाषा

गुटका नं० ३०

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १५. साइज ८×७ इञ्च।

गुटका नं० ३१

लिपिकार लालचन्द्र। पत्र संख्या १७५. साइज ८×६ इञ्च। लिपि संवत् १८१०.

गुटका नं० ३२

लिपिकार अज्ञात । पत्र संख्या १८२. प्रारम्भ के ३२ पृष्ठ तथा बीच के कितने ही पृष्ठ नहीं हैं। लिपि संवत् १५४८. गुटके में अर्हद्व महाशान्तिक विधि लिखी हुई है।

गुटका नं० ३३

लिपिकार अज्ञात । भाषा हिन्दी-संस्कृत । पत्र संख्या ६६ । साइज ५×८ इञ्च। गुटके में नेमिनाथरासो-तथा पूजन संग्रह है।

गुटका नं० ३४

लिपिकार यति मोतीराम । लिपि संवत् १८२६. पृष्ठ संख्या ५६. साइज ५।।×४।। इञ्च। गुटके के प्रारम्भ में मार्गणा, गुणस्थान, परिग्रह, कर्म, कषाय आदि के केवल भेद दिये हुये हैं। बाद में शनीशर की कथा दी हुई है।

गुटका नं० ३५

लिपिकार अज्ञात । पत्र संख्या ३०. साइज ४×४ इञ्च । गुटके में भक्तामर स्तोत्र और पूजन के अतिरिक्त कोई विशेष सामग्री नहीं है।

गुटका नं० ३६

लिपिकार अज्ञात । पत्र संख्या १२०. साइज ४।।×४।। इञ्च। गुटके में कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है। केवल पूजन संग्रह ही है।

गुटका नं० ३७

लिपिकार जयरामदास । पत्र संख्या १२५. साइज ५।।×४ इञ्च । लिपि संवत् १७४२. और १७६७. लिपिस्थान जयपुर ।

गुटका नं० ३८

लिपिकार अज्ञात । भाषा प्राकृत संस्कृत और अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या १०७. साइज ६×५ इञ्च। लिपि संवत् १६१२ ।

विषय-सूची—

(१) खंड प्रशस्ति (संस्कृत)
(२) प्रश्नोत्तररत्नमाला (संस्कृत)
(३) विषापहारस्तवन „
(४) भूपालस्तवन (संस्कृत)
(५) ज्ञानांकुश (संस्कृत)
(६) भक्तामरस्तोत्र „
(७) एकीभावस्तोत्र „
(८) पार्श्वनाथ पद्मावती स्तोत्र „
(९) राजा दशरथ जयमाल (प्राकृत)
(१०) बीस तीर्थंकर जयमाल (अपभ्रंश)
(११) वर्द्धमान स्वामी जयमाल (प्राकृत)
(१२) स्वप्नावली (संस्कृत)
(१३) सिद्धचक्र जयमाला „
(१४) सज्जनचित्त वल्लभ „
(१५ निजमति संबोधन (प्राकृत)
(१६) दशलक्षण जयमाला „
(१७) चौरासी जाति माला „
(१८) जिनेन्द्र भवन स्तवन „
(१९) चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन „
(२०) सरस्वति जयमाला „
(२१) गीत (हिन्दी)
(२२) सप्तभंगी (संस्कृत)

गुटका नं० ३९

लिपिकार अज्ञात। भाषा संस्कृत हिन्दी। पत्र संख्या १४६. साइज ६×५॥ इञ्च।

विषय-सूची—

(१) परमानन्द स्तोत्र (संस्कृत)

(२) देव दर्शन (संस्कृत)
(३) वारह भावना (हिन्दी)
(४) जोग रासो „
(५) वज्रनाभि भावना „
(६) रात्रि भोजन कथा (हिन्दी)
(७) स्तुति „
(८) कल्याण मन्दिर भाषा „
(९) चौरासी लाख योनि के जीवों की प्रार्थना (हिन्दी)
(१०) आराधना प्रतिवोध (हिन्दी)
(११) दोहावली रूपचन्दकृत (हिन्दी)
(१२) निर्वाणकाण्ड भाषा „
(१३) विद्यमान बीस तीर्थंकरों की स्तुति (हिन्दी)
(१४) राजुल पच्चीसी „
(१५) कर्म छत्तीसी „
(१६) अध्यात्म वत्तीसी „
(१७) वेदक लक्षण „
(१८) दोहावली „
(१९) झूलना (हिन्दी) „
(२०) जिनेन्द्रस्तुति „
(२१) पंचमगुणस्थान का वर्णन „
(२२) चारों ध्यानों का वर्णन „
(२३) परिषह वर्णन „
(२४) वैराग्य चौपाई „

गुटका नं० ४०

लिपिकार नान्हीराम। पत्र संख्या १२५. साइज ७।।x४।। इञ्च। लिपि संवत् १७६१ और १८११.

विषय-सूची—

(१) गृह शान्ति स्तोत्र (संस्कृत)

(२) सामायिक पाठ सार्थ। मूल भाग—प्राकृत। अर्थ हिन्दी में है। हिन्दी अर्थ कर्त्ता श्री नान्हीराम।
(३) भक्तामर स्तोत्र भाषा।

गुटका नं० ४१

लिपिकार साह शंकरदास। पत्र संख्या ८०. साइज ६x६ इञ्च। लिपि संवत् १८०३. लिपि स्थान चाटसू।

मुख्य विषय-सूची—

(१) पांच ज्ञान भेद (हिन्दी)
(२) ग्यारह अंग विवरण ,,
(३) पंच परमेष्ठी गुण वर्णन ,,
(४) सम्यक्त्व के भेद ,,
(५) चौदह गुणस्थान भाषा। भाषाकार श्री अखयराज।

गुटका नं० ४२

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या ४०. साइज ८x४॥ इञ्च।

गुटका नं० ४३

लिपिकार श्री खुशालचन्द। पत्र संख्या २३३. साइज ४॥x३॥ इञ्च। लिपि संवत् १८०५. लिपिस्थान बेगमनगर (आगरा)

विषय-सूची

(१) पद्मावती स्तोत्र (संस्कृत)
(२) ऋषि मंडल स्तोत्र ,,
(३) पार्श्वनाथ चिंतामणि स्तोत्र ,,
(४) वर्द्धमानस्तोत्र ,,
(५) चतुर्विंशति स्तवन ,,
(६) जिनरक्षा स्तोत्र ,,
(७) समयसार नाटक (हिन्दी)

गुटका नं० ४४

लिपिकार अज्ञात। साइज ४×४ इञ्च। पत्र संख्या ७५.

विषय-सूची—

(१) पद संग्रह (हिन्दी) रचयिता श्री सुरेन्द्रकीर्ति। इस संग्रह में करीब १०० से अधिक पद हैं।

(२) पूजन तथा अन्य पद संग्रह

गुटका नं० ४५

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १५०. साइज ४×४ इञ्च। गुटके में केवल सुन्दरदासजी के पदों का ही संग्रह है।

गुटका नं० ४६

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १२५. साइज ६×४ इञ्च। गुटके के आधे से अधिक पृष्ठ फटे हुये हैं। गुटके में कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है।

गुटका नं० ४७

लिपिकार अज्ञात। पृष्ठ संख्या १२६. साइज ६×६ इञ्च। गुटके में कोई विशेष उल्लेखनीय सामग्री नहीं है।

गुटका नं० ४८

लिपिकार अज्ञात। भाषा अपभ्रंश, प्राकृत और संस्कृत। पृष्ठ संख्या ?१० । साइज ७॥×६ इञ्च।

विषय-सूची—

(१) गुणस्थान गीत। भाषा अपभ्रंश। गाथा संख्या ५७

(२) समाधि मरण (अपभ्रंश)

(३) नित्य प्रति क्रमण ,,

(४) सुभाषितावली (संस्कृत) रचयिता भ० श्री सकलकीर्ति।

(५) सोलहकारण जयमाल (अपभ्रंश)

(६) दश लक्षण जयमाल (अपभ्रंश)
(७) पार्श्वनाथ स्तवन (संस्कृत)
(८) पोसहरास (अपभ्रंश)
(९) परमात्म प्रकाश
(१०) चिंतामणि पूजा (संस्कृत)
(११) षट् लेश्या वर्णन ,,
(१२) सामायिक पाठ ,,
(१३) श्रावक प्रतिक्रमण (अपभ्रंश)
(१४) सिद्ध पूजा
(१५) वर्द्धमान स्तवन (संस्कृत)
(१६) निर्वाण भक्ति (प्राकृत)
(१७) समाधि मरण (संस्कृत)
(१८) स्तुति स्वामी समन्तभद्र कृत (संस्कृत)
(१९) गर्भषडारचक्र देवनन्दि कृत ,,
(२०) भट्टारक पट्टावली ,,
(२१) मोक्ष शास्त्र ,,
(२२) आराधनासार (प्राकृत)
(२३) विषापहार स्तोत्र धनंजयकृत ,,
(२४) स्तोत्र श्री मुनि वादिराज मुनीन्द्र कृत (संस्कृत
(२५) कल्याण मन्दिर स्तोत्र
(२६) स्तोत्र पाठ भट्टारक जिनचन्द्र कृत (संस्कृत)
(२७) भक्तामर स्तोत्र
(२८) भूपाल चतुर्विंशति (संस्कृत)
(२९) इष्टोपदेश
(३०) तत्त्वसार भावना (प्राकृत)
(३१) सूक्ति दोहा ,,
(३२) संवोह पंचासिका (अपभ्रंश)
(३३) जिनवर दर्शन स्तवन पद्मनन्दी कृत (संस्कृत)

(३४) यति भावना (संस्कृत)

(३५) सरस्वती स्तुति (संस्कृत)

(३६) श्रुतस्कंध, ब्रह्महेमविरचित (प्राकृत)

(३७) विञ्जुचौरानुप्रेक्षा (प्राकृत)

(३८) आनन्द कथा (प्राकृत)

(३९) द्वादशानुप्रेक्षा ,,

(४०) पंचप्ररूपणा (प्राकृत)

(४१) कलिकुंड जयमाल (संस्कृत)

(४२) चतुर्विंशति जयमाल

(४३) दशलक्षण जयमाल श्री सिंहनन्दि कृत (संस्कृत)

(४४) नेमीश्वर जयमाल

(४५) कलिकुंड जयमाल (प्राकृत)

(४६) विवेकजकडी ,,

(४७) मदालसालास्तवन (संस्कृत) ,,

(४८) मृत्युमहोत्सव ,, ,,

(४९) निर्वाण कण्डक (प्राकृत)

(५०) सज्जन चित्तवल्लभ, मल्लिषेणकृत (संस्कृत)

(५१) भावना बत्तीसी (संस्कृत) ,,

(५२) वृहत् कल्याणक

(५३) द्रव्यसंग्रह

(५४) परमानन्द स्तोत्र

गुटका नं० ४९

लिपिकार अज्ञात । भाषा अपभ्रंश, हिन्दी और संस्कृत । पत्र संख्या ७७, साइज ६॥×६॥ इञ्च । लिपि संवत् १६८७ कार्त्तिक सुदी अष्टमी ।

गुटके के विषय—

(१) मदनयुद्ध । भाषा अपभ्रंश । गाथा संख्या १५६। रचना काल संवत् १५८६ ।

(२) पार्श्वनाथस्तोत्र । भाषा संस्कृत। रचयिता श्री पद्मप्रभदेव। पद्य संख्या ८ ।

(३) प्रभातिक । भाषा संस्कृत । पद्य संख्या २५ विषय २४ तीर्थंकरों की स्तुति ।
(४) जिनेन्द्रदर्शन स्तुति । भाषा संस्कृत । पद्य संख्या १० ।
(५) परमानन्दस्तोत्र । भाषा संस्कृत । पद्य संख्या २५ ।
(६) पंचनमस्कार । भाषा संस्कृत । पद्य संख्या १२ ।
(७) निर्वाण काण्ड । भाषा अपभ्रंश । गाथा संख्या २७ ।
(८) चार कषाय वर्णन । भाषा अपभ्रंश ।
(९) नंदीश्वरविधान कथा । भाषा संस्कृत ।
(१०) सोलहकारण विधानकथा । भाषा संस्कृत । पद्य संख्या ७३ ।
(११) रोहिणी विधान कथा । भाषा संस्कृत गद्य ।
(१२) रत्नत्रय कथा । भा० संस्कृत गद्य ।
(१३) दशलक्षण व्रत कथा—"

गुटका नं० ५०

लिपिकार अज्ञात । भाषा हिन्दी । साइज १०×६ इञ्च । पत्र संख्या १४२ लिपि संवत् १७६२. लिपि स्थान आमेर । श्री टेउ साह के पुत्र श्री धर्मदास के पढने के लिये प्रति लिपि बनायीगई।

गुटके में ये विषय हैं—

सिद्धचक्रगीत, आदिनाथस्तुति, द्वादशानुप्रेक्षा, रत्नत्रयगीत, आदिनाथस्तवन, गिरनारिधवल, चूनडी-धवल, मिथ्यादुकड, चयमीठीगीत, प्रतिबोधगीत, राजुलविरहगीत, बलभद्रगीत, पाणीगालणरास, जिनाष्टक, नेमिजिनस्तुति, जिनदर्शनस्तुति, धर्मफाग, वैराग्यदोहावली, चैतन्यफाग, जीवडागीत, लब्धि विधान कथा, पुष्पाञ्जली विधान कथा, आकाशपञ्चमीव्रत कथा, चांदणपष्ठिव्रत कथा, मोक्षसप्तमी कथा, निर्दोष सप्तमी कथा, ज्येष्ठजिनवर की पूजा कथा, पुरंदर विधान कथा, अक्षय दशमी व्रत कथा, मेंढक पूजा कथा, सोलहकारण कथा, तथा आराधना प्रतिबोध कथा, उक्त कथाओं तथा स्तवनों में से कुछ तो ब्रह्म श्री जिनदास के बनाये हुये हैं तथा अन्य के बारे में कुछ नहीं लिखा है। कितने ही स्तवनों की भाषा तो अपभ्रंश भाषा से बहुत कुछ मिलती है। नीचे हिन्दी भाषा के कुछ नमूने दिये जाते हैं।

ऊंचनीच गोत्र कर्म जी पीछे अगटीयो अठार लधु तारे।
अव्याबाध गुण आयो ऊजले, गयो गयो वेदनीसारे।
(सिद्धचक्रगीत)

माणुस भव जीव दोहिलों दोहिलो उत्तम नरभरे।
अनुप्रेक्षा बारखडी चिंतवो छांडिनें निजमनि मरमरे ॥ १ ॥
(द्वादशानुप्रेक्षा)

अवंतीदेशमांहि सविशाल घोष ग्रांम छैरूवडोए।
ते तीन्हीं जीवगुणहीण कुंणवीय छारिते अवतरीयाए ॥ १ ॥
(लब्धिविधान कथा)

सकल कीर्त्ति सकलकीर्त्ति गुरूः पाय प्रणमे विकियो रास में निरमलो।
आकाश पंचमि अणो उजलो भवियण सुणो तम्हे भावनिरभर ॥ १ ॥

ए राशजे पढे गुणो तेह ने पुण्य अपार।
ब्रह्म जिणदास भणो गिरमलो, मन वांछित सुखसार ॥ २ ॥
(आकाश पंचमी व्रत कथा।)

गुटका नं० ५१

लिपिकार अज्ञात। भाषा हिन्दी संस्कृत। पत्र संख्या ३६. साइज ६×७॥ इञ्च।

गुटका नं० ५२

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या २४५. साइज ८×६ इञ्च। गुटका जीर्णशीर्ण हो चुका है। एक दूसरे के पृष्ठ चिपक गये हैं।

विषय-सूची—

(१) समयसार गाथा
(२) परमात्मराज श्लोक
(३) साटक (प्राकृत)
(४) सुप्रभाती
(५) योगफल
(६) भरत बाहुबलीछंद। रचयिता श्री कुमुदचन्द्र। रचना संवत् १६००. भाषा हिन्दी।
(७) ज्ञानांकुश (संस्कृत)
(८) हणुमंत कथा (हिन्दी)

(९) जम्बूस्वामी चरित्र (हिन्दी)
(१०) भविष्यदत्त चौपई
(१२) पंच परमेष्ठी गुण
(१३) पंच लब्धि
(१४) पंच प्रकार संसार
(१५) त्रेपन क्रिया विनती
(१६) ऋषभ विवाहलो
(१७) मनोरथ माला
(१८) शांतिनाथ सूंखडी
(१९) आत्मा के नाम
(२०) जिनेन्द्र स्तुति

गुटका नं० ५३

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या ६०. साइज १०x७ इञ्च। गुटके में प्रचलित पूजनों के अतिरिक्त कोई विशेष सामग्री नहीं है।

गुटका नं० ५४

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या ३६० साइज ६x६॥ इञ्च। लिपि संवत् १७११. लिपिस्थान लाभपुर। गुटका बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। प्राकृत और हिन्दी की सामग्री और भी महत्त्व की है।

विषय-सूची—

(१) आश्रव त्रिभंगी रचना।
(२) विशेषसत्ता त्रिभंगी।
(३) चौबीस ठाणा।
(४) द्रव्य संग्रह सटीक। टीका हिन्दी भाषा में है, लेकिन टीका बहुत प्राचीन मालूम देती है।
(५) अष्टोत्तरसहस्र नामस्तवन।
(६) आगम प्रसिद्ध गाथा (संग्रह)
(७) षट् लेश्या।

(८) सम्यक्त्व प्रकृति ।

(९) पंचगुरुकुपात्र ।

(१०) तत्त्वसार ।

(१०) जम्बूस्वामि चरित्र (अपभ्रंश) रचयिता महाकवि श्री वीर ।

(११) संबोध पंचासिका (प्राकृत)

(१२) अनित्य पंचाशत भाषा । भाषाकार त्रिभुवनचंद ।

(१३) परमार्थ दोहा । रूपचंद कृत ।

(१४) श्रीपाल स्तुति ।

(१५) स्वाध्याय ।

(१६) वर्द्धमान मातौ (प्राकृत)

(१७) कर्माष्टक

(१८) सुप्पय दोहावली

(१९) अनुप्रेक्षा । पं० ईश्वर चन्द्र कृत।

(२०) सप्ततत्त्वगीत ।

(२१) त्रेपन क्रिया । ब्रह्म गुलाल कृत।

(२२) सोलह कारण रासो ।

(२३) मुक्तावली को रासो ।

(२४) भंवर गीत ।

(२५) नेम कुमार रासो ।

(२६) वेलि गीत ।

(२७) परमार्थ गीत ।

(२८) भजन संग्रह रूपचंद कृत ।

(२९) षट्पद भजन संग्रह ।

(३०) भरतेश्वर जयमाल ।

(३१) परमात्म प्रकाश ।

(३२) दोहा पाहुड श्री योगीन्द्र विरचित ।

(३३) श्रावकाचार दोहा ।

(३४) द्वादशी गाथा ।

(३५) स्वामी कुमारानुप्रेक्षा ।
(३६) नेमिनाथ रासो ।
(३७) अवधू अनुप्रेक्षा ।
(३८) आत्म संबोधनकाव्य (प्राकृत)
(३६) आराधना सार "
(४०) योग सार "
(४१) कर्म प्रकृति (प्राकृत) २. नेमिचन्द्राचार्य ।
(४२) आत्मा वर्णन ।
(४३) नेमीश्वर जीवन (प्राकृत)
(४४) कषाय पाथडी ।
(४५) निश्चय व्यवहार रत्नत्रय ।
(४६) भाव संग्रह (प्राकृत) श्री देवसेन कृत ।
(४६) षड् पाहुड ।
(४७) षड् द्रव्य वर्णन ।

गुटका नं ५५

लिपिकार पं० स्योजीराम जी । पत्र संख्या ३०. साइज ८॥×६ इञ्च । लिपि संवत् १८२६. लिपि-स्थान देवपुरी । लिपि कर्त्ता पांडे देवकरणजी ।

गुटका नं० ५६

लिपिकार अज्ञात । पत्र संख्या ७५. साइज ५×४॥ इञ्च । गुटके में कोई विशेष उल्लेखनीय सामग्री नहीं है ।

गुटका नं० ५७

लिपिकार अज्ञात । पत्र संख्या २०. साइज ४॥×४॥ गुटके के प्रारम्भ में कितने ही प्रसिद्ध मध्य-कालीन राजाओं और नवाबों का संवत् सहित संक्षिप्त वृत्तान्त देखा है । इसके अतिरिक्त कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है ।

गुटका नं० ५८

पत्र संख्या २६, साइज ११x४ इञ्च

विषय-सूची—

(१) नेमीश्वर जयमाल	(प्राकृत)
(२) दुद्धरसावय	"
(३) कालावली	"
(४) भरतबाहुवलि	"
(५) वर्द्धमान जयमाल	"
(६) मुनियों की स्तुति	"
(७) पंचपरमेष्ठि	"
(८) सप्तस्वर्गीत	"
(९) कल्याणक गीत	"
(१०) समाधि गीत	"
(११) दशधर्म	"
(१२) अनुप्रेक्षा	"
(१३) समयसार	"
(१४) द्रव्यसंग्रह	"
(१५) आराधना	"
(१६) अकलंकाष्टक	"
(१७) पोसहरास	"
(१८) मेघकुमार	"
(१९) दीतवारकथा	"
(२०) मंगलाष्टक	"
(२१) विद्युच्चोर कथा	"
(२२) अन्य स्तोत्र मंगलाष्टक वगैरह।	

गुणस्थान चर्चा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५, साइज ११॥x५॥ इञ्च प्रति अपूर्ण है।

गौतमपृच्छा ।

रचयिता श्री आचनाचार्य रत्नकीर्त्तिगणि । भाषा प्राकृत हिन्दी । पृष्ठ संख्या ५ साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत् १५८०. श्रीमालजाति खारड गोत्र वाले चौधरी पृथ्वीमल्ल की धर्मपत्नी के पढने के लिये प्रति लिपि की गई।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४. साइज १०॥×४॥ इञ्च। गाथा संख्या ६४.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ४. साइज १०॥×४॥ इञ्च। गाथा संख्या ६५.

गोपालोत्तर तापनी टीका ।

रचयिता श्रीमद्विश्वेश्वर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३१. साइज १२×६॥ इञ्च। विषय-श्री कृष्णजी की स्तुति आदि।

गोम्मटसार जीवकांड ।

रचयिता श्री नेमिचन्द्राचार्य। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या २०. साइज १०×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। दर्शन मार्गणा तक गाथायें हैं।

चतुर्दश पूजा संग्रह ।

संग्रह कर्त्ता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २०. साइज ११×५॥ इञ्च। पूजाओं का संग्रह मात्र है।

चतुर्दशी चौपई ।

रचयिता श्री टीकम। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३०. साइज १२×५॥ इञ्च। पद्य संख्या ३५८. रचना संवत् १७१२. लिपि संवत् १७६३. प्रशस्ति दी हुई है।

चतुर्विंशति गीत ।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ५. साइज ६×४ इञ्च। चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति की गई है।

चतुर्विंशतितीर्थंकर स्तुति ।

रचयिता श्री ब्रह्मलाल जिष्णु। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४. साइज ११×४॥ इञ्च। संख्या २४.

प्रति नं० २. पत्र संख्या २. साइज ११×४॥ इञ्च।

चतुर्विंशतजिनस्तुति ।

रचयिता धर्मघोषसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २. साइज ११×४॥ इञ्च पद्य संख्या २८. लिपिकार श्री विद्याधर। प्रति सटीक है। यमक बंध स्तुति है।

चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३५. साइज १०॥×६॥ इञ्च। प्रारम्भ के ७ पृष्ठ नहीं हैं।

चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा ।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६६. साइज १०॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १८८७.

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या ४०. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के ३० पृष्ठ नहीं हैं।

चतुर्विध सिद्धपूजा ।

रचयिता भट्टारक श्री भानुकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २०३. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७४५. लिपिकार श्री हेमकीर्त्ति। ग्रन्थ साधारण अवस्था में है।

चंद्रकुमार वार्त्ता ।

रचयिता श्री प्रतापसिंह। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ६. साइज १०×४॥ इञ्च। विषय अमरावती के राजकुमार चन्द्रकुमार का कथानक है। हिन्दी बहुत ही साधारण है। लिपि संवत १८०६. है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८१६.

चंदनमलयागिरी की कथा ।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ६. साइज १२×५॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १५०. लिपि संवत् १७६३.

चंदन षष्ठी पूजा ।

रचयिता श्री देवेन्द्रकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ६. साइज ११॥×४॥ इञ्च ।

चन्द्रप्रभचरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७२. प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३५–३६ अक्षर । विषय आठवें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभु का जीवन चरित्र ।

चन्द्रप्रभचरित्र ।

ग्रन्थकर्त्ता—महाकवि यशः कीर्त्ति । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १२०. साइज ७×३॥ इञ्च । लिपि संवत् १५८३. अषाढ सुदी ३ बुधवार । ११ परिच्छेद । गाथा संख्या २३०६. प्रशस्ति अधूरी है क्योंकि ११८ और ११६. के पृष्ठ नहीं है । कागज और अक्षर दोनों अच्छे हैं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०८. साइज ८×४ इञ्च लिपि संवत् १६११ चैत्र वदि ५ बृहस्पतिवार ग्रन्थ जीर्ण अवस्था में है । प्रशस्ति पूर्ण नहीं है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ११६. साइज ७×३॥ इञ्च । लिपि संवत् १६०३.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १०१. साइज ११×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ के पृष्ठ ४ से १८ तक, ५३ से ७० तक, तथा अन्त के पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ७८. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है अन्त के पृष्ठ नहीं हैं ।

चंद्रलोकालंकार ।

रचयिता अज्ञात । भाषा । संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३६. लिपिस्थान सवाई माधोपुर ।

चमत्कार चिंतामणि ।

रचयिता भट्टारक श्री जयकीर्ति । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च । विषय ज्योतिष । लिपि संवत् १७४१. श्रावण सुदी ५.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११. साइज ६॥×४ इञ्च ।

चरचाशतक।

रचयिता श्री द्यानतराय। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २४. साइज ११×५॥ इञ्च।

चर्चासमाधान।

भाषाकार पंडित भूधरदास जी। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या १४१. साइज १०×४॥ इञ्च। रचना संवत् १८०६. लिपि संवत् १८२१.

चारित्र शुद्धि विधान।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५५. साइज १२×५ इञ्च। ग्रन्थ अपूर्ण सा प्रतीत होता है क्योंकि अन्त में ग्रन्थ समाप्ति वगैरह कुछ भी नहीं दे रखी है।

चरित्रसार।

रचयिता श्री चामुण्डराय। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६८ साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १४१८. प्रति सटीक है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७४. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १५७७.

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ८१. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १५४२.

चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचंद्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १४. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६८२.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११. साइज १०॥×५ इञ्च।

चिदविलास।

रचयिता श्री दीपचंद काशलीवाल। भाषा हिन्दी (गद्य) पत्र संख्या ६५. साइज ८×६॥ रचना संवत् १७७६. लिपि संवत् १७७६. लिपि स्थान आमेर। विषय—सिद्धान्त चर्चा।

चूर्ण संग्रह।

संग्रह कर्त्ता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११. साइज १०॥×४॥ विषय आयुर्वेद।

चेतनकर्म चरित्र ।

रचयिता भैया भगवतीदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १७. साइज १०।।×५।। इञ्च । पद्य संख्या २६८. रचना संवत् १७३६. लिपि संवत् १८४३. लिपिस्थान शेरगढ़ ।

चैत्यस्तवन ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १. साइज ६×४।। इञ्च । पद्य संख्या ६. भारत के प्रसिद्ध २ जैन मन्दिरों के नाम गिनाये गये हैं ।

चौबीस ठाणा ।

रचयिता नेमिचन्द्राचार्य । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या २४. साइज ११×५।। इञ्च ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २६. साइज ६।।×५ इञ्च ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २६. साइज ११।।×५।। इञ्च ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ८०. साइज १०।।×५।। ।

चौबीस तीर्थंकर जयमाल ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४१. साइज १०।।×५।। इञ्च ।

चौबीस तीर्थंकर स्तुति संग्रह ।

रचयिता श्री माणिक्य । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १३. साइज ११×६।। इञ्च । लिपि संवत् १८५८.

चौदह मार्गणा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा प्राकृत । पृष्ठ संख्या १६. साइज १०×४।। इञ्च । चौदह मार्गणाओं पर छोटा किन्तु सुन्दर ग्रन्थ है ।

छन्दानुशासन ।

रचयिता श्री हेमचन्द्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५६. साइज १३×५ इञ्च । प्रति सटीक है ।

छन्दोमञ्जरी ।

रचयिता श्री गंगादास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १७. साइज १२॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १८३८। लिपि स्थान पाटलिपुत्र। लिपिकर्ता—भ० सुरेन्द्रकीर्ति।

जन्मपत्री पद्धति।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज १३×६॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं २. पत्र संख्या १६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रारम्भ में सभी धर्मों के देवताओं को नमस्कार किया गया है।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति संग्रह।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८२. साइज १२॥×६ इञ्च।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति।

रचयिता अज्ञात। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ६४. साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत् १५१८.

जंबू द्वीपरचना।

रचमिता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ५. साइज ११॥×५ इञ्च।

जम्बूस्वामिचरित्र।

रचयिता महाकवि श्री देवदत्तसुत श्री वीर। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ७६. रचना संवत् १०७६. लिपि संवत् १५१६। ६२ का पत्र नहीं है।

जम्बूस्वामिचरित्र।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७०. प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४०–४६ अक्षर। साइज १३×६ इञ्च। प्रति लिपि संवत् १७६२ भादवा बुदि ८।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०५। साइज १०×४॥ इञ्च। प्रति लिपि संवत् १६६३। लिपि स्थान आमेर।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७१. साइज १३×५ इञ्च। लिपि संवत् १८३१। लिपि स्थान जयपुर।

प्रति न ४. पत्र संख्या ५६. साइज ११॥×६ इञ्च।

जम्बूस्वामिचरित्र ।

रचयिता श्री पांडे जिनदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ३५. साइज ८॥×५॥ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या ५०३. रचना संवत् १६४२. लिपि संवत् १७५१ ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३४. साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १७६३ लिपिस्थान जिहानाबाद जयसिंह पुरा । लिपिकार पं० दयाराम ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २१. साइज १२×६ इञ्च ।

जिनगुण संपत्ति कथा ।

लिपि कर्त्ता श्री सेवा राम साह । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४. साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर । लिपि संवत् १८४५. लिपि स्थान जयपुर ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या २६. साइज ११×५ इञ्च ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ३. साइज १०॥×४॥ इञ्च । केवल नंदीश्वर कथा ही है ।

जिनदत्तचरित्र ।

रचयिता पंडित लाखू । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १५७. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३२-३६ अक्षर । रचना संवत् १२७५. लिपि संवत् १६११. लिपिस्थान आम्रगढ महादुर्ग । आचार्य धर्मचन्द्र के शासन काल में भट्टारक श्री प्रभाचन्द्र के शिष्य श्री ब्रह्मवेग ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनायी । ग्रन्थ समाप्ति के अन्त में स्वयं कवि ने अपना परिचय, दिया है । कितने ही स्थानों पर लिपिकर्त्ता ने अपभ्रंश से संस्कृत भी दे रक्खी है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १५०. साइज १२×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण । १५० से आगे के पृष्ठ नहीं है । प्रति कुछ २ जीर्णावस्था में है ।

जिनदत्तचरित्र ।

रचयिता श्री गुणभद्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५०. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३०-३६ अक्षर । लिपि संवत् १६१६. प्रशस्ति है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४३. साइज १०×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ५३. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ६५. साइज १०॥×५ इञ्च ।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या ५५. साइज १२×५ इञ्च । लिपि संवत् १६६०, प्रति जीर्ण शीर्ण है ।

जिनदर्शनस्तवन ।

रचयिता श्री पद्मनन्दी । भाषा संस्कृत । प्रति पत्र संख्या ११. साइज ११×५ इञ्च । प्रति नवीन और स्पष्ट है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११. साइज ६॥×६ इञ्च । प्रति नवीन है ।

जिननाथस्तुति ।

रचयिता आचार्य समंतभद्र । पृष्ठ संख्या २०. भाषा संस्कृत । साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७३४. लिपि कर्त्ता नंदराम । प्रति अपूर्ण है । प्रथम पृष्ठ नहीं है ।

जिनपिंजरस्तोत्र ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३. साइज ६×५॥ इञ्च । विषय-स्तुति । प्रति अशुद्ध है ।

जिनयज्ञकल्प ।

रचयिता पं० आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२६. साइज १२×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ तथा अनन्त के बहुत से पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १५५. साइज १३×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १७७२.

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १०३. साइज १२॥×६ इञ्च । लिपि संवत् १७५८. लिपि स्थान आमेर ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या १२३. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १५६०. श्री शांतिदास ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवाई ।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या १०४. साइज ११×५॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । १०४ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १६५. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८५८ ।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ३६. साइज १०॥×५॥ इञ्च।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या १११. साइज १३॥×४॥ इञ्च।

जिनसहस्रनाम टीका।

टीकाकार श्री अमर कीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८७. साइज ६॥×४॥ इञ्च।

जिनसहस्रनाम स्तोत्र।

रचयिता पं० आशाधर। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या २२. साइज ११॥×५॥ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज ८॥×५ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १६१. साइज ११×५॥ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार आचार्य श्री श्रुत-सागर। भाषा संस्कृत। लिपि संवत् १७८५. लिपि स्थान मिलाय (जयपुर)

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ३६. साइज ६×४ इञ्च।

प्रति नं० ५. पृष्ठ संख्या १२०. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८०३. लिपिस्थान जयपुर। प्र० सटीक है।

जिनसहस्रनामस्तोत्र।

रचयिता श्री जिनसेनाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५७. साइज ११×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८–४६ अक्षर। प्रति सटीक है। टीकाकार श्री अमरकीर्त्ति।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५. साइज ११×६ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६. साइज १०×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ४. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

जयकुमार पुराण।

रचयिता ब्रह्म श्री कामराज। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७६. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १७१६. इसमें जयकुमार का जीवन चरित्र है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८५. साइज ११॥×५ लिपि संवत् १६६१ ।

जल्पमञ्जरी ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपिकर्त्ता पं० प्रेमकुशल । विषय-दर्शन शास्त्र ।

ज्येष्ठजिनवर पूजा ।

रचयिता ब्रह्म कृष्णदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या २. साइज १०॥×६॥ इञ्च ।

ज्योतिषचक्रविचार ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या २१. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १६०५ ।

ज्योतिष फलादेश ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

ज्योतिषरत्नमाला ।

रचयिता श्री पति महादेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२५. साइज १०×५ इञ्च । प्रथम पृष्ठ और अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

ज्योतिष रत्नमाला ।

रचयिता श्री श्रीपति । भाषा संस्कृत । पत्र सख्या ३६. साइज १०॥×५॥ इञ्च । ग्रन्थ की स्थिति साधारण है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४६. साइज १०॥×५॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । ४६. से आगे के पृष्ठ नहीं हैं ।

ज्योतिष रत्नमाला ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६३. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६५५. विषय—ज्योतिष ।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या २७. साइज १०×४ इञ्च । लिपि संवत् १७२५ ।

ज्योतिष पट्पंचाशिका ।

रचयिता श्री भट्टोत्पल । भाषा संस्कृत हिन्दी । पत्र संख्या १५. साइज १०॥×५ इञ्च । लिपि संवत् १७०४. लिपिकर्त्ता पं० तेजपाल ।

ज्योतिष सार ।

रचयिता श्री नारचन्द्र । पत्र संख्या १५. साइज ६×४ इञ्च । ज्योतिष शास्त्र पर छोटी सी पुस्तक सूत्र रूप में है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या २०. साइज ११×५ इञ्च ।

ज्वरतिमिरभास्कर ।

रचयिता कायस्थ चामुंडराय । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५५. साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३६-४२ अक्षर । लिपि संवत् १७३१ । लिपि स्थान सांगानेर । प्रति अपूर्ण । प्रथम २२ पृष्ठ नहीं हैं । विषय आयुर्वेद ।

ज्वाला मालिनी स्तोत्र ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । साइज १०॥×४॥ इञ्च । पत्र संख्या १ ।

जातकपद्मकोष ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज ११×५॥ इञ्च ।

जातकाभरण ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०. साइज १३॥×६॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । अन्तिम पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २७. साइज १२×५॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

जीवन्धर चरित्र ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६५. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां, प्रति पंक्ति में ३२-३८ अक्षर । प्रतिलिपि संवत् १६६३. प्रशस्ति है ।

प्रति नं० २। पत्र संख्या ११५। साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रथम पत्र नहीं है।

प्रति नं० ३। पत्र संख्या ६६। साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्त के पृष्ठ नहीं हैं।

जीवविचार प्रकरण।

रचयिता अज्ञात। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ६. साइज ६×४॥ इञ्च। गाथाओं का हिन्दी में अर्थ भी दे रखा है।

ज्येष्ठ जिनवर की कथा।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र १०. साइज १०×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। उक्त कथा के अतिरिक्त अन्य भी कथायें हैं। ये कथायें व्रत कथा कोष से ली गयी हैं।

जैनतर्कपरिभाषा।

रचयिता पं० यशोविजयगणि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १५. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७८४। लिपिस्थान सितपुर। लिपि कर्त्ता—मुनि विवेकराज।

जैन पूजा पाठ संग्रह।

संग्रह कर्त्ता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८८. साइज ११×४॥ इञ्च। ६२ पूजाओं का संग्रह है।

जैनवैद्यक।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६. साइज १३×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। १८ से आगे के पत्र नहीं हैं।

जैनशतक।

रचयिता पं० भूधरदासजी। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १४. साइज ८×५ इञ्च। रचना संवत् १७८७.

जैनेन्द्रव्याकरण।

रचयिता श्री पूज्यपादस्वामी। टीकाकार श्री अभयनन्दि भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २७७. साइज १०॥×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर। लिपि संवत् १८६६. प्रति लिपि बहुत सुन्दर और स्पष्ट है।

प्रति नं० २. टीकाकार श्री सोमदेव। पत्र संख्या १५१. साइज ११×४॥ इञ्च। पत्र एक दूसरे के चिप रहे हैं।

तत्त्वचिंतामणी।

रचयिता श्री जयदेवमिश्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६७. साइज १०×४॥ इञ्च। विषय—न्याय।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६६. साइज ११॥×४॥ इञ्च। ग्रन्थ समाप्ति पर "श्री महोपाध्याय श्री गणेश-कृते तत्त्वचिंतामणौ प्रत्यक्षखंडः" इस प्रकार श्री गणेश का नाम देखा है। दोनों ग्रन्थों में कोई अन्तर नहीं है।

तत्त्वधर्मामृत।

रचयिता श्री चन्द्रकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २७. साइज १०॥×४॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या ४७७. विषय—तत्त्वविवेचन। लिपि संवत् १५३५।

प्रारम्भः—

> शुद्धात्मरूपमापन्नं प्रणिपत्य गुरोः गुरुं।
> तत्त्वधर्मामृतं नाम वक्ष्ये संक्षेपतः शृणु॥ १॥

अन्तिम पाठः—

> न तथा रिपु न शास्त्रं न विषोग्नि दारुणो न च व्याधि।
> शुद्धे जयति पुरुषं यथा हि कटुकाक्षरा वाणी॥ १॥

तत्त्वसार।

रचयिता श्री देवसेन। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ४. साइज १२×४॥ इञ्च। गाथा संख्या ७५।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०. साइज १०×४॥ इञ्च। रचना संवत १६४२।

तत्त्वज्ञान तरंगिणी।

रचयिता भट्टारक श्री ज्ञान भूषण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८. साइज १२॥×५॥ इञ्च। रचना संवत् १५६०. लिपि स्थान जयपुर।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३८. साइज ६॥×६ इञ्च। लिपि संवत् १८०८।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २०. साइज ११॥×६ इञ्च। लिपि संवत् १८२३. लिपिस्थान जयपुर।

तत्त्वानुसंधान।

रचयिता श्री महादेव सरस्वति। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या २२. साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत् १९६६. फागुण वुदि ३. विषय-दर्शन। ग्रन्थ के बनाने वाले के सम्बन्ध में लिखा है कि वे परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमत् स्वयं प्रकाशानंद के प्रमुख शिष्य हैं।

तत्त्वानुशासन।

रचयिता श्री नागसेन मुनि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १४. साइज ११॥×४॥ इञ्च। विषय-तत्त्वों का वर्णन। १३ वां पृष्ठ नहीं है। श्री ब्रह्मचारी गौतम के पढ़ने के लिये ग्रंथ की प्रति लिपि की गई।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या १३. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रथम पृष्ठ नहीं है।

तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर।

रचयिता श्री प्रभाचन्द्रदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १००. साइज ११॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३६ अक्षर। रचना संवत् १४८०. ग्रन्थ के अन्त में विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है। यह तत्त्वार्थ सूत्र पर एक टीका है।

तत्त्वार्थराजवार्त्तिक।

रचयिता श्री भट्टाकलंक देव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५०२. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८८२. लिपिकार ने जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह का उल्लेख किया है।

तत्त्वार्थसार।

रचयिता श्री अमृतचन्द्र सूरी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २८. साइज १०॥×५॥ इञ्च। सम्पूर्ण श्लोक संख्या ७२४. लिपि संवत् १६१५. लिपि संवत् के ऊपर किसी ने बाद में पीला रंग डाल दिया है।

तत्त्वार्थसार दीपक।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७९. साइज १०॥×५ इञ्च। लिपिस्थान माधोराजपुरा (जयपुर)।

मंगलाचरणः—

ज्ञानानंदैकरूपाय त्रिज्ञानंतगुणाब्धये ।
शिवाय मुक्तिबीजाय नमोऽस्तु परमात्मने ॥ १ ॥

अन्तिम पद्यः—

अमलगुणनिधानं स्वर्गमोक्षैकमार्गं ।
भवभयचकितानां सच्छरण्यं वरिष्ठं ॥
नृसुरपतिभिरच्यं मानितं भव्यपूर्णं ।
जयतु जगति जैनं शासनं धर्ममूलं ॥ १ ॥

तत्त्वार्थ सूत्र ।

रचयिता श्री उमास्वामि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७, साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७५ १. लिपिकर्त्ता श्री चन्द्र ।

तत्त्वार्थ सूत्रटीका ।

टीकाकार आचार्य श्रुतसागर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४४४. साइज ११॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३०—३६ अक्षर ।

प्रति लिपि नं० २, पत्र संख्या २८३, साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७४७. लिपि स्थान—जहांनाबाद । भट्टारक श्री कल्याणसागर के शिष्य श्री जयवंत तथा श्री लक्ष्मण ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनायी ।

तत्त्वार्थ सूत्र सटीक ।

भाषाकार—अज्ञात । भाषा हिन्दी गद्य पत्र संख्या १५६, साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८८२, भाषा शैली अच्छी है । दूसरे अध्याय से शुरू हुई है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५१, साइज १२×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण ५१ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रति नं० ३, पत्र संख्या १०१, साइज ११॥×५ इञ्च । प्रति सुन्दर है ।

तत्त्वार्थसूत्र भाषा ।

टीकाकार मुनि श्री प्रभाचन्द्र । भाषाकार अज्ञात । पत्र संख्या १४२. साइज ८॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८०३. लिपिस्थान टौंक । श्री खुशालराम ने पांडे कुम्भकरण के लिये प्रतिलिपि बनायी । कहीं २ सूत्रों की टीका संस्कृत में और हिन्दी में दी हुई है और कहीं केवल हिन्दी में ही लिखी हुई है ।

तत्त्वार्थसूत्रसार्थ ।

अर्थ कर्त्ता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३७. साइज १०॥×५ इञ्च । सूत्रों का अर्थ सरल संस्कृत में दे रखा है । प्रति अपूर्ण है । अन्तिम दो पृष्ठ नहीं हैं ।

तर्क चन्द्रिका ।

रचयिता श्री विश्वेश्वर । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या २२. साइज ८॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८२६ ।

तर्कपरिभाषा ।

रचयिता श्री केशवमिश्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३७. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १७६३ चैत्र शुक्ला पूर्णिमा । लिपि कर्त्ता श्री लूणकरण । लिपिस्थानइन्द्रप्रस्थ नगर ।

तर्क संग्रह ।

रचयिता श्री अन्न भट्ट । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १३. साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या १०. साइज १०×६ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार श्री मदत्तभट्टोपाध्याय । लिपि संवत् १७८२. लिपिकर्त्ता-श्री बलभद्र तिवाडी । इन दोनों के अतिरिक्त ७ प्रतियां और हैं ।

तर्कामृत ।

रचयिता श्री मज्जगदीश भट्टाचार्य । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या २१. साइज ६×४॥ इञ्च । विषय-न्याय । लिपि संवत् १८३० ।

ताजिक भूषण ।

रचयिता श्री दैवज्ञ ढुंढिराज । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६. साइज १२×५॥ इञ्च । विषय-ज्योतिष । प्रति अपूर्ण है अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १६. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

ताजिकशास्त्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३. सा ज १०×४ इञ्च। लिपि संवत १६५५. लिपि स्थान चामंड नगर।

तिथिस्वर।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १. साइज ११×४ इञ्च। विषय—ज्योतिष।

तीन चौबीसी पूजा।

रचयिता श्री विद्याभूषण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १४. लिपि संवत् १७४६।

तीन चौबीसी पूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज १२×४॥ इञ्च। केवल तीन चौबीसियों की एक ही पूजा है।

तीर्थंकर परिचय।

लिपिकार पं० बिहारी। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १६। साइज ११×४। इञ्च। विषय— २४ तीर्थंकरो के माता, पिता, गर्भ, जन्म, तप, केवल, मोक्ष, आयु, आसन आदि का वर्णन। लिपि काल संवत् १८२७। तीन प्रतियां और हैं।

तीस चौबीसी।

लिपिकर्त्ता अज्ञात। पत्र संख्या ७. साइज १०॥×५॥ इञ्च। तीस चौबीसियों के नाम अलग २ दे रखे हैं।

'द'

द्रव्यगुणशतश्लोक।

रचयिता श्री मल्ल। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ११. साइज १२×५॥ इञ्च। विषय—आयुर्वेद।

द्रव्य संग्रह।

रचयिता श्री नेमिचन्द्राचार्य। टीकाकार अज्ञात। पत्र संख्या ११६. साइज ७॥×६ इञ्च। प्रथम

तीन तथा ११६. से आगे के पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८४४. भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति ने ग्रन्थ की लिपि बनायी। केवल तीसरा अध्याय है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १८. साइज ६॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १७३४. भाषा गद्य में है।

द्रव्यसंग्रह सार्थ।

मूलकर्त्ता आचार्य श्री नेमिचन्द्र। हिन्दी टीकाकार श्री पर्वत धर्मार्थी। भाषा गुजराती। पत्र संख्या ४३. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १७६७।

द्रव्यसंग्रह सटीक।

मूलकर्त्ता श्री नेमिचंद्राचार्य भाषा प्राकृत। भाषाकर्त्ता श्री रामचन्द्र। भाषा हिन्दी (गद्य) पत्र संख्या २१. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर संख्या १६. पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४८—५४ अक्षर।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ८. साइज १०॥×४ इञ्च। केवल मूलमात्र है।

प्रति नं० ३. पृष्ठ संख्या ८. साइज ६॥×४॥ इञ्च। प्रति लिपि संवत् १७६८. लिपिस्थान जयपुर।

प्रति नं० ४. पृष्ठ संख्या ६. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६५६ पौष बुदि ११.

प्रति नं० ५. पृष्ठ संख्या ११. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७२३. लिपिस्थान पाटण।

प्रति नं० ६. पृष्ठ संख्या ६. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १६०४. लिपि स्थान माधोपुर।

प्रति नं० ७. पृष्ठ संख्या ११. साइज ११×५ इञ्च।

प्रति नं० ८. पृष्ठ संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ६. पृष्ठ संख्या ३. साइज ११॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० १०. पृष्ठ संख्या २५. साइज ११×५ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार श्री प्रभाचंद्र कवि। टीका की भाषा संस्कृत है। लिपि संवत् १८०२.

प्रति नं० ११. पृष्ठ संख्या ३४. साइज ११॥×५ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार श्री कवि प्रभाचन्द्र भाषा संस्कृत।

प्रति नं० १२. पृष्ठ संख्या ४. साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८२१. लिपि स्थान जयपुर।

प्रति नं० १३. पृष्ठ संख्या १०. साइज १०॥×४ इञ्च। वेष्टन नं० २६१.

दर्शनसार।

रचयिता देवसेन। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ५. साइज १२×४॥ इञ्च। गाथा संख्या ५२. लिपि संवत् १५५३.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १७५५. लिपिस्थान सांगानेर।

दशलक्षण जयमाला।

रचियता पंडित भाव शर्मा। भाषा प्राकृत-संस्कृत। पत्र संख्या १२. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि-स्थान-नेवटा (जयपुर) लिपिकार पंडित रूपचन्द्र। आठ प्रतियां और हैं।

दशलक्षण जयमाला।

रचयिता पं० रइधू। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८२२. लिपि कर्त्ता श्री केशवदास।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति पूर्ण है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १२. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १८८५. लिपि स्थान जयपुर। लिपिकर्त्ता महात्मा शुभराम।

दशलक्षण जयमाल।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १०. साइज १२॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८०१. लिपिस्थान मालपुरा (जयपुर) लिपिकार श्री दयाराम।

दशलक्षण कथा।

रचयिता भट्टारक श्री ब्रह्म ज्ञान सागर। भाषा हिन्दी। साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८३८. लिपिस्थान पाटण। लिपिकर्त्ता श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति।

दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा।

रचियता भ० श्री मल्लिभूषण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६. साइज ११॥×५॥ इञ्च। प्रति नवीन शुद्ध और सुन्दर है।

दृष्टान्तशतक।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या २७. साइज १०×४॥ इञ्च। विषय-अलंकार।

दानकथा।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १२. साइज १०×४ इञ्च। पुस्तक में कितनी ही प्रकार की दान कथाओं का वर्णन संक्षिप्त में दिया हुआ है।

दान महिमा।

रचयिता हंसराज वच्छराज। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३०. साइज ११×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४२।४८ अक्षर। रचना संवत् १६८०. लिपि संवत् १८०५.

द्वादशमासी।

रचयिता-मुनि माणिक्यचन्द्र। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १. साइज १०×४॥ इञ्च। विषय-भगवान नेमिनाथ का बारह मास का वर्णन।

द्वादशव्रतमंडलोद्यापनपूजा।

रचयिता भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १२. साइज १२×५॥ इञ्च।

दिलारामविलास।

रचयिता श्री दौलतराम। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १५८. साइज ९×५॥ इञ्च। रचना संवत् १७६८. विलास के अन्त में अच्छी प्रशस्ति दी हुई है जिसमें राजवंश, नगर और कविवंश का वर्णन दिया हुआ है।

द्विःसंधानकाव्य।

रचयिता श्री नेमिचन्द्र। टीकाकार देवनन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २८०. साइज ११×५ इञ्च।

लिपि संवत् १६७६. काव्य अपूर्ण है ११२ से पूर्व के पृष्ठ नहीं हैं।

दुर्गपदप्रबोध।

रचयिता श्री हेमचन्द्राचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३७. साइज १०||×४ इञ्च। लिपि संवत १८१२. आचार्य हेमचन्द्र की लिंगानुशासन में से कुछ विषय ले लिया गया है।

दुर्घट श्लोकव्याख्या।

व्याख्याकार अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८. साइज १०||×५ इञ्च। सम्पूर्ण श्लोक संख्या ८. प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के ८ पृष्ठ नहीं हैं।

दुष्टवादिगजांकुश।

रचयिता श्री सुधारंधार। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज ११×५॥ इञ्च। प्रथम पृष्ठ नहीं है।

दूतांगद नाटक।

रचयिता श्री सुभट। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४. साइज ११||×४ इञ्च। लिपि संवत् १५३४.

देवसिद्ध पूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३१. साइज १०||×५ इञ्च। प्रति सटीक है। टीका संस्कृत में है। टीकाकार का नाम कहीं पर भी नहीं लिखा हुआ है।

दौर्गसिंह वृत्ति।

वृत्तिकार अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १२५ साइज ११×४॥ इञ्च। विषय—व्याकरण। सम्पूर्ण ग्रन्थ अष्ट पादों में विभक्त है। लिपि संवत् १६६२. आरम्भ के १४ पत्र नहीं हैं। बीच के बहुत से पृष्ठ फटे हुये हैं।

दोहापाहुड।

रचयिता आचार्य कुन्दकुन्द। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ११. साइज ११||×५ इञ्च। लिपि संवत् १६०२. लिपिकार ने बादशाह शाहआलम का उल्लेख किया है।

ध

धनकुमारचरित्र

ग्रन्थकर्त्ता पं० रइघू। भाषा अपभ्रंश पत्र संख्या ३१. साइज ७×३॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तिया और प्रत्येक पंक्ति में २८–३४ अक्षर। लिपि संवत् १६३६. ग्रन्थ अच्छी हालत में है। अन्त में प्रशस्ति है।

धनपालरास।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ५. साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२–३८ अक्षर लिपि संवत् १८२८।

मंगलाचरण—

वीर जिनवर २ नमु तेसार तीथकर वो वीसमो।
वांछित फल बहुदान दातार सारद सामिण वीनवु ॥ १ ॥

अन्तिम—

दानतणो फलरूषड़ो जस विस्तरो अपार।
धनपाल साह को निरमलो, सरगें लीयो अवतार॥
इमं जाणि निश्चय करा दान सुपात्रें देउं।
श्रावक भवियण निरमलो मनुष्य जन्म सफल कर लेउ॥
श्री सकल कीरति गुरू प्रणमीनें श्री भुवन कीर्त्ति भवतार।
दान तणा फल वरणया ब्रह्म जिणदास कहें सार॥

धन्यकुमारचरित्र।

रचयिता ब्रह्मनेमिदत्त। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २७. साइज १२×४॥ प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में २६–३२ अक्षर।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ८. साइज १०॥×४॥ प्रति अपूर्ण। आठ से अधिक पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ३३. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रतिलिपि संवत् १७२८।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १६. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १७८५।

धन्यकुमारचरित्र ।

रचयिता आचार्य श्री गुणभद्र । भाषा संस्कृत पत्र संख्या ३८. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में ३५-४२ अक्षर ।

धन्यकुमारचरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३५. साइज १२×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३७-४२ अक्षर । लिपि संवत् १८१३ ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३४. साइज ७॥×४॥ लिपि संवत् १५३३. पद्य संख्या ८५० ।

धर्मचक्रपूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६. साइज १०×५ इञ्च । लिपि संवत् १७०६. लिपि-स्थान मालपुरा । लिपिकर्त्ता आ. श्री कमलकीत्तिजी ।

धर्म चचक्रविधान ।

रचयिता श्री यशःनन्दि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २१. साइज ११॥×४॥ इञ्च ।

धर्म दोहावली ।

संग्रह कर्त्ता पं० जोवराज गोदीका । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ११. साइज १२×५॥ इञ्च । दोहावली संख्या १४५. लिपि संवत् १८२० ।

धर्मोपदेश श्रावकाचार ।

रचयिता श्री पं० धर्मदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४६. साइज ८॥×४॥ इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८ ३४ अक्षर । रचना संवत् १५७८. प्रथम पृष्ठ नहीं है ।

धर्मोपदेश ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में १८-२४ अक्षर । प्रति अपूर्ण है । प्रथम पृष्ठ तथा अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

धर्म्मोपदेश पीयूष ।

रचयिता श्री नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २२. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६३५. विषय–श्रावकों के आचार व्यवहार का वर्णन । दो प्रतियां और हैं ।

धर्म संग्रहश्रावकाचार ।

रचयिता पंडित मेधावी । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६४. साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८–४४ अक्षर । रचना संवत् १५४० ग्रन्थ के अन्त में ४१ पद्यों में कवि का परिचय दिया हुआ है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८५. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १५४२ ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७०. साइज ११×५ इञ्च ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १०१. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६९२ । लिपिस्थान चाटसु । लिपिकार श्री शालगराम ।

धर्म परीक्षा ।

रचयिता आचार्य श्री अमितिगति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४५. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४–४० अक्षर । रचना संवत् १०७०. लिपि संवत् १६६६ ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७८. साइज १२×६ इञ्च ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १४५, साइज १०×४॥ ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ६०. साइज ११॥×५ इञ्च । लिपि संवत् १७३३. बादशाह मुलकगीर के शासन काल में साहदरा नामक स्थान पर श्री निर्मलदास ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करायी ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ८१. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १५६६. लिपिस्थान दूष्टिकापथ दुर्ग । साध्वी सुलेखा ने शास्त्र की प्रतिलिपि करायी ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ३५. साइज १०॥×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ७६. साइज १०॥×४ इञ्च । आधे से अधिक ग्रन्थ को दीमक ने खा लिया है ।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या १४५. साइज १०×४॥

धर्म परीक्षा ।

रचयिता श्री मनोहरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १२४. साइज ११×५॥ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या ३०००. लिपि संवत् १८०२. प्रशस्ति दी हुई है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ७१. साइज १२॥×५॥ इञ्च ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ८०. साइज १२॥×६ इञ्च ।

धर्म परीक्षा ।

रचयिता पं० हरिषेण । पत्र संख्या ६४. भाषा अपभ्रंश । साइज ११॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४५-५० अक्षर । रचना संवत् ११३२.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८८. साइज १०॥×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११-१३ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३४-४० अक्षर । लिपिकाल अज्ञात । ग्रन्थ अच्छी हालत में है । लिपि सुन्दर नहीं है । प्रशस्ति नहीं है ।

धर्म परीक्षा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५. साइज ८×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२-३६ अक्षर । लिपि संवत् १७५० । लिपिस्थान सवा (जयपुर) । लिपिकार मुनि श्री कान्तिसागर ।

मंगलाचरण—

धर्म्मतः सकलमंगलावली धर्म्मतः सकलसौख्यसंपदः ।
धर्म्मतः स्फुरतिनिर्मलं यशो धर्म्म एव तदहोविधीयतां ॥ १ ॥

ध्यानसार

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४. साइज ११×५ इञ्च । विषय—चारों ध्यानों का वर्णन ।

ध्यानस्वरूप ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ७. साइज १०×५ इञ्च । विषय—ध्यानों के स्वरूप का वर्णन । ग्रन्थ चिपक जाने से अक्षर मिट गये हैं ।

ध्वजारोहणविधान ।

रचयिता पं० आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४. साइज १२×४॥ इञ्च ।

धातुपाठावली ।

रचयिता पं० वोपदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २४. साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

प्रति नं २. पत्र संख्या ६८. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रति सटीक है ।

न

नन्दितादिछंद ।

सटीक । रचयिता श्री देवनन्दि । टीकाकार श्री रत्नचन्द्र । पत्र संख्या १०. भाषा संस्कृत । साइज ८×४॥ इञ्च ।

अन्तिम पाठ—

मं डव्यपुरगच्छीय देवाणंदमुनिगिरा ।
टीकेयं रत्नचन्द्रेण नंदिता यस्य निर्मितः ॥१॥

प्रति नं० २. पत्र सख्या ४. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १५३० । लिपि कर्त्ता श्री रत्नचन्द्र लिपिकर्त्ता ने बादशाह कुतुबखां के राज्य का उल्लेख किया है लिपि स्थान—हिसार ।

नन्दिसंघविरुदावली ।

रचयिता अज्ञात । पत्र संख्या ५. भाषा संस्कृत । साइज ११×५॥ लिपिकार भट्टारक श्री अभयचन्द्र ।

नन्दिश्वर अष्टाह्निका कथा ।

रचयिता—आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०. साइज ८॥×५ इञ्च । विषय—अठाई व्रत की कथा । लिपि संवत १८०२ ।

प्रति नं २. पत्र संख्या १०. साइज ६×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८०२ ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १०. साइज ११×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ८. साइज १२×५ इञ्च । लिपि संवत् १८४४.

नंदीश्वरचतुर्दिगाश्रितपूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६. साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३६. लिपि स्थान सवाई माधोपुर । लिपिकार भट्टारक श्री सुरेन्द्र कीर्ति ।

नंदीश्वर द्वीप पूजा ।

रचयिता श्री कनककीर्ति । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ७. साइज १२×५॥ इञ्च ।

नन्दि पचीसी ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३. साइज ८×६ इञ्च । विषय स्तुति पाठ ।

नंदीश्वरविधानकथा ।

रचयिता श्री हरिषेण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२-३८ अक्षर । लिपि संवत् १६४५ लिपिस्थान मालपुरा ब्रह्मचारी लोहट ने कथा की प्रतिलिपि बनायी । कथा के अन्त में प्रशस्ति दी हुई है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १३. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६६१ मंगसिर बुदी ५. आचार्य खेमचन्द्र ने कथा की प्रतिलिपि बनायी । प्रति स्पष्ट और स्वच्छ नहीं है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६. साइज ११×४॥ इञ्च । श्री आचार्य शुभचन्द्र के शिष्य श्री सकल भूषण के पढने के लिये प्रति लिपि बनायी ।

नंदीश्वरपूजाविधान ।

रचियिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७. साइज ११॥×४॥ इञ्च ।

नमिनाथ पुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकल कीर्त्ति । भाषा संस्कृत पत्र संख्या ७५. साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक

पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४०-४४ अक्षर। लिपि संवत् १५४१। विषय-भगवान नेमिनाथ का जीवन चरित्र।

नयचक्र भाषा।

भाषाकार श्री हेमराज। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २४. साइज ६×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २८-३४ अक्षर। रचना संवत् १७२६।

नयचक्र।

रचयिता श्री देवसेन। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ५३. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर। लिपि संवत् १५२०।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १४. साइज १०॥×५ इञ्च।

प्रति नं० ३. पृष्ठ संख्या ३४. साइज ११॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर लिपि संवत् १७६४ आसोज बुदी १०. भट्टारक श्री हर्षकीर्त्ति के उपदेश से ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई।

नृपचंदरासो।

रचयिता श्री विबुध रुचि। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ८०. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४४ अक्षर। रचना संवत् १७१३. लिपि संवत् १७६४।

नलोदय काव्य।

रचयिता श्री रविदेव। टीकाकार श्री राम ऋषि द्राघीच्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३६. साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत् १७३०. लिपिस्थान चंपावती। ग्रन्थ अपूर्ण १५ से ३५ तक के पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३६. साइज १०॥×४॥। प्रति पूर्ण है किन्तु सटीक नहीं है।

नवग्रहफल।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज ११×६ इञ्च प्रति अपूर्ण है।

नवग्रहपूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १३. साइज ११×४॥ इञ्च।

नवनरवटीका ।

टीकाकार—अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८२३. विषय—नव पदार्थों का वर्णन ।

नव्यशतकोवचूरि ।

रचयिता श्री देवेन्द्र सूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६. साइज १०×४ इञ्च । लिपि संवत १७६३. ग्रन्थ न्याय का है ।

नागकुमार चरित्र ।

रचयिता महाकवि पुष्पदंत । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ७१. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८—४४ अक्षर ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७०. साइज १०॥×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १६१२. लिपि स्थान तक्षक महादुर्ग । आचार्य ललितदेव के समय में खंडेलवालान्वय सा० टेहू सा० नोता ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई ।

नागकुमार चरित्र ।

रचयिता श्री मल्लिषेणसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३२. साइज ७×३॥ इञ्च । लिपि संवत १७२६ फाल्गुण वुदि ८. ग्रन्थ साधारण हालत में है । लिपि विशेष सुन्दर नहीं है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २०. साइज ७×३॥ इञ्च । भाषा संस्कृत । लिपि काल संवत् १६६८. ग्रन्थ अच्छी हालत में नहीं है । अक्षर सुन्दर हैं ।

नागकुमारचरित्र ।

रचयिता पंडित माणिकराज । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १२४. साइज १०×४॥ प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८।४२ अक्षर । प्रतिलिपि संवत् १५६२. ग्रन्थ के अन्त में स्वयं कवि ने अपना विवरण लिखा है । प्रारम्भ के दो पृष्ठ नहीं हैं ।

नागश्रीकथा ।

रचयिता ब्रह्मनेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २२. साइज ६॥×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २६—३० अक्षर । लिपि संवत् १८२८ । विषय—रात्रि भोजन त्याग की कथा ।

न्यायदीपिका।

रचयिता श्री धर्म भूषणाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४०. साइज १०×४॥ इञ्च। विषय–न्याय। लिपि संवत् १८१६।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या २५. साइज ११×५ इञ्च।

न्यायसार।

रचयिता भासर्वज्ञ। टीकाकार श्री भट्टारक श्री रत्नगुरी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६३. साइज १०॥×३ इञ्च। लिपि संवत् १५१६. लिपिस्थान कुंभलमेरुमहादुर्ग। विषय–जैन न्याय।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १७. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६५८. लिपिस्थान सूर्यपुर महानगर। केवल मूल मात्र है, टीका नहीं है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ५१. साइज १०॥×४॥ प्रति सटीक है। टीकाकार श्री जयसिंहसूरि।

न्यायसिद्धान्तमंजरी।

ग्रन्थकार श्री जानकीनाथशर्मा। टीकाकार श्री शिरोमणि भट्टाचार्य। पृष्ठ संख्या २०. साइज १३×६ इञ्च। लिपि संवत् १८४८।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७. साइज १३×६इञ्च। केवल मूल मात्र है। अनुमान खण्ड तक ही है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २५. साइज १३॥×६॥ इञ्च। लिपि संवत् १८३०. प्रति सटीक नहीं है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ११. साइज१४×७ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

न्यायावतारवृत्ति।

रचयिता श्री सिद्धसेन। वृत्तिकार अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या २८. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर २० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ६०–६६ अक्षर। लिपि संवत् १५२२. लिपि स्थान–महीशानक। श्री अभय भूषण के शिष्य अणु ने उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनाई।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २७. साइज ११×४॥ इञ्च।

नारचन्द्रज्योतिपसूत्र ।

रचयिता श्री नारचन्द्र । भापा संस्कृत । पत्र संख्या २३. साइज १०×४।। इञ्च । ग्रन्थ अपूर्ण है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२. साइज १०×४ इञ्च । लिपि संवत् १८४७ ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ३७. साइज १०।।×४ इञ्च । लिपि संवत् १७५८. लिपिस्थान फतेहपुर ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ३३. साइज १०×४।। इञ्च । प्रति अपूर्ण है । ३३. से आगे के पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या २६. साइज १०।।×४।। इञ्च ।

निर्दोष सप्तमी कथा ।

रचयिता श्री ब्रह्मरायमल । भापा हिन्दी । पत्र संख्या ४. साइज ११।।×५।। इञ्च । सम्पूर्ण पद्य-संख्या ६० ।

नियमसार टीका ।

मूलकर्त्ता श्री कुन्दकुन्दाचार्य । टीकाकार श्री पद्मप्रभमलधारिदेव । भाषा-प्राकृत- संस्कृत । पत्र संख्या ८५. साइज ११।।×५।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४५-५० अक्षर । लिपि संवत १८३७ ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १२६. साइज १०।।×४ इञ्च । लिपि संवत् १७६६. लिपिस्थान चाटसू । श्री राजाराम के पढने के लिये उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी ।

निश्चयसाध्योपनिपत् ।

रचयिता अज्ञात । भापा संस्कृत । पत्र संख्या १८६ । साइज ११।।×५।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२-३८ अक्षर ।

नीतिवाक्यामृत सटीक ।

रचयिता श्री आचार्य सोमदेव । टीकाकार अज्ञात । भापा संस्कृत । पत्र संख्या ३८. साइज ११×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । ३८ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं ।

नीतिशास्त्र ।

रचयिता श्री चाणक्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७. साइज ११×४॥ इञ्च । अध्याय आठ हैं । श्लोक संख्या १५७ ।

नीतिशतक ।

रचयिता श्री भर्तृहरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७. साइज १०×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

नेमिजिनवर प्रबंध ।

रचयिता अज्ञात । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १३. साइज ७×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २३-२८ अक्षर । प्रथम २ पृष्ठ नहीं है ।

नेमिदूत काव्य ।

रचयिता श्री विक्रम । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८ । साइज ११॥×५॥ इञ्च । श्लोक संख्या १२६ । विषय—भगवान नेमिनाथ के दूत का राजमती के पिता के यहां जाना । इसमें कवि ने महाकवि कालिदास के मेघदूत काव्य के पद्यों के एक एक भाग को श्लोक के अन्त में अपने अर्थ में प्रयोग किया है ।

नेमिनाथ चरित्र ।

रचयिता आचार्य हेमचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६५. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ५०-५४ अक्षर । लिपि संवत् १५१६. विषय—भगवान नेमिनाथ का जीवन चरित्र ।

नेमिजिन चरित्र ।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । साइज १०×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति ३७-४२ अक्षर । लिपि संवत् १८४५. लिपिस्थान जयपुर । विषय—भगवान नेमिनाथ का जीवन चरित्र ।

प्रति नं २. पत्र संख्या २२० । साइज ११×४ इञ्च । लिपि संवत् कुछ नहीं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १३८ । साइज ११×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १७३१ ।

प्रति नं० ३. । पत्र संख्या १५० । साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६४३ ।

प्रति नं० ४. । पत्र संख्या २१६ । साइज ११॥×४॥ इञ्च ।

नेमीश्वर चंद्रायण ।

रचयिता श्री नरेन्द्रकीर्त्ति । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ८. साइज १०×४॥ इञ्च । पद्य संख्या १०५. लिपि संवत् १६६० ।

नेमीश्वर रास ।

रचयिता श्री नेमिचन्द्र । भाषा हिन्दी । साइज १२×५॥ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या १३०५. रचना संवत् १७६६ । प्रशस्ति सुन्दर है ।

नेमीश्वररासो ।

रचयिता ब्रह्मरायमल । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १६. साइज ११×५ इञ्च । रचना संवत्१६१५ ।

नैषध चरित्र ।

रचयिता महाकवि श्री हर्ष । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २८२. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ६०-६४ अक्षर । प्रति सटीक है । टीकाकार श्री नरहरि । लिपि संवत् १८४४ ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १००. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार श्री नारायण । प्रति अपूर्ण है केवल पांच सर्ग ही हैं और वे भी क्रम रहित हैं ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ५०. साइज ११॥×६ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १७. साइज १३×५॥ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार नरहरि । प्रति अपूर्ण । तीन प्रति और हैं ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १६. साइज १०॥×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १४३. १२॥×६॥ इञ्च ।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या १६. साइज १०॥× ४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

णमोकार स्तोत्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या २. साइज १०।।×४।। इञ्च। गाथा संख्या २५ लिपि संवत् १६७५. लिपिकर्त्ता पांडे मोहन। लिपि स्थान जोवणे।

प

पदमञ्जरी।

रचयिता श्रीहरिदत्तमिश्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०६. ११।।×४।। इञ्च। लिपि संवत् १७४०.

पट्टावली।

लिपिकर्त्ता—अज्ञात। पत्र संख्या २. भट्टारक पट्टावलि संवत् १८१५ तक। भट्टारकों की संख्या ८६.

पद्मनंदी पचीसी।

रचयिता श्री जगतराय। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या १२३. साइज १०×५।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८।३४ अक्षर। रचना संवत् १७२२. लिपि संवत् १८१८. दीमक लग जाने से करीब १०० पृष्ठ नष्ट हो चुके हैं। अन्त में कवि की के द्वारा लिखी हुई प्रशस्ति है।

मंगलाचरण—

अमल कमल दल विपुल नयन भल,
सकल अचल बल उपशम धरि है।
अखिल अवनितल अटल प्रबल जस,
सुरपति नरपति स्तुति बहुकरि हैं॥
धृति मति खतिवर सब जन सुखकर,
कनक वरण तन सिद्धि वधू वरि है।
वृषभ लछिनधर प्रगट तनय भर,
अघ तिमर विकर भव जलतरि है॥१॥

पद्मनन्दि श्रावकाचार।

रचयिता आचार्य पद्मनन्दि। पत्र संख्या ४. साइज ११×४।। इञ्च। लिपि संवत् १७१२.

पद्मपुराण (पउमचरिए) ।

रचयिता महाकवि स्वयंभू त्रिभुवनस्वयंभू । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ३५७. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ३८–४२ अक्षर । लिपि संवत् १५४१. विषय–जैनरामायण ।

पद्मपुराण ।

भाषा अपभ्रंश । रचयिता पं० रइधू । पत्र संख्या ६०. साइज १०॥×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में ४०–४४ अक्षर । लिपि संवत् १५५१ फाल्गुण सुदी ६.

पद्मपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सोमसेन । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६७. साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३६ अक्षर । लिपि संवत् १७५१. अन्त में लिपिकार ने प्रशस्ति दे रखी है । प्रति स्पष्ट और सुन्दर नहीं है ।

मंगलाचरण—

वंदेऽहं सुव्रतं देवं पंचकल्याणनायकं ।
देवदेवादिभिः सेव्यं भव्यवृंदं सुखप्रदं ॥१॥
शेषान् सिद्धान् जिनान् सूरीन्, पाठकान् साधु संयुतान् ।
नत्वा वक्ष्ये हि पद्मरूप पुराणं गुणसागरं ॥२॥

प्रति नं० २ पत्र संख्या २६७. साइज १०×४ इञ्च । लिपि संवत् १७५१.

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १५२. साइज ११×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ के तथा अन्त के पृष्ठ नहीं हैं ।

पद्मपुराण ।

रचयिता श्री रविषेणाचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५५४. साइज १३×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०–४६ अक्षर । प्रति बहुत प्राचीन है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४३०. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३४. प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ के २६६ तथा मध्य के १०० पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४४०. साइज १३×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ४२-४८ अक्षर। प्रति अपूर्ण है। प्रथम ११ पृष्ठ ११३ से २४०, २५५ से २८३, २६६ से ३६६ तथा अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ६४१. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८५५. लिपि स्थान रोडपुरा।

प्रति नं ५. पत्र संख्या ५१६. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत १७५७. इन्द्रगढ नगर में महाराजा सरदारसिंह के शासन काल में श्री शिव विमल ने लिखा। प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के १६७ पृष्ठ नहीं हैं।

पद्मपुराण।

ग्रन्थकार भट्टारक श्री धर्मकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २५१. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८।४२ अक्षर। लिपि संवत् १६७०.

पद्मपुराण।

रचयिता श्री चन्द्रकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४१२. साइज ११॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४४ अक्षर। ग्रन्थ बहुत सरल भाषा में लिखा हुआ है। अलंकारों की अधिक भरमार नहीं है।

पद्मपुराण।

रचयिता ब्रह्म जिनदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५३०. ११×५॥ इञ्च। प्रति प्राचीन है।

पद्मावती स्तोत्र।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या ८. साइज ७×४॥ इञ्च। भाषा संस्कृत। प्रति प्राचीन है

प्रति नं० २. पत्र संख्या २. साइज ६×४ इञ्च।

पंच कल्याणक पूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २१. साइज ११×४॥ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १३. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपिकार पं० दयाराम।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १३. साइज ११॥×५ इञ्च।

पंच कल्याणक पूजा।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २४. साइज १०॥×५ इञ्च। प्रति नवीन है। प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या २४. साइज १०॥×५ इञ्च।

पंचकल्याणविधान।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३०. साइज ६×४ इञ्च। लिपि संवत् १८६०. लिपिस्थान गोपचल लिपिकर्त्ता श्री सुरेन्द्रभूषण।

पञ्चतन्त्र।

भाषाकार श्री पं० रतनचन्द्रजी। भाषा हिन्दी संस्कृत। पत्र संख्या १००. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ५४-५८ अक्षर। उक्त पुस्तक में प्रारम्भ में मंगलाचरण के बाद अनेक राज्यों का नामोल्लेख है जिससे तत्कालीन राज्य का पता लग सकता है। संस्कृत में भी श्लोक हैं और उनका हिन्दी में अनुवाद किया गया है। इसलिये शायद पञ्चतन्त्र के मुख्य २ श्लोकों तथा पद्यों का उद्धरण मात्र दिया गया है। टीका संवत् १६४८.

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२६. साइज ६×४॥ इञ्च। प्रति प्राचीन है।

पंचतन्त्र।

रचयिता पं० विष्णु शर्मा। भाषा संस्कृत–गद्य पद्य। पृष्ठ संख्या १२६. साइज ८॥×५॥ इञ्च।

पंचदण्डकथा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०६. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८–४६ अक्षर। विषय–नीति। उक्त कथा की रचना पंचतंत्र अथवा हितोपदेश के समान की गयी है। किन्तु यहां कवि प्रत्येक बात पद्य में ही कहता है। ग्रन्थ बहुत ही महत्त्व पूर्ण है तथा अभी तक अप्रकाशित भी है। ग्रन्थ अपूर्ण है, १०६ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

मंगलाचरण—

प्रणम्य जगदानंददायकान् जिननायकान्।
गणेशान्गौतमाद्यांश्च गुरून् संसारतारकान् ॥१॥
सज्जनान् शोभनाचारान् शास्त्रबोधनकारकान्।
पंचदंडातपत्रस्य कथां वक्ष्ये समासतः ॥२॥

पंच परमेष्ठि पूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३३. लिपिस्थान रामपुरा ।

पंचपरमेष्ठी पूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४१. साइज ७॥×४॥ इञ्च । विषय—पूजा साहित्य । रचना संवत् १९२७. मंगसिर बुदी षष्ठमी ।

प्रारम्भ—

मंगलमय मंगलकरन पंच परमपदसार ।
अशरन को ये ही सरन उरन लोक नमकार ॥१॥

अन्तिमपाठ—

तेले दोय दोहानि में धरिल आठ विश्राम ।
आदि अंक में कवि तनौ नाम जाति अरु गाम ॥
मार्गशीर्ष वदि षष्टमी ऋतु दिन पूरन थाग ।
संवत् सरसत अष्टदश साठि दोय अधिकाय ॥

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३०. साइज ७॥×४॥ इञ्च ।

पंचभूतविवेक ।

रचयिता श्री रामकृष्ण । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १३३. साइज १२×४॥ इञ्च । विषय—तात्विक । प्रति प्राचीन मालूम देती है ।

पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन ।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्र कीर्त्ति । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४. साइज १२×४॥ इञ्च । लिपि संवत १८७८. लिपिकार सवाईराम गोधा ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३. साइज १ ॥×४॥ इञ्च ।

पंचमीव्रतपूजा ।

रचयिता आं० श्रुतसागर भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३६. लिपि स्थान सवाई माधोपुर ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७. साइज ११।।×४।। इञ्च। लिपि संवत १७१८.

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ८. साइज १०।।×५ इञ्च।

पंचमेरुपूजा।

रचयिता भट्टारक श्री रत्नचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज १२×५।। इञ्च। लिपि संवत् १८३६. लिपिकार भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति। लिपि स्थान माधोपुर (जयपुर)

पञ्चविंशतिक्रियावचूरि।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या ७. भाषा अपभ्रंश। साइज ८।।×३।। इञ्च।

पंचसग्रह।

रचयिता श्री नेमिचंद्राचार्य। भाषा प्राकृत–संस्कृत। साइज १०।।×४ इञ्च। ग्रन्थ का दूसरा नाम लघुगोम्मट सार है। गोम्मटसार में से ही गाथायें लेकर उनपर संस्कृत में टीका लिखी गयी है। ग्रन्थ अपूर्ण सा है। पत्र संख्या ९९९.

प्रति नं २. पत्र संख्या १०८. साइज १२।।×५।। इञ्च। लिपि संवत १७६६. लिपिकर्त्ता भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति। लिपि स्थान सवाई जयपुर। गोम्मटसार में से मुख्य २ गाथाओं का संग्रह किया गया है।

पंचसंग्रह।

रचयिता श्री अमितिगति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६७. साइज १०×५ इञ्च। रचना संवत् १०७०. लिपि संवत् १५७९. विषय-द्रव्य क्षेत्र कालादि का वर्णन।

पंचसंग्रह।

भाषा प्राकृत। पत्र संख्या १०८. साइज १२×५।। इञ्च। विषय-सिद्धान्तचर्चा। लिपि संवत् १७६६ लिपिस्थान जयपुर। भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनाई।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११८. साइज ११×५।। इञ्च। प्रति प्राचीन है। अक्षर मिट गये हैं। प्रति जीर्ण शीर्ण है।

पंच संसार।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज १०।।×४।। इञ्च। विषय–द्रव्य क्षेत्र काल आदि का वर्णन।

मंगलाचरण—

पंचसंसारमुक्तेभ्यः सिद्धेभ्यः खलु सर्वदा ।
नमस्कृत्वा प्रवक्ष्येऽहं पंचसंसारविस्तरं ॥ १ ॥

पंचस्तवनावचूरि ।

लिपिकर्त्ता अज्ञात । पत्र संख्या ५६. साइज ११×५ इञ्च । पंचस्तोत्रों का संग्रह है । सभी स्तोत्रों की टीका भी है । प्रति के पत्र गल गये हैं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५६. साइज ११॥×५॥ इञ्च ।

पंचास्तिकाय ।

मूलकर्त्ता आचार्य श्री कुन्दकुन्द । भाषा टीकाकर्त्ता श्री हेमराज । भाषा प्राकृत हिन्दी । पत्र संख्या १४७. साइज ११॥×५॥ इञ्च । भाष रचना संवत् और लिपि संवत् १७३६.

पंचास्तिकाय सटीक ।

मूलकर्त्ता आचार्य श्री कुन्दकुन्द । टीकाकार प्रभाचन्द्र । भाषा प्राकृत-संस्कृत । पत्र संख्या ६५. साइज १०×५ इञ्च ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५६. साइज ११॥×५ इञ्च । लिपि संवत १८२८. लिपिस्थान जयपुर ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ३६. साइज १०॥×४ इञ्च ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १४८. साइज १०×४ इञ्च । टीकाकार आचाय अमृतचन्द्र । लिपि संवत् १६३७. अन्त में लिपि कराने वाले का अच्छा परिचय दिया है ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १६६. साइज १०॥×५ इञ्च । लिपि संवत् १६२७. लिपिस्थान आगर कोट । टीकाकार आ० अमृतचन्द्र ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या २६. साइज १०॥×५ इञ्च ।

परमेष्टिप्रकाशसार ।

रचयिता श्री श्रुतकीर्त्ति । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १८८. साइज ६॥×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३०-३६ अक्षर । विषय-धार्मिक । प्रारम्भ के २ पृष्ठ तथा अन्त का १८७ वां पृष्ठ नहीं है ।

परिभाषा वृत्ति ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७. साइज १०॥×५ इञ्च ।

मंगलाचरण—

प्रणम्य सदसद्वादध्वांतविध्वंसभास्करं ।
वाङ्मयं परिभाषार्थं वक्ष्ये बालाय बुद्धये ॥

परीषह वर्णन ।

रचयिता अज्ञात । पत्र संख्या २. भाषा संस्कृत । साइज ८॥×५॥ इञ्च । पद्य संख्या २२. विषय—२२ परीषहों का वर्णन ।

परीक्षामुख ।

रचयिता श्री माणिक्यनन्दि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५१. साइज १०॥×४॥ इञ्च । मूल सूत्र टीका सहित है । टीका नाम लघु वृत्ति है । प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ मध्य तथा अन्त के पृष्ठ नहीं हैं ।

पल्यव्रतोद्यापनपूजा ।

रचयिता श्री रत्ननंदी । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५. साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३६. लिपिकार भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति । लिपिस्थान सवाई माधोपुर (जयपुर) ।

पल्यविधानमुद्यापन ।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ८. साइज १२×५॥ इञ्च ।

प्रति नं० २. साइज ११॥×५ इञ्च । पृष्ठ संख्या ११. इसमें अन्य पूजाएं भी हैं ।

पल्यव्रत का विवरण ।

पत्र संख्या ४. साइज ११॥×६॥ इञ्च ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०. साइज ६×५॥ इञ्च ।

पर्वसूचि ।

संग्रहकार अज्ञात । पत्र संख्या १३. भाषा हिन्दी संस्कृत । साइज १०॥×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्राक्रिया कौमुदी ।

रचयिता श्री महाराज वीश्वर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २५५. साइज १०×४ इञ्च । रचना संवत् अथवा लिपि संवत् कुछ नहीं दिया हुआ है ।

प्रक्रियासार ।

रचयिता सर्व विद्याविशारद श्री काशीनाथ । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११८. साइज १०×४।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४८-५४ अक्षर । लिपि काल—मंगसिर बुदी १३ संवत् १६८६ विषय—व्याकरण ।

प्रताप काव्य सटीक ।

रचयिता अज्ञात । टीकाकार अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४८. साइज १२।।×६ इञ्च । जयपुर के महाराजा प्रतापसिंह के यश तथा वीरता के गुणगान गाये गये हैं । अनेक अलंकार की प्रधानता है । प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ के २४ पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रति क्रमण ।

रचयिता गौतमस्वामी । भाषा प्राकृत संस्कृत । पत्र संख्या १६. साइज ११।।×५ इञ्च । विषय— सामायिक पाठ ।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या १७. साइज ११×४ इञ्च । लिपि संवत् १७२४ श्रावण बुदि १०. लिपिस्थान अंबावती (आमेर) ।

प्रति नं० ३. पृष्ठ संख्या ५४. साइज ११×४।। इञ्च । लिपि संवत् १७२० फागुण सुदी ११. लिपि स्थान जयपुर । लिपिकार ने महाराजा जयसिंह के राज्य का उल्लेख किया है ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १७. साइज ११।।×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रद्युम्नचरित्र ।

रचयिता आचार्य सोमकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २५५. साइज १०।।×४ इञ्च । श्लोक प्रमाण ५०००. (पांच हजार) । रचना संवत १०२३. लिपि संवत् १७१०.

प्रति नं० २. पत्र संख्या २७१. साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २५-३० अक्षर । लिपि संवत १८२८. ग्रन्थ में श्रीकृष्ण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध आदि महापुरुषों का वर्णन किया है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ११७. साइज १०।।×४।। इञ्च । पत्र संख्या ११७. लिपिसंवत् १५७७. लाखहरी नगर में पंडि गूजर ने प्रतिलिपि करवाई ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ११५. साइज १०।।×४।। इञ्च । लिपि संवत् १५७७. लाखपुरी में बघेरवाल जाति में उत्पन्न श्री घीहल ने प्रतिलिपि करवाई ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १६३. साइज १०।।×४।। इञ्च ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १७५. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत १५८७. भट्टारक श्री गुणभद्र के समय में अग्रवालवंशोत्पन्न चौधरी चूहडु ने वाई तोल्ही के उपदेश से जिनदास के द्वारा प्रतिलिपि कराई।

प्रति नं० ७ पत्र संख्या १५२. साइज ११×४।। इञ्च। लिपि संवत्।...

प्रद्युम्नचरित्र।

रचयिता—महाकवि श्री सिंह। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १०... साइज १०×६ इञ्च। लिपिसंवत् १५५३. ग्रन्थ समाप्त होने पर कवि ने अपना परिचय दिया है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १७१. साइज ११×४।। इञ्च। लिपि काल-संवत् १५६५ भाद्रपद सुदी १३. कितने ही पृष्ठ एक दूसरे से चिप गये हैं।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १०७. साइज १०।।×५ इञ्च। लिपि संवत् १५४१ श्रावण बुदि २.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १३४. साइज ११×४।। इञ्च। लिपि संवत् १५६८ असाढ सुदी ५.

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ६५. साइज ११×४।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४४-४८ अक्षर। लिपिकाल-संवत् १५१८ जेठ सुदी ६ लिपि स्थान श्री नंणवाहपत्तन।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १०५. साइज १०×४ इञ्च। संवत् १६७३ वर्षे ज्येष्ठ वदि त्रयोदशी शुक्रवारे श्री रतलाम नगरे श्री अमृतचन्द्र तत् शिष्य गोपालेनालेखि।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या १३६. साइज १०×४।। इञ्च। लिपि संवत् १७२४. लिपिस्थान सुलानपुर (मालवदेश)।

प्रद्युम्न प्रबंध।

रचयिता श्री देवेन्द्रकीर्त्ति। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३७. साइज १०।।×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर। रचना संवत् १७२२.

प्रद्युम्न रासो।

रचयिता श्री ब्रह्म रायमल्ल। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८. साइज १२×५. सम्पूर्ण पद्य संख्या १९५. रचना संवत् १६२८. लिपि संवत् १८२०.

प्रभावती कल्प।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ५. साइज ११।।×४।। इञ्च। विषय—आयुर्वेद।

प्रबोधचन्द्रोदय ।

रचयिता श्री कृष्णमिश्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७८. साइज ११×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८२६ भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति ने लिखा है ।

प्रमाणपरीक्षा ।

रचयिता श्रीमद् [illegible]नन्दि । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ४०. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १६५४.

प्रमाणनयतत्त्वालंकार ।

रचयिता श्री देवाचार्य । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ७. साइज ६×४॥ इञ्च । विषय—न्याय । प्रति सटीक है ।

प्रमाण मीमांसा ।

रचयिता आचार्य हेमचन्द्र । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ३६. साइज ११॥×४ इञ्च । विषय—न्याय । प्रति अपूर्ण है । ३६ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रवचनसार ।

रचयिता आचार्य श्री कुन्दकुन्द । भाषा प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी । पत्र संख्या ४४. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७२७. लिपिस्थान रामपुर । पंडित विहारीदास ने पढने के लिये दीनानाथ से प्रतिलिपि करवाई । मूल ग्रन्थ का उलथा संस्कृत में है तथा गाथाओं का परिचय हिन्दी में दिया हुआ है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३६. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १७०६. पं० मनोहरलाल ने पढने के लिये प्रतिलिपि बनायी ।

प्रति नं० ३. सटीक । टीकाकार श्री प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र संख्या ७७. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १५७७. लिपिस्थान नागपुर । भट्टारक श्री धर्मचन्द्र को भेंट करने के लिये लिपि तैयार की गई । टीका संस्कृत में है । टीका का नाम प्रवचनसार प्राभृत टीका हैं ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ७७. साइज ११×४॥ इञ्च । ७७ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रवचनसार भाषा ।

मूलकर्त्ता आचार्य श्री कुन्दकुन्द । भाषाकार पं० जोधराज गोदीका । भाषा प्राकृत-हिन्दी । पत्र संख्या ७२. साइज १०॥×४॥ इञ्च । भाषा रचना संवत् १७२६. लिपि संवत् १८४६.

प्रवचनसार भाषा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ६१. साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०–३८ अक्षर । प्रति अपूर्ण है । ६१ से आगे के पृष्ठ नहीं है । ग्रन्थ के कुछ भाग में दीपक लग जाने से ग्रन्थ का कुछ भाग नष्ट होगया है।

मंगलाचरण—

स्वयं सिद्ध करतार करै निज करम सरम निधि ।
आपै करण सुरूप होई साधन साधै विधि ॥
संप्रदानता घरै आपकौ आप समपै ।
अपादान आपतै आपको करि थिर थपै ॥
अधिकरण होई आधार निज वरतै पूर्ण ब्रह्म पर ।
षट् विधि कारक मय विधि रहित विविध एक विधि अज अमर ॥१॥

प्रवचनसार प्राभृतटीका ।

टीकाकार अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १८२. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२–३६ अक्षर । लिपि संवत् १५४३. उक्त टीका मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्ति के शिष्य श्री विमलकीर्त्ति को भेंट स्वरूप प्रदान की गयी । लिपिकार पं० गोगा ।

प्रस्ताविक लोक चर्चा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७६. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । अन्तिम पृष्ठ नहीं है । प्रारम्भ में ५४ पद्य नहीं है । ग्रन्थ ५५ वें पद्य से शुद्ध किया गया है । ग्रन्थ बहुत प्राचीन मालूम होता है ।

प्रशस्त भाष्य ।

रचयिता श्री प्रशस्त देवाचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७. साइज १०×४॥ इञ्च । केवल द्रव्य पदार्थ का वर्णन है ।

प्रश्नोत्तरश्रावकाचार ।

रचयिता–भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४६. साइज ११॥×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में २१–२५ अक्षर । लिपि संवत् १८४४. लिपिस्थान इन्द्रावती नगरी । प्रशस्ति है ।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या १०६. साइज १२×५॥ इञ्च ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १४८. साइज १०॥×४॥. प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३६–४० अक्षर। लिपि संवत् १८५६. ग्रन्थ में श्रावकों के पालने योग्य आचार और नियम सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर दिया गया है। उत्तर को कथाओं के द्वारा भी समझाया गया है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ८३. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रथम पृष्ठ और ८३ से आगे के पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या २४. साइज १०॥×५ इञ्च। केवल ४ परिच्छेद ही हैं।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १४४. साइज ११॥×५॥.

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ११. साइज १२×५ इञ्च।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ६३. साइज १२×४ इञ्च। लिपि संवत् १८१८.

प्रश्नोत्तरोपासकाचार।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति व भट्टारक पद्मनन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६३. साइज १०॥×४॥ इञ्च। विषय–पंचाणुव्रत, की पांच कथायें, सम्यक्त्व की ८ कथायें। सम्यक्त्व की ८ कथायें भट्टारक पद्मनन्दि द्वारा रचित है। प्रथम पृष्ठ नहीं है। प्रति स्पष्ट और सुन्दर है किन्तु अन्त के पन्ने दीमक ने खा रखे हैं।

प्रज्ञापनोपांगपद संग्रह।

संग्रहकर्त्ता श्री अभय देवसूरि। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ५. गाथा-संख्या १३३.

पाकसंग्रह।

संग्रहकर्त्ता श्री पं० दयाराम। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १२. साइज १५॥×५॥ इञ्च। विषय–आयुर्वेद।

पाण्डवपुराण।

रचयिता भट्टारक श्री यशःकीर्त्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४७५. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३४–३८ अक्षर। लिपि संवत् १६०२.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३४७ साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १८३१. लिपि स्थान कोटा। प्रति नवीन है लेकिन १२३ पृष्ठ तक दीमक ने खा लिया है। लिपि में कवि के समय का पद्य नहीं दिया हुआ है।

पाण्डवपुराण।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २८०. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक

पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४२-४६ अक्षर। रचनाकाल संवत १६०८.

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ६१. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है तथा जीर्ण शीर्ण अवस्था में है। कितने ही पृष्ठ फट गये है तथा कितने ही एक दूसरे से चिपक गये हैं।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ३२६. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १७२१.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ३४७. साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३६-४४ अक्षर। लिपिसंवत् १६३६ लिपिस्थान निवाई (जयपुर) ३४७ वां पृष्ठ फटा हुआ है। लिपि सुन्दर एवं स्पष्ट है।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ४७१. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १६१६. लिपि स्थान आमेर। मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्ति के शासनकाल में खंडेलवालान्वय श्री तेजा ने दशलक्षणव्रतोद्यापन के समय में ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई। प्रति लि० स्पष्ट और सुन्दर हैं।

पार्श्वनाथ चरित्र।

रचयिता महाकवि पद्मकीर्त्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १०८. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में ३५-४५ अक्षर। लिपि संवत् १४६४.

पार्श्वनाथ चरित्र।

रचयिता पंडित श्रीधर। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६६. साइज ध॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में ३८-४५ अक्षर। लिपि संवत् १५७७

प्राकृतकथा कौमुदी।

रचयिता मुनि श्री श्रीचंद। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ३१. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर। प्रति अपूर्ण है। प्रथम पृष्ठ तथा ३१ से आगे के पृष्ठ नहीं है। ग्रन्थ के एक भाग को दीमक ने खा लिया है।

प्राकृत छंद कोष।

भाषा प्राकृत पत्र संख्या ६. साइज १०॥×५॥ इञ्च। गाथा संख्या ७७.

प्राकृत व्याकरण।

रचयिता श्री वरदराज। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या २२. साइज १२॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७१७.

प्रायश्चित शास्त्र ।

रचयिता श्री नन्दिगुरु । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२७, साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३६ अक्षर । पद्यों की टीका भी दी हुई है ।

प्रीतिंकर चरित्र ।

रचयिता ब्रह्मनेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७, साइज ६||×५|| प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३३-३८ अक्षर । विषय—प्रीतिंकर महामुनि का चरित्र ।

पार्श्वनाथ पुराण ।

रचयिता महाकवि पद्मकीर्ति । भाषा अपभ्रंश । साइज १०||×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३२-३८ अक्षर । लिपि संवत् १६१०, लिपिस्थान शेरपुर ।

पार्श्वनाथ पुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । पत्र संख्या १११, भाषा संस्कृत । साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३४-४० अक्षर । लिपि संवत् १८३६, लिपिस्थान सवाई माधोपुर ।

प्रति नं० २, पत्र संख्या ८८, साइज १२||×५|| इञ्च । लिपि संवत् १८२३, लिपिस्थान जयपुर । लिपिकर्त्ता श्री जयरामदास ।

पार्श्वनाथ पुराण ।

रचियता पं० भूधरदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६१, साइज १०||×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४०-४६ अक्षर । रचना संवत् १७४२,

पार्श्वनाथ महावीर पूजा ।

रचयिता श्री रामचन्द्र । भाषा हिन्दी । पृष्ठ संख्या ६, साइज ११×५|| इञ्च । लिपि संवत् १८६८, लिपिकर्त्ता—नंदराम कासलीवाल ।

पार्श्वनाथ स्तोत्र ।

रचयिता मुनि श्री पद्मनन्दि । भाषा संस्कृत । प्रति सटीक है । टीकाकार—अज्ञात । पत्र संख्या ३, पद्य संख्या ६, लिपि संवत् १६७१,

पार्श्वनाथ स्तोत्र ।

सटीक रचयिता—अज्ञात । टीकाकार अज्ञात । यमकबंध । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १, साइज

१०×४॥ इञ्च। पद्य संख्या ७.

पार्श्वनाथ स्तवन।

रचयिता अज्ञात भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १ साइज १०॥×४॥ इञ्च। यमक बंध पार्श्वनाथ स्तवन है। प्रति सटीक है।

पार्श्वनाथस्तोत्र।

रचयिता श्री पद्मप्रभुदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १. साइज ११×५ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १. साइज ११॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपिकर्त्ता हरेन्दुनाथ।

पार्श्वनाथ स्तोत्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७. साइज ११×५॥ इञ्च। प्रति शुद्ध और स्पष्ट है। पद्य संख्या ३३. इसके पहिले भक्तमर स्तोत्र भी है।

पार्श्वनाथ समस्या स्तोत्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४. साइज ११×४॥ इञ्च।

पाशा केवली।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १३. साइज १०×४॥ इञ्च। विषय-केवली भगवान की स्तुति। लिपिकाल संवत् १८३६; लिपिकर्त्ता पंडित रूपचन्द्र। लिपिस्थान-कोटा।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०. साइज १०×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४०. साइज ८॥×४ इञ्च। लिपि संवत् १८१०. लिपिस्थान जयपुर।

प्रति नं० ४. पृष्ठ संख्या ५. साइज ११×५ इञ्च।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १३. साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत् १८३६. लिपिकर्त्ता पं० रूपचन्द्र।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १०×४ इञ्च।

प्रति नं० ७. लिपिकार पंडित विजयराम। पत्र संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८७३.

प्रति नं० ८. भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४. लिपि संवत् १७७६. लिपिस्थान आमेर। लिपिकार दयाराम सोनी।

पिंगलछंदशास्त्र ।

रचयिता अज्ञात । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ७. साइज १२×६ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

पुण्यश्रव कथाकोश ।

रचयिता श्री रामचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५६ साइज ६॥×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४२ अक्षर । ५२ कथाओं का संग्रह है ।

पुण्याश्रवकथाकोष ।

रचयिता पं० जयचन्द्रजी । भाषा हिन्दी (गद्य) । पत्र संख्या ३०. साइज १२×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ३६-४२ अक्षर । प्रति अपूर्ण है । ३० पृष्ठ से आगे के पृष्ठ नहीं है ।

पुराणसार संग्रह ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०६. साइज १२॥×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४५-५२ अक्षर । लिपि संवत् १८२२. दो प्रशस्तियां हैं । ग्रन्थ गद्य में है । इससे इसका महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२१. साइज ११॥×५ इञ्च । प्रतिलिपि संवत् १५५१. प्रति जीर्णशीर्ण हो चुकी है । प्रारम्भ के दो पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १२१. साइज ११॥×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १५५१. लिपिस्थान हूंगरपुर ।

पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय ।

रचयिता श्री अमृतचन्द्रसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रति मूल मात्र है ।

पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापनपूजा ।

रचयिता श्री गंगादास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७. साइज ६॥×५ इञ्च ।

पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन ।

रचयिता पंडित श्री गंगादास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५. साइज ८×५ इञ्च । लिपि संवत् १८६६. प्रथम दो पृष्ठ नहीं है ।

पूजासार।

रचयिता: अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १९. साइज १०||×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६—४२ अक्षर।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ७५. साइज ११||×५ इञ्च। लिपि संवत् १५६५. अनेक पूजाओं का संग्रह है।

पूजापाठसंग्रह।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी संस्कृत। पत्र २१६. साइज १२×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३७-४२ अक्षर। लिपिसंवत् १६७६. लिपिस्थान कोटा (स्टेट) ग्रन्थ जिनवाणी संग्रह की तरह है। पूजायें, स्तोत्र, पाठ आदि दैनिक जीवन में काम आने वाले तथा अन्य सामग्री दी हुई है।

फ

फलादेश।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या ६. भाषा संस्कृत। साइज १०×४|| इञ्च। विषय—ज्योतिष। प्रति अपूर्ण। आगे के पृष्ठ नहीं है।

ब

ब्रह्मविलास।

रचयिता श्री भगवतीदास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ८. साइज ११||×५|| इञ्च। रचना संवत् १७३२. प्रति अपूर्ण। ८ से आगे के पृष्ठ नहीं।

बलभद्रपुराण।

ग्रन्थकार पंडित रइधू। साइज ७×४ इञ्च। पत्र संख्या १६७. प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ९७—२१ अक्षर हैं। प्रारम्भ के ४० पत्र कुछ २ फटे हुये हैं लेकिन अन्य भाग सुरक्षित है। प्रतिलिपि काल सं० १६५६. भाषा अपभ्रंश। विषय—श्री रामचन्द्र लक्ष्मण आदि महापुरुषों का जीवन चरित्र। सम्पूर्ण ग्रंथ में ११ परिच्छेद हैं। ग्रन्थ के अन्त में प्रशस्ति दी हुई है। जिससे मालूम होता है कि आचार्य गुणचन्द्र के शिष्य बाई सुहागो के समय में रूहितग के रहने वाले खिउपाल के पुत्र अगरमल्ल ने इस को लिखवाया था।

बालबोध ।

कर्त्ता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ११ । साइज ६॥×४ इञ्च । विषय ज्योतिष ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३८. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण । प्रथम पत्र और ३८ से आगे के पृष्ठ नहीं है ।

बालबोधक ।

रचयिता श्रीमत् मुंजादित्यविम । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५७. साइज ८॥×४ इञ्च । विषय—ज्योतिष । लिपि संवत् १७८०. प्रति अपूर्ण—४३ से ४५ तक के पृष्ठ नहीं हैं । ग्रन्थ के अन्त में उस समय (१७८०) का अनाज का भाव भी दिया हुआ है । वह इस प्रकार है—गेहूँ १) चणा ॥५ जौ ॥३ मसूर ॥) बाजरा ॥४ उड़द ॥२ मौठ ॥३ ज्वार ।६ घी ऽ२॥ तेल ऽ४ गुड़ ।१ शक्कर ३ऽ टके २६। पके १).

बालबोधज्योतिषशास्त्र ।

रचयिता मुजादित्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २०. साइज ६॥×६ इञ्च । लिपि संवत् १८०८.

प्रति नं० २. पत्र संख्या २० साइज ६×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८०८. लिपिकर्त्ता श्री नाथूराम शर्मा ।

बाशिठिया बोलरो स्तवन ।

रचयिता श्री कान्तिसागर । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १४. साइज ८×४ इञ्च । रचना संवत् १७८३. सम्पूर्ण पद्य संख्या १७६.

बाहुबलि चरित्र ।

ग्रन्थकर्त्ता श्री धनपाल । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या २७०. प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३३ से ३७ अक्षर । ग्रन्थ साधारण अवस्था में हैं । कितने ही स्थलों पर लाल पेन्सिल फेर दी गयी है । प्रतिलिपि संवत् १४८६ वैसाख सुदी ७ बुधवार । ग्रन्थ के अन्त में स्वयं कवि ने अपना परिचय दिया है । ग्रन्थ की प्रतिलिपि भट्टारक श्री प्रभाचन्द्र के समय में हुई थी । परिच्छेद १८.

प्रति नं० २. पत्र संख्या २३७. प्रारम्भ के १३७ पत्र नहीं है । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८–४५ अक्षर । १३८ से १७० तक के पत्र जीर्ण है । कहीं कहीं फट भी गये है । कागज अच्छा नहीं है । अक्षर अधिक सुन्दर नहीं है लेकिन अभी तक साफ हैं । सम्पूर्ण ग्रन्थ में १८ परिच्छेद हैं । दो चार जगह संस्कृत के श्लोक भी हैं । ग्रन्थ के अन्त में स्वयं कवि ने भी एक विस्तृत प्रशास्ति लिख दी है जिससे कवि का वंश और समय जाना जा सकता है । प्रतिलिपि संवत् १५८४ आसोज बुदी ६ बुधवार है । आचार्य प्रभाचन्द्र के समय में बघेरवाल वंशोत्पन्न श्री माधो ने ग्रन्थ की प्रति लिपि करवाई थी ।

विहारी सतसई।

रचयिता महाकवि विहारी। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४३. साइज ६×४॥ इञ्च। लिपिस्थान कटक।

भ

भगवद्गीता।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४७. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७२६.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५४. साइज ६॥×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १५७ साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

भगवती आराधना।

रचयिता आ० शिवकोटि। भाषा प्राकृत-संस्कृत। पत्र संख्या ३६७. साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४२ अक्षर। लिपिकाल-चैत्र बुदि ११ संवत् १५१४.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११०. साइज ११॥×५ इञ्च।

भगवती आराधना सटीक।

रचयिता श्री शिवाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४१८. साइज १३×५॥। इञ्च। लिपि संवत् १७६०. ग्रन्थ सटीक है। टीकाकार श्री अपराजित सूरि। टीका नाम विजयोदया।

भक्तामर स्तोत्र भाषा।

रचयिता श्रीनथमल विलाला और लालचन्द। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ७१. साइज १०×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६-३२ अक्षर। रचना संवत् १८१८. लिपि संवत् १८५३.

भक्तामर स्तोत्र।

रचयिता श्री मानतुंगाचार्य। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ४.

प्रति नं० २. पत्र संख्या २४. साइज १०×५ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार ने अपना नाम नहीं दिया है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १५. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रति सटीक है। किन्तु पूर्व टीका से यह टीका भिन्न है। टीकाकार अज्ञात है। प्रति अपूर्ण है। प्रथम २ पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ५. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रति सटीक है लेकिन अपूर्ण है।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १६. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति सटीक है। अर्थ हिन्दी में है। भाषा बहुत अशुद्ध और टूटी फूटी है इसलिये प्रति की भाषा प्राचीन मालूम देती है।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या २८. साइज १०॥×४ इञ्च। प्रति सटीक है। टीका संस्कृत में है और विशद हैं। लिपि संवत् १६५४. लिपि स्थान सारूंडानगर।

प्रति नं० ७ पत्र संख्या १८. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति सटीक है। टीका संस्कृत में है। लिपि संवत् १६३६. लिपिकार श्री पूरणमल कायस्थ। श्री केशवदास के पढने के लिये उक्त स्तोत्र की प्रतिलिपि की गयी थी।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ५३. साइज १०॥×५ इञ्च। मूल पद्यों के अतिरिक्त प्रत्येक पद्य पर कथा भी संस्कृत में दी हुई है। टीकाकार तथा कथा लेखक ब्रह्म श्री रायमल्ल हैं। लिपि संवत् १८०५.

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १६. साइज ११॥×५ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार वर्णी रायमल्ल। टीका काल-संवत् १६६७. लिपिसंवत् १७५२. अन्त में टीकाकार ने अपना संक्षिप्त परिचय भी दे रखा है। लिपिस्थान संग्रामपुर है।

प्रति नं० १० पत्र संख्या ३५. साइज १०×५ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार वर्णीरायमल्ल। लिपि कालसंवत् १६६८.

प्रति नं० ११. पत्र संख्या ५. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार श्री अमरमलसूरि। लिपि बहुत बारीक है।

प्रति नं० १२. पत्र संख्या ५. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पद्य का उसी के ऊपर हिन्दी में अनुवाद दे रखा है लेकिन वह स्पष्ट नहीं है।

प्रति नं० १३. पत्र संख्या ६. साइज १२×४ इञ्च। लिपि संवत् १७२२.

भवनदीपक।

रचयिता पद्मप्रभसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज ६×५ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १३. साइज १०×४॥ इञ्च लिपि संवत् १६७२.

भर्तृहरिशतक।

रचयिता श्री भर्तृहरिशात। टीकाकार अज्ञात। भाषा संस्कृत गद्य-पद्य। पत्र संख्या ३२. साइज

१०॥×४॥ इञ्च। विषय–नीति शृंगार और वैराग्य शतक। ग्रन्थ अपूर्ण ३३ पृष्ठ से आगे नहीं है।

भविष्यदत्त कथा।

रचयिता ब्रह्मराइमल्ल। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ६६. साइज ८॥×६ इञ्च। रचना संवत् १६३३. लिपि संवत् १७१६.

भविष्यदत्तचरित्र।

रचयिता पंडित श्रीधर। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ६८. साइज १०॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८–४४ अक्षर।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ६४. साइज ११॥×६ इञ्च। लिपि संवत नहीं है।

भविष्यदत्त चरित्र।

रचयिता पं० श्रीधर। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ६०. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८.४४. अक्षर। लिपि संवत् १५५५. मध्य के ३२ से ३६ तक के पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६१. साइज ६×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। ६१. आगे के पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६८. साइज १०॥×५ इञ्च।

भविष्यदत्त चरित्र।

रचयिता धनपाल। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १०७. साइज १०॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८–४४ अक्षर। लिपि संवत् १५६४.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६४. साइज ११×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण और जीर्ण शीर्ण है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६७. साइज ११×६ इञ्च। शास्ति नहीं है। प्रति प्राचीन मालूम देती है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ६७. साइज १०॥×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १०८. साइज १०×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १५८८ मंगसिर सुदी ५.

प्रति नं० पत्र संख्या १६७. साइज ११×५ इञ्च। प्रतिलिपि संवत् १६६५. लिपिस्थान मोजमाबाद।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या १७१. साइज ११×५॥ इञ्च। अपूर्ण। प्रति बहुत प्राचीन दिखाई देती है।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ११५. साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत् १५४० आसोज बुदी १२ शनिवार। लिपि मुनि श्री रत्नकीर्त्ति के पढने के लिये बलराज ने लिखवाई थी।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १४६. साइज १०×५ इञ्च। लिपि संवत् १५८६. मंगसिर बुदी २. राव श्री जगमल के राज्य में आचार्य श्री धर्मचन्द्र के समय में अजमेर शहर में इसकी प्रतिलिपि हुई थी।

प्रति नं० १०. पत्र संख्या १४७. साइज ६।।×५।। इञ्च। अपूर्ण।

प्रति नं० ११. पत्र संख्या १४० साइज १०×५ इञ्च। लिपिकाल—संवत् १५८२.

भाद्रपदपूजासंग्रह।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात। पत्र संख्या ६१. साइज १०×४।। इञ्च। अनेक पूजाओं का संग्रह है। प्रति अपूर्ण है।

भामिनिविलास।

रचयिता श्री पं० जगन्नाथ। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २०. साइज ११×५।। इञ्च। विषय—शृंगाररस।

भावचक्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १. साइज १०।।×४।। इञ्च। ज्योतिष का हिसाब है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १. साइज १०×४ इञ्च। विषय—ज्योतिष।

भावनासारसंग्रह।

रचयिता श्री चामुंडराय महाराज। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८१. साइज ६।।×३।।। इञ्च। लिपि संवत् १५४१. लिपि स्थान हिसार। प्रथम पृष्ठ नहीं है।

भावसंग्रह।

रचयिता मुनि श्री नेमिचन्द्र। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या १६. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १७३३. लिपिकर्त्ता ब्र० जिनदास।

भावसंग्रह।

रचयिता श्री श्रुतमुनि। भाषा अपभ्रंश पत्र संख्या ६. साइज १०×४ इञ्च।

भावसंग्रह।

रचयिता पंडित वामदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३६. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६-३२ अक्षर। विषय—गुणस्थान चर्चा।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३५. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४–३८ अक्षर। लिपि संवत् १५४१. प्रथम पृष्ठ नहीं है। ग्रन्थ साधारण अवस्था में है। गुणस्थान तथा षोडशकारण भावनाओं का वर्णन दिया हुआ।

भावषट्त्रिंशिका।

रचयिता श्री सारंग। भाषा संस्कृत-हिन्दी। पत्र संख्या ७. साइज १२×६ इञ्च।

भावशतक।

श्री नागराज। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८. साइज ११॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६–४४ अक्षर।

भावत्रिभंगी।

रचयिता नेमिचन्द्राचार्य। पत्र संख्या १६४. साइज ११॥×६ इञ्च। विषय–गुणस्थानों का १४ मार्गणाओं की अपेक्षा से सविस्तार वर्णन।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या २४. साइज ११॥।×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

भावत्रिभंगी सटीक।

रचयिता श्री नेमिचन्द्राचार्य। भाषा प्राकृत। टीकाकार श्री सोमदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३५. साइज १०॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर २० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४८–५४ अक्षर।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २१. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १५०६. केवल मात्र है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४३. साइज १०॥×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रथम १५ पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १६. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ४२. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८३१.

भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र।

रचयिता पं० आशाधर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १७. साइज १०×४ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार अज्ञात है।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ५. साइज ११×५॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ५. साइज १२×५ इञ्च।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १४. साइज ११॥×४॥ इञ्च। प्रति सटीक है। इसमें विषापहार स्तोत्र भी है।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ४. साइज ११।।×४ इञ्च।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ४. साइज ११×५ इञ्च।

भोजप्रबंध।

रचयिता रत्नमंदिरगणि। भाषा संस्कृत। पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४२-४८ अक्षर। रचना संवत् १५१७. लिपि संवत् १८०.

म

मदन जयमाल।

रचयिता श्री सुमति सागर। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २. साइज १०।।×४।। इञ्च।

मदनपराजय।

हरिदेव विरचित। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या २३. साइज ६।।×४।। इञ्च। प्रतिलिपि संवत् १५७६. प्रति अपूर्ण है।

मदनपराजय।

रचयिता श्री जिनदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३७. साइज ११×५।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४२-४८ अक्षर। परिच्छेद पांच हैं। कथा गद्य पद्य दोनों में ही है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५३. साइज १०।।×५ इञ्च। प्रति लिपि संवत् १५१०.

मध्यसिद्धान्तकौमुदी।

रचयिता श्री वरदराज। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६५. साइज १२×६ इञ्च। लिपि संवत् १८४६ लिपिस्थान टोंक।

मल्लिनाथ चरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५३. साइज १२×५।। इञ्च। लिपि-काल-संवत् १६३६. विषय—भगवान मल्लिनाथ का जीवन चरित्र।

मल्लिनाथचरित्र।

रचयिता श्री जयमित्रहल। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२१. साइज १०×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण।

महादेवी सूत्र ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११. साइज १०×४॥ इञ्च । विषय—गणित ज्योतिष ।

महापुराणसंग्रह भाषा ।

भाषा कर्त्ता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १६३. साइज ११॥×५॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है. प्रारम्भ १३८तथा अन्त के १६३ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं । गुणभद्राचार्य कृत महापुराण की भाषा है ।

महानाटक ।

रचयिता श्री हनुमान । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८५. साइज १०॥×४ इञ्च । लिपि संवत् १७२८.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११०. साइज ११×६ इञ्च । लिपि संवत् १७१५.

महापुराण ।

रचयिता महाकवि पुष्पदन्त । भाषा अपभ्रंश । साइज १०॥×५ इञ्च । पत्र संख्या ४१३ । इसमे आगे के पृष्ठ नहीं हैं । प्रति नवीन है । आदिपुराण मात्र है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या २७८. साइज १०॥×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण । केवल १०७ से २७८ तक के पृष्ठ हैं ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २७१. साइज १०।×५॥ इञ्च । १४६ से आगे के पृष्ठ हैं । लिपिसंवत १५६४.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या २८६. साइज १०×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ३६८. साइज १२×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४४–५२ अक्षर । संधि १०२. प्रतिलिपि संवत् १३६१ जेठ बुदी ६. उत्तरपुराण की प्रति है ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ३५०. साइज १३×६ इञ्च । प्रति लिपि अपूर्ण । ३५० पृष्ठ से आगे नहीं है ।

महापुराण ।

रचयिता श्री गुणभद्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६२. साइज १२×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४१–४६ अक्षर । लिपि संवत् १७८४. लिपिकार श्री जसवीर ने महाराजा रामसिंह के नाम का उल्लेख किया है । विषय—६३ शलाकाओं को महापुरुषों का वर्णन । ग्रन्थ के अन्त में विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४६४. साइज ११×५ इञ्च । प्रति जीर्णशीर्ण है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २६१. साइज १०×५॥ इञ्च । प्रति नवीन है । अन्तिम कुछ पृष्ठ नहीं हैं । लिपि संवत् १८४६.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ३७६. ग्रन्थ जीर्णशीर्ण है। ३६ से २१७ तक पत्र नहीं है।

महापुराणटिप्पण।

व्याख्याकर्त्ता—अज्ञात। भाषा—अपभ्रंश-संस्कृत। पत्र संख्या १०६. साइज १२×४॥ इञ्च। प्रति प्राचीन शुद्ध और स्पष्ट है। प्रति अपूर्ण है। अपभ्रंश से संस्कृत में टीका की हुई है।

महावीर द्वात्रिंशिका।

रचयिता श्री भट्टारक सुदरेकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २. साइज १२×५॥ इञ्च। भगवान महावीर की स्तुति की गयी है। प्रति अशुद्ध है।

महीपाल चरित्र।

ग्रन्थकर्त्ता श्री चारित्र सुन्दरगणि। पत्र संख्या ३३. साइज ७×३॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४७ से ५५ अक्षर। भाषा संस्कृत। लिपि संवत् १८२५. पांच सर्ग। ग्रन्थ के अन्त में स्वयं कवि ने भट्टारक परम्परा का वर्णन दिया है। कवि ने अपने को भट्टारक श्री रत्नसिंहसूरि का शिष्य लिखा है। ग्रन्थ के कागज और अक्षर दोनों अच्छे हैं।

माणिक्य कल्प।

रचयिता श्वेताम्बराचार्य श्री मानतुंग। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत् १६४०. पद्य संख्या ५६.

माधवानल कथा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०. साइज १३×५ इञ्च। लिपि संवत् १८३८. लिपिकार भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति।

माधवनिदान

रचयिता श्री माधव। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ६६. साइज ८॥×५॥ इञ्च।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ८२. साइज १०×६ इञ्च। लिपि संवत् १६५७. लिपि स्थान मालपुरा। प्रति अपूर्ण है।

मानमञ्जरी नाममाला।

रचयिता श्री नन्ददास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ११ साइज १२×५ इञ्च। पद्य संख्या ३०४. लिपि संवत् १८३६. भट्टारक श्री सुरेन्द्र कीर्त्ति ने प्रतिलिपि बनवाई।

मुग्धावबोधन ।

रचयिता श्री कुलमंडन सूरि । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १०. साइज १०×४ इञ्च । विषय—व्याकरण ।

मुद्राराक्षस ।

रचयिता श्री विशाखदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४०. विषय—नाटक ।

मुनिसुव्रत पुराण ।

रचयिता ब्रह्मचारी कृष्णदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११५. साइज १२×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४२–४६ अक्षर । रचना संवत् १६८१. लिपि संवत् १८५०. ग्रन्थ में मुनिसुव्रत नाथ का जीवन चरित्र वर्णित है ।

मुनिसुव्रत पुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६८. साइज ११॥×६ इञ्च । ग्रन्थ अपूर्ण है । उक्त पुराण में मुनिसुव्रत नाथ के संक्षिप्त जीवन चरित्र के पश्चात् न्याय शास्त्र का विस्तृत वर्णन दिया हुआ है । लेकिन प्रति में चार्वाक मत के खंडन तक के ही पृष्ठ हैं ।

मुहूर्त्त चिंतामणि ।

रचयिता श्री दैवज्ञराम । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४४. साइज १०।।×४।। इञ्च । लिपिसंवत् १८५१. लिपिकर्त्ता बाबाजी दानविमलजी ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७७. साइज ११॥×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १३. साइज १२×५॥ इञ्च ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ८. साइज १२×५॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ७. साइज १०॥×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण ।

मुहूर्तमुक्तावली ।

रचयिता श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६. साइज १०×५ इञ्च । विषय—ज्योतिष ।

मूलाचार ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६६. साइज ११×५ इञ्च । पद्य संख्या ३३५६. लिपि संवत् १८६६. लिपिस्थान जयपुर ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६१. साइज १२×६ इञ्च। प्रति जीर्ण शीर्ण है। दीमक ने बहुत पृष्ठों को खा लिया है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १७७. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

मेघदूत।

रचयिता-महाकवि कालिदास। टीकाकार श्री लक्ष्मी निवास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २९. साइज १०×४ इञ्च। इस प्रति के अतिरिक्त १२ प्रतियां और हैं।

मेघमालाव्रतोद्यापन पूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २. साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपिसंवत् १८३६. लिपिकार भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति। लिपिस्थान माधोपुर (जयपुर)।

मेघमालाव्रताख्यानक।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या ६. साइज १०×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २२-२६ अक्षर।

मेघेश्वर चरित्र।

ग्रन्थकर्त्ता श्री पंडित रयधू। साइज ७×३ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३१-३५ अक्षर। पत्र संख्या १७३. प्रारम्भ के २१ पृष्ठ नहीं हैं। ग्रन्थ जीर्ण है पर अधिक नहीं। प्रतिलिपि संवत् १५६६. भाषा अपभ्रंश। १३ परिच्छेद है। ग्रन्थ के अन्त भाग में एक अधूरी प्रशस्ति दी हुई है जिससे केवल भट्टारक गुणभद्र का नाम तथा ग्रन्थ लिखवाने वाले के वंश का नाम ही मालूम हो सकता है।

प्रति नं० २. साइज ७×३॥ इञ्च। पत्र संख्या १५६. लिपिकाल संवत् १६१६. पत्र जीर्ण प्रायः हैं। बहुत से पत्रों के कितने ही अक्षर स्याही फिरने के कारण पढ़ने में नहीं आते। प्रारम्भ के ५ पत्रों का कुछ भाग दीमक ने खा लिया है। प्रशस्ति अधूरी है।

मेदनी कोष।

रचयिता श्री मेदनी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११२. साइज ६×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ३५-४० अक्षर।

मृगांक चरित्र।

रचयिता पं० भगवतीदास। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ७४. साइज ११×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर

१० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३०–३५ अक्षर। लिपिसंवत् १७००. ।परिच्छेद ४. कागज मोटे हैं प्रशस्ति भी है।

मृगावती चरित्र।

रचयिता सकलचन्द्र। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३०. साइज १०×४ इञ्च। रचना संवत् १६२८. लिपि संवत् १६८७. लिपिस्थान मालपुरा।

य

यति क्रियाकलाप।

रचयिता श्री प्रभाचन्द्रदेव। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १२०. साइज १२×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४८–५४ अक्षर। लिपि संवत् १५७७. संघपति जगसी के पुत्र कल्याणमल ने ग्रंथ की प्रति लिपि करवाई।

मंगलाचरण—

जिनेन्द्रमुन्मीलितकर्म्मबंधं प्रणम्य सन्मार्गकृतस्वरूपं।
अनंतबोधादिभवं गुणौघं क्रियाकलाप प्रकटं प्रवक्ष्ये॥

अन्तिम पाठ—

श्रीमद् गौतम नमामि गणधरैर्लोकत्रयोद्योतकैः।
सव्यक्तसकलोद्यसौ यतिपतेर्यतिप्रभाचन्द्रतः ॥१॥

यंत्रराज ग्रंथ।

रचयिता श्री महेन्द्रसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४१. साइज १०॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १६६३. ग्रंथ सटीक है।

यंत्रराजागम।

रचयिता श्री मलयेंदुसूरि। भाषा संस्कृत। पृष्ठ-संख्या ३६. साइज १०॥×५ इञ्च। पांच सर्ग। लिपि संवत् १६५६. प्रथम तीन पृष्ठ नहीं हैं।

यशस्तिलक चम्पू।

रचयिता श्री सोमदेवसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २५६ साइज १३॥×६ इञ्च। रचना शक संवत् १०८८. लिपि संवत् १८६६.

यशोधर चरित्र ।

रचयिता पं० लिखमीदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ८७. साइज ११॥×४॥ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या ६०६. रचना संवत् १७८२. लिपि संवत् १७८४. लिपिस्थान आमेर (जयपुर ।

यशोधर रास ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या २५. साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति पर ३८–४४ अक्षर । लिपि संवत् १८२६.

यशोधर चरित्र ।

रचयिता श्री खुशालचन्द्र । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४६. साइज ११×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४६ अक्षर । रचना संवत् १७८१. लिपि संवत् १८०१.

यशोधर चरित्र ।

रचयिता आचार्य श्री ज्ञानकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६६. साइज ११॥×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३१–३५ अक्षर । लिपि संवत् १६६१.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३५. साइज ६॥×४। इञ्च । लिपि संवत् १६६१.

यशोधर चरित्र ।

रचयिता कायस्थ श्री पद्मनाभ । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ८६. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत १७६६.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३१. साइज ६॥×३॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ३६. साइज ६॥×४॥ इञ्च । ग्रन्थ समाप्ति के बाद प्रशस्ति दी हुई है ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ६६. साइज ६॥×४॥ इञ्च । प्रतिलिपि संवत् १५३८. ग्रंथ की प्रतिलिपि भट्टारक श्री जिनचंद्र के शिष्य सारंग ने पढने के लिये की थी ।

यशोधर चरित्र ।

रचयिता साह लोहट । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १३३. साइज ८×४॥ इञ्च । प्रारम्भ के ३१ पृष्ठ नहीं हैं । लिपि संवत् १८०३.

ग्रन्थकर्ता श्री पद्मनाथ तदनुसारेण साह लोहट दुम्यौसी गोत्र साह धर्मासुत बघेरवाल वासि

गढ बूंदीराज राव श्री भावसिंहजी विजैराजि।

यशोधरचरित्र।

रचयिता श्री पूर्णदेव। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ६. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८४४

यशोधर चरित्र।

रचयिता श्री विजयकीर्त्ति। भाषा संस्कृत (गद्य)। पत्र संख्या २६. साइज ११॥×५ इञ्च। ग्रंथ गद्य में है। कथा संक्षेप में दी हुई है। अतः पाठक शीघ्र ही समझ सकता है।

यशोधर चरित्र।

रचयिता सूरि श्री श्रुतसागर। पत्र संख्या ७३. साइज ११×४ इञ्च। भाषा संस्कृत।

यशोधर चरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकल कीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३६. साइज ११×५ इञ्च। श्लोक संख्या ६६०. लिपि संवत् १६४६. लिपिस्थान मालपुर। उक्त ग्रन्थ में यशोधर महाराज का जीवन दिया हुआ है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४७. साइज ११×५ इञ्च। उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि आचार्य ज्ञानकीर्त्ति के शिष्य पं० खेतसी के पढने के लिये की गयी थी।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७४. साइज १२॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६३०. ब्रह्मरायमल्ल इसके लिपिकर्त्ता हैं।

यशोधरचरित्र।

रचयिता महाकवि पुष्पदंत। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ६१. साइज ६॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २८-३४ अक्षर। लिपि संवत् १५८०. लिपिस्थान सिकन्दराबादा। प्रशस्ति नहीं है। कठिन शब्दों की संस्कृत में टीका दे रखी है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८६ साइज ६॥×५ इञ्च। लिपि काल संवत १५७५ मंगसिर सुदी ४. अन्त में प्रशस्ति दी हुई है लेकिन प्रारम्भ की तीन पंक्तियां बाद में मिटादी गई हैं।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७३. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपिकाल संवत् १६१०. प्रशस्ति दी हुई है। ग्रन्थ की प्रतिलिपि भट्टारक प्रभाचन्द्र के शिष्य धर्म्मचन्द्र के समय में हुई है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ६५. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत १६१२. उक्त प्रति श्री धर्म्मचन्द्र के

शिष्य श्री ललितकीर्त्ति के समय में साहू पूना तथा उनकी स्त्री याली ने लिखीवाई थी। पत्र कुछ गलने लग गये हैं।

प्रति नं ५. पत्र संख्या ६४. साइज १०×५ इञ्च। लिपि संवत् १५८०. प्रति लिपी भट्टारक प्रभाचन्द्र के समय में दोदू नामक खण्डेलवाल जैन ने करवाई थी।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ८२. साइज ११×५ इञ्च। लिपिसंवत् १६५७. प्रशस्ति नहीं है। ग्रन्थ का हांशिया दीमक ने खा लिया है।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ६१. साइज ११×६ इञ्च। लिपि संवत् नहीं है। प्रशस्ति नहीं है।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ५६. साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १७१५. प्रति लिपि आमेर के भट्टारक नरेन्द्र कीर्त्ति के शिष्य भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति ने करवाई।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ४३. साइज १२×५ इञ्च। ग्रन्थ बहुत कुछ जीर्णशीर्ण हो गया है।

योगचिंतामणि।

संग्रहकर्त्ता श्री हर्षकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ६०. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४४ अक्षर। विषय-आयुर्वेद।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३३. साइज १३×६॥ इञ्च। विषय-आयुर्वेद। ग्रंथ में पांच अधिकार हैं और वे अलग २ लेखक के लिखे हुये हैं।

योगप्रदीप।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ७. साइज १०॥×४॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १४१. विषय-योगशास्त्र।

योगीरासो।

रचयिता श्री ब्रह्मजिनदास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २. साइज १०×४ इञ्च। भगवान आदिनाथ की स्तुति की गयी है।

योगसार।

रचयिता श्री मुनि योगचन्द्र (योगीन्द्रदेव)। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६. साइज ११×४॥ इञ्च। गाथा संख्या १०८. लिपि संवत् १७१६. लिपिस्थान जयसिंहपुरा। लिपि कर्त्ता पंडित लक्ष्मीदास।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २०. साइज ११||×४|| इञ्च। इस प्रति में आराधनासार, तत्त्वसार तथा, धर्म पंचविंशतिका की गाथायें भी हैं। प्रारम्भ के तीन पृष्ठ नहीं हैं।

योगसार तत्त्वप्रदीपिका।

रचयिता आचार्य श्री अमितिगति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३६. साइज ६×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २५—२८ अक्षर। प्रथम पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३०. साइज ११||×५ इञ्च। लिपि संवत् १५८६. अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

योग शतक।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ८. साइज १३×४|| इञ्च। प्रति अपूर्ण। प्रथम और अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

योग शास्त्र।

मूलकर्त्ता—आचार्य श्री हेमचन्द्र। वृत्तिकार श्री अमरप्रभसूरि। केवल योग शास्त्र का चतुर्थ प्रकाश है। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४५. साइज १०||×४|| इञ्च। लिपिसंवत् १६३०.

र

रुग्विनिश्चय।

रचयिता श्री वैद्यराज माधव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८१. साइज १०||×४ इञ्च। विषय-वैद्यक। लिपि संवत १५७५. आजकल यह 'माधव निदान' के नाम से प्रसिद्ध है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८३ साइज १०||×५ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ८. साइज १३×६|| इञ्च। प्रति मूल मात्र है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ६१. साइज ११×४ इञ्च। लिपि संवत् १५४६. प्रथम पांच पृष्ठ नहीं है।

रघुवंश।

रचयिता महाकवि कालिदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २०२. साइज १३×५|| इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १६०. साइज ११×५ इञ्च। टीकाकर श्री चरण धर्मगणि। टीकाकार जैन हैं।

रत्नकरण्ड श्रावकाचार सटीक।

मूलकर्त्ता आचार्य समन्तभद्र। टीकाकार—प्रभाचन्द्राचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६३. साइज

११×४॥ इञ्च। ग्रन्थ का अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५७. साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत् १५४८.

रत्नकरण्डशास्त्र।

रचयिता पंडिताचार्य श्रीचन्द्र। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १५६. साइज ६॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और पंक्ति में ४४-४६ अक्षर। लिपि काल संवत् १५८२. विषय-गृहस्थ धर्म का वर्णन। ग्रन्थ समाप्ति के पश्चात् ग्रन्थकर्त्ता ने अपना परिचय भी लिखा है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२३. साइज ११×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४२-४८ अक्षर। लिपि संवत् १५८६.

प्रति नं० ३. पृष्ठ संख्या १५७. प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में ३८-४४ अक्षर। साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १५६५.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १४५. लिपि संवत् १६१४. साइज ६॥×४॥.

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १८ . साइज ६॥×५॥ इञ्च।

रत्नपाल श्रेष्ठि रासो।

रचयिता श्री यति ब्रह्मचार। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ६३. साइज १०×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३८ अक्षर। रचना संवत १७३२. लिपि संवत् १८२३.

रत्नसंचय।

रचयिता अज्ञात। भाषा प्रकृत। पत्र संख्या १५. साइज ६॥×४ इञ्च। विषय-सिद्धान्त।

रत्नत्रय कथा।

रचयिता श्री ब्रह्म ज्ञानसार। भाषा हिन्दी। पद्य संख्या ७०. साइज ६॥×४ इञ्च।

रत्नत्रयपूजाजयमाल।

रचयिता श्री रिषभदास। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या २३. साइज ११॥×५॥ इञ्च।

रत्नत्रयजयमाल।

रचयिता अज्ञात। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ३. साइज ११×५ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज ११×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६. साइज १२×६ इञ्च। लिपि संवत् १८८४. लिपिस्थान–जयपुर। लिपिकर्त्ता श्री भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्तिजी।

रत्नत्रयपूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज १०×५॥ इञ्च।

रमलशास्त्रप्रश्नतंत्र।

रचयिता श्रीराम। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १४. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १८२६. लिपिस्थान लालसोट।

रविव्रतोद्यापनपूजा।

रचयिता श्री केशवसेन कवि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत् १८३६. लिपिस्थान सवाई माधोपुर।

रसमञ्जरी।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या १७. साइज १०×२॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

रससिन्धु।

रचयिता श्री पौंडरीक रामेश्वर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६१. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८२७. विषय-अलंकार।

रागमाला।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६६५. लिपि कार पं० जगन्नाथ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६६५.

राजप्रश्नीयोपांगवृत्ति।

मूल लेखक अज्ञात। वृत्तिकार श्री विद्याविजयगणि। भाषा प्राकृत–संस्कृत। पृष्ठ संख्या ६३. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४२–४६ अक्षर। लिपि संवत् १६६४.

राजवार्त्तिक।

रचयिता श्रीमद् भट्टाकलंकदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५५४. साइज ११×४॥ इञ्च। लिपि

संवत् १५८२. लिपिस्थान चंपावती।

राजसभारंजन।

संग्रहकर्ता श्री गंगाधर। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ४. साइज १२॥×६ इञ्च। १२६ पद्यों का संग्रह है।

रामचन्द्रचरित।

रचयिता श्री ब्रह्मजिनदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०५. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

रात्रि भोजन कथा।

रचयिता श्री किशनसिंह। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २६. साइज १०×४॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या ४१५.

रोहिणीव्रतकथा।

रचयिता देवनन्दि मुनि। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२. साइज १०×४ इञ्च। श्लोक संख्या २६४.

रहिणीव्रतकथा।

आचार्य भानुकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज १०×४॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या ७६.

ल

लग्नसाधनविधि।

रचयिता लालबोध। पत्र संख्या ७. भाषा संस्कृत। साइज ६×४ इञ्च। विषय-विवाहविधि। लिपि संवत १७५०.

लघुजातक।

रचयिता श्री भट्टोत्पल। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २५. साइज १०×४ इञ्च। विषय-ज्योतिष।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११. साइज १०×५ इञ्च।

लघुवृत्त्ययनचूरिका।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६१. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपिकाल-शकसंवत् १३६६. विषय-व्याकरण।

लक्ष्मी स्तोत्र ।

रचयिता श्री पद्मप्रभसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १. साइज १०×४ इञ्च । इस स्तोत्र का दूसरा नाम पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३. साइज १०×४।। इञ्च । लिपि संवत् १६७१.

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ३. साइज १०।।×५।। इञ्च । लिपि संवत् १८६१. लिपिकर्त्ता श्री माणिक्यचंद्र ।

लीलावतीसटीक ।

रचयिता अज्ञात । पत्र संख्या ८२. भाषा संस्कृत । साइज १०।।×४।। इञ्च । विषय-ज्योतिष । प्रति अपूर्ण और जीर्णशीर्ण ।

लीलावतीसूत्र ।

रचयिता श्री भास्कराचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७३. साइज १०।।×५।। इञ्च ।

लीलावती भाषा ।

भाषाकार श्री लालचन्द्र । पत्र संख्या १४. साइज ११।।×६ इञ्च । लिपि संवत् १७७५.

व

बनारसी विलास ।

रचयिता-महाकवि बनारसीदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १२६. साइज ६×५ इञ्च । प्रति जीर्ण हो चुकी है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६६. साइज ११।।×५ इञ्च । लिपि संवत् १८२१. लिपि स्थान वृंदावन ।

वर्द्धमानकथा ।

रचयिता पंडित नरसेन । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १७. साइज १०।।×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३२-३८ अक्षर ।

वर्द्धमान पुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११४. साइज १०।।×५।। इञ्च । लिपि संवत् १८२८.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८१. साइज १०।।×६ इञ्च । लिपि संवत् १८४०. लिपिस्थान जयपुर ।

वर्द्धमान काव्य ।

रचयिता श्री जयमित्र हल । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ५२. साइज ६॥×५ इञ्च । लिपि संवत् १६२७. प्रशस्ति है । प्रथम पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५६. साइज ६॥×५ लिपि संवत् १५५५.

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६२. साइज ११×४॥. प्रति लिपि संवत् १६३१ माह सुदी ११. प्रशस्ति है । श्लोक संख्या १३५०.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ५५. साइज १२×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १५६३. प्रशस्ति है ।

व्रत कथा कोष ।

रचयिता श्री खुशालचन्द्र । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ११४. प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६–४० अक्षर । रचना संवत् १७८७. लिपि संवत् १८२०.

व्रत विवरण ।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात । भाषा हिन्दी । साइज १२×५॥ इञ्च । अनेक व्रत का समय आदि का पूर्ण विवरण दे रखा है ।

वर्द्धमान द्वात्रिंशिका ।

रचयिता श्री सिद्धसेन दिवाकर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४. साइज १०॥×४॥ इञ्च । विषय-स्तुति ।

वरांग चरित्र ।

रचयिता श्री वर्द्धमान भट्टारकदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७२. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३४–३८ अक्षर । लिपि संवत् १५६३.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६७. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि काल संवत् १६०५ भादवा सुदी ६. लिपि स्थान दूदू नगर । उक्त प्रति को आचार्य धर्मचन्द्र ने पढने के लिये लिखाई थी ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७३. साइज १२॥×६ इञ्च । लिपि काल–संवत् १८७३ आसोज सुदी ५. लिपिस्थान ग्वालियर । प्रति नवीन है । अक्षर स्पष्ट और सुन्दर हैं ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ६०. साइज ११×५ इञ्च । लिपिसंवत् १६६० जेठ सुदी १४. लिपिस्थान राजमहल ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या २४. साइज १२॥×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८४५.

वसुधरा स्तोत्र।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या ७. साइज ११×५॥ इञ्च। भाषा संस्कृत। ग्रन्थ श्लोक प्रमाण ३१५. लक्ष्मीदेवी की स्तुति की गयी है। प्रति शुद्ध, सुन्दर और स्पष्ट है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५. साइज ११॥×५ इञ्च।

वाग्भट्टसंहिता।

रचयिता श्री वाग्भट्ट। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १३६. साइज १३×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८४८. विषय–आयुर्वेद।

वाग्भट्टालंकार।

रचयिता श्रीमद् वाग्भट्ट। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १५. साइज १२×५ इञ्च। सात प्रतियां और हैं।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १४. साइज ११॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ११. साइज १०॥×४ इञ्च। लिपि स्थान विक्रम नगर।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या २४. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७७३.

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १४. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ४८. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रति सटीक है। लिपि संवत् १६४६.

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ३७. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६६५. लिपि स्थान द्वादशपुर। लिपिकर्त्ता श्री जगन्नाथ।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ३० साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६३६. लिपिस्थान रणस्थंभगढ़। लिपिकर्त्ता श्री वेणीदास। लिपिकर्त्ता ने सम्राट अकबर के शासन काल का उल्लेख किया है।

वाराही संहिता।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १३६. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४–४० अक्षर। प्रति अपूर्ण। १३६ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

वास्तुकुमार पूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १८३६. भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति ने अपने हाथों से प्रतिलिपि बनायी।

वाश्रय काव्य ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपिकार गणि धर्म विमल । विषय साहित्य ।

विदग्धमुखमंडन ।

रचयिता श्री धर्मदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २८. साइज १०॥×४॥ इञ्च । विषय–काव्यालंकार । श्री हर्ष मुनि के पढने के लिये ग्रंथ की प्रतिलिपि की गयी ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३१. साइज ११×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २७. साइज ११×५ इञ्च ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १३. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६२०. पं० राजरंग सरंग के पढने के लिये काव्य की प्रतिलिपि की गयी ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १६. साइज ११॥×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ८. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १५२४. पं० जिनसूरि गणि ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनायी ।

विद्यातत्वोपनिषद् ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १३०. साइज १२×६॥ इञ्च ।

विनती संग्रह ।

रचयिता श्री नवल । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या २०. साइज १२×५॥ इञ्च । विषय–२४ तीर्थंकर, सम्मेदशिखर, आदि की स्तुति की गयी है । जयपुर के प्रसिद्ध दीवाण बालचन्द्रजी के कहने से ग्रन्थ रचना की गयी थी ।

विनती संग्रह ।

रचियता श्री ब्रह्मदेव । भाषा हिन्दी । पृष्ठ संख्या ३६. साइज १०॥×४॥ इञ्च । विषय–प्रथम २४ तीर्थंकरों की अलग २ स्तुति है तथा आगे भिन्न २ विषयों पर स्तुतियां है । भाषा की अपेक्षा अधिक उत्कृष्ट नहीं है किन्तु भाव अच्छे हैं ।

विनती संग्रह ।

रचयिता श्री देवसागर । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६८. साइज ६×६॥ इञ्च । भाषा और भावों की अपेक्षा संग्रह कोई विशेष उपयोगी नहीं है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८१. साइज ११×५॥ इञ्च।

विलासकाव्य।

रचयिता अज्ञात। श्री दैवज्ञ सूर्य पंडित। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०. साइज ६×४ इञ्च। लिपि संवत् १८०८.

विवाह दीपिका सटीक।

रचयिता श्री गणेश। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७६. साइज १०॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १६६२.

विष्णु भक्ति।

रचयिता श्री विश्वभर्त्री। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४. साइज १०॥×५॥। लिपि संवत १८८४.

विषापहार स्तोत्र।

रचयिता श्री धनंजयसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४५. साइज १०×३॥ इञ्च। ४२ से पूर्व के पृष्ठों में प्राकृत भाषा में तत्त्वसार लिखा हुआ है। प्रथम पत्र से लेकर ३६ वें पृष्ठ तक कुछ नहीं है। तीन प्रति और हैं।

विषापहार स्तोत्र भाषा।

मूलकर्त्ता श्री धनंजय। भाषाकार श्री विलाराम भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १२. साइज १०॥×५॥ इञ्च। पद्य संख्या ४०.

विषापहार स्तोत्र।

मूलकर्त्ता श्री धनंजय। भाषाकार श्री अखय राज। पत्र संख्या १४. साइज १०॥×४ इञ्च। लिपि संवत् १७३१.

वीतरागस्तवन।

रचयिता श्री हेमचन्द्राचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज ११×५॥ इञ्च। श्री कुमारपाल भूपाल के लिये उक्त स्तवन की रचना हुई थी।

वैद्यजीवन।

पं० लोलिम्बराज। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७. साइज १०॥×४ इञ्च।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ३६. साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८२७.

प्रति नं० ३. पृष्ठ संख्या १७. साइज ११×५ इञ्च।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १८. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रथम ४ पृष्ठ तथा अन्त के पत्र घटते हैं।

वैद्य मनोत्सव।

रचयिता श्री नयन सुखदास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३६. साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत् १७७४.

प्रति नं० २. पत्र संख्या २४. साइज १२×६॥ इञ्च।

वैद्यवल्लभ।

रचयिता श्री हस्तरुचिसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २५. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७६३. लिपिस्थान मैसलाना।

वैद्यन्द्र विलास।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत-हिन्दी। पत्र संख्या ८. साइज १२×५ इञ्च।

वैद्य विनोद।

रचयिता अनंतभट्टात्मज श्री शंकर। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १०७. साइज ११×६ इञ्च।

वैयाकरण भूषण।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७२. साइज ६॥×४ इञ्च। लिपि संवत् १७४४.

वैराग्य स्तवन।

रचयिता श्री रत्नाकर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपिकर्ता पं० हरिवंश। पद्य संख्या २५.

वैराग्यशतक।

रचयिता श्री भर्तृहरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १७. साइज ११×५ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज ११॥×६ इञ्च।

वैष्णव शास्त्र।

रचयिता श्री नारायणदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३५. साइज १०॥×४ इञ्च। विषय—

सामुद्रिक। लिपि संवत् १६५८.

वृत्तरत्नाकर।

रचयिता भट्ट केदारनाथ। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १५८५.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५. अपूर्ण।

प्रति नं० ३. सटीक टीकाकार उपाध्याय समयसुन्दर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८. साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपिसंवत् १८२६. भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति ने टोंक में लिपी करवाई।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ६. साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपिसंवत् १८४७. भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति ने चंपावती नगरी में लिपी करवाई।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १७. सटीक टीकाकार श्री हरिभास्कर। साइज १३×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८४७.

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १६. साइज १३×५॥ इञ्च। टीकाकार पं० जनार्दन।

वृत्तसार।

रचयिता श्री उपाध्याय रमापति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १२. साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत् १८५०. आमेर में भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनायी।

वृहद् आदिपुराण।

रचयिता आचार्यजिनसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २०६. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १००६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६—३३ अक्षर। लिपि बहुत सुन्दर है।

वृहद् चाणक्य।

रचयिता श्री चाणक्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज १३×५ इञ्च। विषय—नीति शास्त्र। लिपि संवत् १८३८. लिपि स्थान पाडलीपुर।

वृहज्जन्माभिषेक।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत—हिन्दी। पत्र संख्या ६. साइज १२×५ इञ्च। लिपिकर्त्ता पं० दयाराम।

वृहत् पद्मपुराण (रविषेणाचार्यकृत)

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५५४. साइज १२x५ इञ्च। प्रति प्राचीन है। फटे हुये पत्रों की मुरम्मत भी पहिले हुई थी।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४३७. साइज १२x५ इञ्च। लिपि संवत १८३४. लिपिकार पंडित रायचन्द्रजी ने जयपुर के महाराजा श्री पृथ्वीसिंहजी के शासन का उल्लेख किया है। प्रति अपूर्ण है प्रारम्भ के २८७ पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६३८. साइज १२x५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के तथा अन्त के पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ४२७. साइज १२॥x६ इञ्च। प्रति शुद्ध, सुन्दर और प्राचीन है।

वृहत्पुण्याहवाचना।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४. साइज ११॥x४॥ इञ्च। लिपिकार भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति। लिपि संवत् १८३६. लिपि स्थान माधोपुर (जयपुर)।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४. साइज ११॥x४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८६६. लिपिस्थान टोंक। लिपिकार पं० विजयराम।

वृहद् स्वयम्भूस्तोत्र।

रचयिता आचार्य श्री समन्तभद्र। भाषा संस्कृत।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज १०॥x४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

वृहद् सिद्धचक्रपूजा।

रचयिता श्री भट्टारक शुभचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८. साइज १०॥x४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६१८.

वृहद् शान्ति पूजा।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज ६x४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८८६. पंडित हरचन्द्र ने वोरी गांव में उक्त पूजा की प्रति लिपि बनाई।

वृहद्शान्तिकविधान।

रचयिता पं० आशाधर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५८. साइज १०x४॥ इञ्च। विषय-पूजा।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ४३. साइज १०॥×५ इञ्च। लिपिसंवत् १८३१.

बृहत् शांति पाठ।

पत्र संख्या २. भाषा संस्कृत। साइज १०॥×४॥ इञ्च।

बृहद् शांतिमहाभिषेक विधि।

रचयिता श्री पं० आशाधर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५६. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५×४० अक्षर। प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के ७ पृष्ठ तथा अन्तिम पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज १०.।×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

बृहद् होम विधि।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या १२. भाषा संस्कृत। साइज ११॥×५ इञ्च।

स

सकलविधिविधानकाव्य।

रचयिता श्री नयनन्दि। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ३०४. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८–४४ अक्षर। लिपि संवत् १५८७.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज ११॥×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १०. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

सकलीकरणविधान।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २. साइज ११॥×५ इञ्च।

सज्जनचित्त वल्लभ।

रचयिता श्री मल्लिषेण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३. साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८४३. लिपिस्थान लावाग्राम।

सत्काव्य स्तुति।

रचयिता श्री बालकृष्ण भट्ट। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८३०.

सप्तपदार्थी टीका ।

रचयिता श्री शिवादित्याचार्य । टीकाकार श्री जिनवर्द्धनसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३३. साइज १०॥×४॥ इञ्च । विषय–न्याय । लिपि संवत् १८३८.

प्रति नं० २. पत्र संख्या २२. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६५८. लिपिस्थान श्रीसूर्यपुर ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १६. साइज १०॥×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । १६ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या २७. साइज १०×४॥ इञ्च । टीकाकार श्री माधवाचार्य हैं । टीका का नाम मितभाषिणी है । लिपि संवत् १६५५.

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ६. साइज ११×४॥ इञ्च । केवल मूल मात्र है ।

सप्तपदी ।

रचयिता अज्ञात । साइज ७×४ इञ्च । पत्र संख्या १६. भाषा संस्कृत । विषय–विवाह के समय बोले जाने वाले पद्य प्रति अपूर्ण है ।

सप्त ऋषि पूजा ।

रचयिता श्री भूषण सूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४. साइज ११॥×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६६१. ब्रह्म श्रीपति ने प्रतिलिपि बनाई ।

सम्यक्त्व कौमुदी ।

रचयिता श्री जोधराजगोदीका । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ५७. साइज ६×६॥ इञ्च । लिपि संवत् १८०६. रचना संवत् १७२४. गुटका नं० २६. वेष्टन नं० ३७५. ग्रन्थ का ऊपर का भाग दीमक के खाने से फट गया है । ग्रन्थ के अन्त में लेखक ने अपना परिचय भी दिया है ।

सम्यक्त्वकौमुदी ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४६. साइज १०॥×५ इञ्च । ग्रन्थश्लोक प्रमाण ३५००. लिपि संवत् १६७१.

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०३. साइज ११×४॥ लिपि संवत् १८३१.

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६१. प्रति अपूर्ण ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ६४. साइज १२×४ इञ्च ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ६०. साइज ११॥×४॥ इञ्च ।

सम्यक्त्व कौमुदी कथा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत गद्य । पत्र संख्या ८०. साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३०–३६ अक्षर । लिपि संवत् १५८२. लिपिस्थान चंपावती नगरी ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५१. साइज ६×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ११५. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १६६२.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ७१. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६०७.

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ५५. साइज ११×५ इञ्च ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ६२. साइज १०॥×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १५७६.

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ११३. साइज ११॥×५ इञ्च । लिपि संवत् १५६६. प्रति जीर्ण शीर्ण

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ४२. साइज ११×६ इञ्च । लिपि संवत् १८३८.

सम्यक्त्वकौमुदी ।

रचयिता श्री खेता । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६६. साइज १०×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६–४० अक्षर । लिपि संवत् १७६३.

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०२. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण तथा जीर्ण शीर्ण अवस्था में है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६१. साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १७६३. लिपिस्थान जहानाबाद जयसिंहपुर । लिपिकार पं० दयाराम ।

सम्यक्त्व कौमुदी ।

रचयिता श्री गुणाकरसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३५. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६६१. श्री कर्म तिलक के शिष्य श्री ज्ञानतिलक ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवाई ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३८. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपिसंवत् १७६७. भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति के शासन काल में पं० गोरधनदास के लिए ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २५. साइज ११×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । २५. से आगे के पृष्ठ नहीं हैं ।

सम्यक्त्व भेद प्रकरण ।

रचयिता अज्ञात । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या ६. साइज ११॥×५ इञ्च । गाथा संख्या ६८.

सम्यक्त्वरास ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा २६. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा

प्रति पंक्ति में २५-३० अक्षर। प्रथम पृष्ठ नहीं है।

सम्यक्त्व सप्तति।

रचयिता श्री तिलक सूरि। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १२१. साइज १२×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां ५८-६४ अक्षर। ग्रंथ समाप्त होने के पश्चात् अच्छी प्रशस्ति भी दे रखी है। प्रथम दो पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ११६. साइज १०॥×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रथम तीन तथा अन्त के पृष्ठ नहीं हैं।

संध्या प्रयोग स्तोत्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६. साइज ६×४ इञ्च।

सन्मति जिनचरित्र।

रचयिता पंडित रइधू। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२६. साइज ११×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३२-३६ अक्षर। लिपि संवत १६२४. श्री माथुरान्वय पुष्करगण के भट्टारक श्री यशःकीर्त्ति के समय में बाई जीवो ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई। लिपिकर्त्ता पंडित पारसदास। अन्त में स्वयं कवि द्वारा प्रशस्ति दी हुई है।

संस्कृत मंजरी।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत गद्य। पत्र संख्या ६. साइज १०×४। इञ्च। विषय-साहित्यिक। लिपि संवत् १७१७. भट्टारक नरेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य अखैराज ने प्रति लिपि की।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज ९॥×४॥. लिपि संवत् १७१४. लिपिस्थान संग्रामपुर।

प्रति नं० ३. साइज ११॥×५। पत्र संख्या ५.

सभातरंग।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४१. साइज ११॥×४ इञ्च। विषय-छन्दशास्त्र। लिपिकाल-संवत् १८४३ भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति ने स्वयं के अध्ययनार्थ ग्रन्थ की लिपी की है।

संवत्सर।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २२. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत १८३१. पुस्तक में संवत् १८०१ से १६०० तक ज्योतिष शास्त्र के अनुसार संक्षिप्त में संसार की हलचल का वृतान्त लिखा है।

संबोधपंचाशिकगाथा।

अज्ञात। पत्र संख्या ४- साइज १०।।×५ इञ्च। भाषा अपभ्रंश। लिपि संवत् १७१४; लिपिकर्त्ता– आनंदराम।

समयसार नाटक।

रचयिता महाकवि बनारसीदास। गद्य टीकाकार श्री रूपचंद। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १३७. साइज १२×५।। इञ्च। लिपि और टीका संवत् १७२३. महाकवि बनारसीदास के समयसार पर श्री रूपचन्द ने गद्य भाषा में अर्थ लिखा है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२०. साइज ११×४ इञ्च।

समयसार।

रचयिता–श्री अमृतचन्द्राचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १७. साइज ६×६ इञ्च। लिपि संवत् १८२२.

समयसार।

मूलकर्त्ता आचार्य कुन्दकुन्द, संस्कृत में अनुवाद कर्त्ता आचार्य अमृतचन्द्र। हिन्दी टीकाकार अज्ञात। पत्र संख्या २३४. भाषा–संस्कृत–हिन्दी। साइज ११।।×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४२–४६ अक्षर। हिन्दी टीका बहुत सुन्दर है। लिपि संवत् नहीं दे रखा है किन्तु प्रति प्राचीन मालूम देती है।

समयसारकलश।

मूलकर्त्ता श्री अमृतचन्द्राचार्य। भाषाकार श्री बनारसीदास। भाषा–संस्कृत–हिन्दी। पत्र संख्या २१८. साइज १०×६ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०८. साइज ११।।×५ इञ्च। लिपि संवत् १७८८. श्री देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य ने पढने के लिये इस ग्रन्थ की प्रति लिपि बनायी।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६६. साइज ११।।×५।। इञ्च। लिपि संवत् १७८८. लिपिस्थान आमेर। आरम्भ के १६ पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १०१. साइज ११।।×५।। इञ्च। ग्रन्थ में दो तरह के पृष्ठ हैं, एक प्राचीन तथा दूसरे नवीन। अन्त का एक पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १६१. साइज १०×।४।। इञ्च प्रति अपूर्ण है।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १६४. साइज ११×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण। प्रथम तथा अन्तिम १६४ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

समयसार टीका।

टीकाकार—अज्ञात। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ५३. साइज १०×४।। इञ्च। लिपि संवत् १६५३. लिपिस्थान गढ रणथम्भोर। भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्ति के शासन काल में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई। आचार्य अमृतचन्द्र रचित पद्यों का केवल संकेत मात्र दे रखा है।

समयसार टीका।

टीकाकार अमृतचन्द्राचार्य। टीका नाम—आत्म ख्याति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६६. साइज १०।×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण। प्रथम ३५ तथा अन्त के ६६ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० २. टीका नाम तात्पर्यवृत्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २०५. साइज १०।।×४ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ११४. साइज १२×५।। इञ्च। लिपिसंवत १८०१. लिपिस्थान जयपुर। टीका नाम—तात्पर्यवृत्ति।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ३८. साइज ११×४।। इञ्च। केवल गाथा तथा उनका संस्कृत में अनुवाद मात्र है।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १६. साइज १०।।×५।। इञ्च। लिपिसंवत् १६५८.

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १५. साइज ६।।×४।। इञ्च। केवल गाथाओं का संस्कृत में अनुवाद मात्र है।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ३६. साइज ११।।×५ इञ्च। आचार्य अमृतचन्द्र विरचित संस्कृत के पद्य मात्र हैं।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ५३. साइज १२।।×६ इञ्च। गाथाओं के अतिरिक्त संस्कृत में अनुवाद तथा हिन्दी में टीका है। लिपिसंवत् १७६०.

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १०४. साइज १२×४।। इञ्च। टीका नाम—आत्मख्याति।

प्रति नं० १०. पत्र संख्या १३६. साइज १०।×४।। इञ्च। टीका नाम आत्मख्याति।

समवश्रुतपूजावृहत्पाठ।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ३६. साइज १०।।×४।। इञ्च। अनेक पूजाओं का संग्रह है।

समवशरण स्तोत्र ।

पंडित श्री मीहारस्य विरचित । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या ५. श्लोक संख्या ५२. प्रथम पृष्ठ नहीं है ।

समस्यास्तवक ।

रचयिता अज्ञात । पत्र संख्या १५. भाषा संस्कृत । साइज ११।।×५ इञ्च । लिपि संवत् १५४१. लिपिकर्त्ता पं० मीहाख्य । लिपि स्थान नागपुर ।

समाधितंत्र भाषा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १४४. साइज १०।।×४।। इञ्च । भाषा अशुद्ध है और अक्षर अस्पष्ट है ; ऐसा मालूम होता है मानों किसी अनपढ व्यक्ति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की हो । प्रति अपूर्ण है अन्त के पृष्ठ घटते हैं ।

समाधितन्त्र भाषा ।

भाषाकार श्री पर्वत । पृष्ठ संख्या २८१. साइज ११×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २८—३४ अक्षर ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १४६. साइज १०।।×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण १४६ से आगे पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १५६. साइज १०×६ इञ्च । लिपि संवत् १८०५.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या २३६. साइज ६×५ इञ्च । लिपि संवत् १७०५. लिपिस्थान चंपावती । लिपि कराने वाला—आमिल साह श्री वछूजी । ग्रन्थ उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण है ।

समाधिशतक ।

रचयिता श्री पूज्यपाद स्वामी । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३२. साइज १०।।×४।। इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार श्री पंडित प्रभाचंद्र । टीका संस्कृत में है । ग्रन्थ ठीक अवस्था में है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज १०×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण है अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १०. साइज ११×४।। इञ्च । लिपि संवत् १७४४.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १०. साइज ११×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

समुदायस्तोत्र वृत्ति ।

टीकाकार भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ८४. साइज १२×५ इञ्च । अनेक स्तोत्रों की व्याख्या दी हुई है ।

सर्वार्थसिद्धि ।

रचयिता श्री पूज्यपाद । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११७. साइज १०×५॥ इञ्च । लिपिसंवत् १८३३. लिपि स्थान जयपुर । भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति ने पढने के लिये प्रतिलिपि तैयार की ।

प्रति नं० २, पत्र संख्या ६४. साइज १२॥×५॥ इञ्च । प्रतिलिपि संवत् १५७८. भट्टारक श्री जिनचंद्र के समय में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई । ग्रन्थ समाप्त होने के पश्चात् संवत् १८३३ भी दिया हुआ है । श्री निहालचंद्रजी बज ने दशलक्षणव्रत के उद्यापन के लिये ग्रन्थ को मन्दिर में विराजमान किया ।

सहस्रगुणित पूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२. साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १७१०. प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ के ५ पृष्ठ नहीं हैं ।

सागार धर्मामृत ।

रचयिता श्री पं० आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६१. साइज १०॥×४॥ इञ्च । रचना संवत् १२९६. लिपि संवत् १८२५. कुमुदचन्द्रिका नाम की टीका भी है । अन्त में कवि ने एक विस्तृत प्रशस्ति दे रखी है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६१. साइज १०॥×५ इञ्च ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४६. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६१४. लिपिस्थान तक्षकगढ महादुर्ग ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ४५. साइज ११॥×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण । ४५ से आगे के पृष्ठ नहीं है । कागज चिप गये हैं ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ३२. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १५८८.

सांख्य सप्तति ।

रचयिता श्री कपिल । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५. साइज ८॥×३॥ इञ्च । विषय-सांख्य दर्शन के सिद्धान्तों का वर्णन । लिपि संवत् १४२७ श्रावण सुदी ३.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५. साइज ६×३॥ इञ्च । लिपि संवत् १४२७ श्रावण सुदी ८.

सामायिक पाठ सटीक ।

भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ४८. साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १०

पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर । टीका बहुत सुन्दर है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४८. साइज ११॥×६ इञ्च । लिपि संवत् १८५६ माह सुदी २.

सामुद्रिक शास्त्र ।

रचयिता पं० नारदेव । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ३७. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७७५. श्री अखैराम के पढने के लिये श्री ऋषिराज ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनायी थी। प्रति अपूर्ण है आरम्भ के २ पृष्ठ नहीं हैं। ग्रन्थ के अक्षर मिट गये हैं।

सामुद्रिकशास्त्र ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । साइज १०×४ इञ्च । पत्र संख्या १२. प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३६-४२ अक्षर। लिपि संवत कुछ नहीं। लिपिकार श्री पमसीजी।

सामुद्रिक शास्त्र ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत हिन्दी । पत्र संख्या १०. साइज १३×६ इञ्च ।

मंगलाचरण—

आदिदेवं प्रणम्यादौ सर्वज्ञं सर्वदर्शिनं ।
सामुद्रकं प्रवक्ष्यामि सौभाग्यं पुरुषस्त्रियोः ॥१॥

सार्द्ध द्वयद्वीपपूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६३. साइज १२×५॥ इञ्च । ग्रन्थ में कहीं पर भी कर्त्ता का नाम नहीं दिया हुआ है।

सारणी ।

रचयिता अज्ञात । पत्र संख्या १०७. साइज १०॥×५ इञ्च । ग्रन्थ ज्योतिष का है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३१. साइज १०॥×५ इञ्च ।

सार संग्रह ।

रचयिता श्री सुरेन्द्र भूषण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २१. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ में ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-४० अक्षर । विषय-कालियुग वर्णन । प्रति अपूर्ण है।

सार संग्रह ।

रचियिता सुरेन्द्र भूषण । पत्र संख्या २५. साइज १०×५॥ इञ्च । अन्तिम पृष्ठ घटते हैं।

सार समुच्चय ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २३. साइज १०×३॥ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या ३३०. विषय–धर्मोपदेश । लिपि संवत् १५३८ कार्तिक बुदी ५.

सारस्वत व्याकरण ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२१- साइज ८॥×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० २. पत्र १७१. साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १३०. साइज ११×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १६६. साइज १०×४ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार भट्टारक श्रीचन्द्रकीर्त्ति ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १०४. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार अज्ञात । टीका नाम सार प्रदीपिका ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ३३. साइज ६॥×४ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार अज्ञात ।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ११६. साइज १०×४ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार श्रीमालकुल प्रदीप श्री पुंजराज ।

सारस्वतचन्द्रिका ।

टीकाकार भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २५१. साइज ११×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २५१. साइज ११×५ इञ्च ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०१. साइज १०×४। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ६०–६६ अक्षर ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १०६. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८६५. आख्यात प्रक्रिया है ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ११२. साइज ११×५ इञ्च ।

प्रति नं० ५. पत्र टीकाकार श्री ज्ञानेन्द्र सरस्वती टीका नाम तत्त्वबोधिनी । भाग पूर्वार्द्ध । पत्र संख्या ७८. साइज साइज ११×५॥ इञ्च ।

प्रति नं० ६. टीका उत्तरार्द्ध । पत्र संख्या ७८ में आगे । साइज ११×५॥ इञ्च ।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ६१. साइज ११×५.

प्रति नं० ८. पत्र संख्या १०३. साइज ११×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८८६.

सारस्वत टीका ।

टीकाकार श्री माधवाचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २५४. साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११२. साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

सारस्वत दीपिका ।

टीकाकार श्री सत्यप्रबोध भट्टारक । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३६. साइज १२×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १५४५.

सारस्वतधातुपाठ ।

रचयिता श्री हर्षकीर्त्तिसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६. साइज ११×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८२०. लिपिस्थान जयपुर ।

सारस्वत प्रक्रिया ।

प्रक्रियाकर श्री अनुभूतिस्वरूपाचार्य । भाषा संस्कृत । साइज १२×६ इञ्च । पत्र संख्या ३६ लिपि संवत् १८६३.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३६. साइज १२×६ इञ्च । तद्धित प्रक्रिया तक ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १४०. साइज १२×५ इञ्च । लिपि संवत् १७७६.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ६६. साइज १२॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३८. लिपिस्थान पहणाख्यनगर ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ६१. साइज १२॥×५ इञ्च । लिपि संवत् १८४०. तिङन्त वृत्ति पर्यन्त ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ३३. साइज ११॥×५ इञ्च । प्रथम वृत्ति पर्यन्त ।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या १०७. साइज ११॥४॥ इञ्च । प्रति पूर्ण ।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ४१. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८७३. लिपिकार ने महाराजाधिराज दौलतराव सिंधिया के शासन का उल्लेख किया है । लिपिस्थान ग्वालिअर ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ७२. साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० १०. पत्र संख्या १२. साइज १०॥×४॥ इञ्च । केवल पञ्च संधि मात्र है ।

सारस्वत व्याकरण सटीक ।

टीकाकार पं० मिश्रवासव । टीका नाम—बालबोधिनी । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२६. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६३२.

प्रति नं० २. पत्र संख्या २०. साइज १०×४॥ इञ्च ॥

सारस्वतसूत्र ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७. साइज ११×५ इञ्च । प्रति सुन्दर रीति से लिखी हुई है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १५. साइज ६॥×४ इञ्च ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६. साइज १०॥×५ इञ्च ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ७. साइज १२×५॥ इञ्च ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ८. साइज ६×४ इञ्च । केवल धातु पाठ ही है ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ३३. साइज १०×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ३४. साइज १०×४॥ इञ्च गणपाठ ।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ३४. साइज १०॥×४॥ इञ्च । केवल परिभाषा सूत्र ही हैं ।

सारावली ।

रचयिता श्री भूत्कल्याण वर्मा । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४. साइज १०×४ इञ्च । विषय—ज्योतिष प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ५६. साइज १०॥४ इञ्च । अध्याय ४४. श्लोक संख्या ३५००. लिपि संवत् १६३६.

सिद्धान्त कौमुदी ।

सूत्रकार श्री पाणिनी । टीकाकार श्री भट्टोजी—दीक्षित । पत्र संख्या ३४१. साइज १५॥×५ इञ्च । ग्रन्थ श्लोक संख्या १००११.

प्रति नं० २. पत्र संख्या १५०. साइज ६×४ इञ्च । कौमुदी का उत्तरार्द्ध भाग है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १३४. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

सिद्धान्त चन्द्रिका सटीक उत्तरार्द्ध ।

टीकाकार श्री लोकेशंकर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५६. साइज ११×५. प्रति नवीन, शुद्ध और सुन्दर है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६०. साइज १०॥×५ इञ्च । केवल पूर्वार्द्ध मात्र है ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ८२. साइज १०॥×५ इञ्च । लिपि संवत् १८६८. उत्तरार्ध मात्र है ।

सिद्धचक्र पूजा ।

रचयिता पं० आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४. साइज ११×५॥ इञ्च ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १४. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ८. साइज १०×४॥ इञ्च।

सिद्ध भक्ति।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १२. साइज १०×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३६ अक्षर। पृष्ठ पर एक तरफ टीका भी दे रखी है।

सिद्धचक्र स्तवन।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७. साइज ११॥×५ इञ्च।

सिद्धान्तधर्मोपदेश रत्नमाला।

रचयिता अज्ञात। भाषा प्राकृत-संस्कृत। पत्र संख्या १५. साइज १२×५॥ इञ्च। गाथा संख्या १६१. प्राकृत से संस्कृत में अर्थ वहीं पर दे रखा है। आचार्य नेमिचन्द्र की कुछ गाथाओं के आधार पर उक्त रत्नमाला की रचना की गई है ऐसा स्वयं ग्रंथ कर्त्ता ने लिखा है।

सिद्धान्त मुक्तावली।

रचयिता श्री विश्वनाथ पंचानन। टीकाकार अज्ञात। पृष्ठ संख्या २६. साइज १२×६ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

सिद्धांतसार।

रचयिता श्रीजिनचंद्र देव। भाषा प्राकृत। पृष्ठ संख्या ८. साइज १०॥×४॥ इञ्च। गाथा संख्या ८६.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८. साइज १२×५॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७. साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत १५२५. श्रीजिनचंद्रदेव के शिष्य ब्र० नरसिंह के उपदेश से श्रीगूजर ने प्रतिलिपि करवाई।

सिद्धांतसारदीपक।

भाषाकर्त्ता-श्रीनथमल विलाला। भाषा-हिन्दी। पत्र संख्या १६६. साइज १२×६ इञ्च। रचना संवत् १८३४ लिपिसंवत् १८६०.

सिद्धान्तसार दीपक।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २४३. साइज ११॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक

पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रत्येक ३६–४२ अक्षर। ग्रन्थ श्लोक प्रमाण-४५१६. लिपि संवत् १७८६.

प्रति नं० २. पत्र संख्या २२६. साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपिसंवत् १७८६. लिपिस्थान कारंजा। लिपिकर्त्ता पंडित सुमतिसागर।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६७. साइज १२॥×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण। ६७ से आगे पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १७५. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपिस्थान बसवा। लिपिकार श्री पं० परसरामजी; प्रति अपूर्ण। प्रारम्भ के ७१ पृष्ठ नहीं हैं। दीमक लग जाने से ग्रंथ का कुछ भाग फट गया है।

सिद्धान्तसार संग्रह।

रचयिता आचार्य श्री नरेन्द्रसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६३ साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १८०३. ग्रन्थ को दीमक ने नष्ट कर दिया है।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ८८. साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०–४६ अक्षर। ग्रन्थ के अन्त में ग्रन्थकर्त्ता ने प्रशस्ति दी है लिपि संवत् १८६४.

सीताहरण।

रचयिता श्री जयसागर। भाषा हिन्दी पद्य। साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २४–३० अक्षर। पत्र संख्या ११३. रचना संवत् १७३२. लिपि संवत् १६१५. लिपिस्थान देवदनगर।

सीता चरित्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४२. साइज १२×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण। ४२ वें पृष्ठ से आगे नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११७. साइज ११॥×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण और त्रुटित है।

सीताचरित्र।

रचयिता श्री रायचंद। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १४४. साइज ११×५ इञ्च। पद्य संख्या २५४१. रचना संवत् १८०८. लिपिकार पं० दयाराम।

सुकुमाल चरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४५. साइज १२॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४४–४८ अक्षर। लिपि संवत् १७८५. ग्रन्थ में सुकुमाल के जीवन चरित्र के अतिरिक्त वृषभांक कनकध्वज सुरेन्द्रदत्त आदि का भी वर्णन है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५३. साइज १०।।×४।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४४ अक्षर। प्रारम्भ के ४ पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ५१. साइज १२×५।। इञ्च। प्रशस्ति नहीं है। लिपि बहुत सुन्दर और स्पष्ट है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ५१. साइज १२।।×५।। इञ्च। लिपि संवत् १५८६.

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ५३. साइज १०।।×४।। इञ्च।

सुकुमालचरित्र।

रचयिता पं० श्रीधर। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४५. साइज १०।।×४।।. प्रत्येक पृष्ठ पर ११-१५ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३७-४२ अक्षर। लिपि संवत् १५४६.

सुकुमालचरित्र।

रचयिता श्री मुनिपूर्णभद्र भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४५. साइज १०।।×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

सुखण चरित्र।

रचयिता पं० जगन्नाथ। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४६. साइज १०×४।। इञ्च। लिपि संवत् १८४२. *ग्रंथ में श्रीपाल के जीवन चरित्र को दिखलाया है।*

सुदर्शनचरित्र।

रचयिता मुमुक्षु विद्यानन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७७. साइज ११×५।। इञ्च। प्रत्येकपृष्ठ पर ६-१० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २८-३६ अक्षर।

सुदर्शनचरित्र।

रचयिता श्री नयनन्दि। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६५. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३२-३६ अक्षर। लिपि संवत् १५०४. दश परिच्छेद हैं।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६५. साइज १०×५ इञ्च। लिपि संवत् १५६७. प्रशस्ति है। ग्रन्थ अच्छी अवस्था में है। लिपि सुन्दर और शुद्ध है।

प्रति नं ३. पत्र संख्या ६६. साइज १०।।×५ इञ्च। लिपिसंवत् १६३१. प्रशस्ति बहुत संक्षिप्त में है। ग्रन्थ की प्रतिलिपि मालपुरा गांव में हुई थी। कागज कितनी ही जगह से फट गया है। अक्षर बहुत छोटे हैं।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १०६. साइज १०।।×५ इञ्च। लिपि संवत् १६३२ प्रशस्ति है। ग्रन्थ की प्रतिलिपि निवाई (जयपुर) में हुई थी। ग्रन्थ के बहुत से कागज कोने में से फट गये हैं लेकिन उससे ग्रन्थ

को कोई नुकसान नहीं हुआ। लिपि स्पष्ट और सुन्दर है।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या ११२. साइज १०॥×४॥. लिपिसंवत् नहीं है। दशासुर्ण है। पुस्तक के प्रायः सभी कागज कोते में से फट गये हैं। लिपि सुन्दर और स्पष्ट है।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ११५. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६७० माघ सुदी १२, भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति की भेट के लिये ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ८६. साइज ६॥×५ इञ्च। ८६ वां पृष्ठ आधा फटा हुआ है।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या १००. साइज १०×३॥ इञ्च। लिपि संवत् १५१७ माघ बुदी प्रतिपदा।

सुदर्शन चरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६१. साइज १२॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १८३८.

प्रति नं० २. पत्र संख्या २७. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १६२१. भट्टारक सुमतिकीर्त्ति के समय में मुनि श्री वीरन्द्र ने प्रतिलिपि बनाई।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १८. साइज ११॥×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है तथा जीर्ण हो चुकी है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या २७. साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत् १६२१. लिपिकर्त्ता श्री मुनि वीरेन्द्र।

सुदर्शन रासो।

रचयिता ब्रह्मरायमल्ल। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३०. साइज ११×५ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११. साइज ११×५ इञ्च।

सुलोचना चरित्र।

ग्रन्थकर्त्ता गणिदेवसेन भाषा। अपभ्रंश। साइज ६॥×३ इञ्च। पत्र संख्या ३७८. प्रत्येक पृष्ठ पर ७-६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २८–३५ अक्षर। लिपिकाल संवत् १५८७. कागज और लिखावट दोनों ही अच्छे हैं। २८ परिच्छेद है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २४८. साइज ६॥×३॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३५–४० अक्षर। लिपि संवत् १५६० वैशाख सुदी १३ सोमवार। लिखावट सुन्दर और स्पष्ट है। अन्तिम पत्र कुछ फटा हुआ है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २७१. साइज ११॥×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३३–३८ अक्षर। प्रतिलिपि संवत् १६०४.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या २३७. साइज १०॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १५७७. प्रशस्ति है। प्रारम्भ के २ पृष्ठ तथा २३३ से २३६ तक के पृष्ठ नहीं हैं।

सुभाषितार्णव।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २६. साइज ११×४॥ इञ्च। काव्य संग्रह अच्छा है।

सुभाषितावली।

रचयिता भट्टारक श्री सकल-कीर्ति। भाषा संस्कृत।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २१. साइज १२॥×५॥ इञ्च। लिपिकाल-संवत् १८४६.

सुभाषितशास्त्रशतक।

रचयिता श्री सोमप्रभसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११. साइज १२×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८८६. लिपिकर्त्ता पं० मेहरसोनी। लिपि स्थान मालपुरा (जयपुर)

सुश्रुतसंहिता।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३१. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७०२. केवल कल्पस्थान ही है।

सुदयवच्छचरित्र।

रचयिता श्री सोमप्रभ। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३२. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ३४-४० अक्षर। लिपि संवत् १७३१. प्रति अपूर्ण है। प्रथ पत्र नहीं है।

सूक्ति मुक्तावली।

रचयिता आचार्य सोमप्रभ। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८. साइज १०॥×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। शुरू के ५ पृष्ठ नहीं है।

सूक्तावली संग्रह।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात। पत्र संख्या १५. साइज ६×४॥ इञ्च। लिपिसंवत् १८०८.

सूक्ति मुक्तावली भाषा।

रचयिता कौरपाल बनारसी। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १२. साइज १०×४॥ इञ्च। रचना संवत् १६६२.

सोलह कारण जयमाल ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संस्कृत १३. साइज १२॥×५॥ इञ्च ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२. साइज १२॥×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८१३. ग्रन्थ के एक हिस्से के दीमक ने खा रखा है ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या २०. साइज १०॥×४ इञ्च । लिपि संवत् १७५४. लिपिकार पं० मनोहर ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १३. साइज १२×५॥ इञ्च ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ११. साइज १२×५ इञ्च । लिपिस्थान सवाई जयपुर ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १२. साइज १२×६ इञ्च ।

सौन्दर्यलहरी ।

रचयिता श्री शंकराचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १२×५ इञ्च । लिपि संवत् १८३८.

स्तवनसंग्रह ।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ५८. साइज ६॥×४॥ इञ्च । प्रारम्भ के ६ पृष्ठ तथा अन्त में ५८ से आगे के पृष्ठ नहीं है । इसमें भिन्न २ कवियों के स्तवनों का संग्रह किया गया है । एक साथ चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति के अतिरिक्त अलग २ तीर्थंकरों की स्तुतियां की गयी है तीर्थंकरों के अलावा सींमधर स्वामी आदि के भी कितने ही स्तवनों का संग्रह है । स्तवन अधिकतर श्वेताम्बर सम्प्रदाय के आचार्यों के हैं ।

स्तोत्रटीका ।

रचयिता श्री विद्यानन्द । टीकाकार श्री आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज ६॥×४॥ इञ्च । ग्रन्थ समाप्ति के बाद इस प्रकार दे रखा है "कृतिरियं वादीन्द्र विशालकीर्त्ति भट्टारक प्रियसूत पति विद्यानन्दस्य" ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६२०.

स्तोत्रयी सटीक ।

संकलनकर्त्ता अज्ञात । टीकाकार अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३० साइज १२×५ इञ्च । भूपालस्तोत्र, भक्तामर स्तोत्र और कल्याणमन्दिर स्तोत्र इन तीनों का संग्रह है । लिपि संवत् १८३८.

स्तोत्र संग्रह ।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात । पत्र संख्या २४. साइज १२×६ इञ्च । भक्तामरस्तोत्र विषापहारस्तोत्र, एकीभाव-

स्तोत्र, कल्याणमन्दिरस्तोत्र, लघुस्वयंभुस्तोत्र, तथा तत्त्वार्थसूत्र आदि संग्रह हैं।

स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा।

मूलकर्त्ता स्वामीकार्त्तिकेय। टीकाकार भट्टारक श्री शुभचन्द्र। भाषा प्राकृत-संस्कृत। पत्र संख्या २६०. साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत् १७२१. टीकाकार काल संवत् १६००. प्रारम्भ के ७३ पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २७. साइज ६×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रथम और अन्तिम पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २७. साइज १०।।×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ३१. साइज १०×४ इञ्च। गाथा संख्या ४६०. मूल मात्र है।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या २८. साइज ६।।×४।। इञ्च।

स्थानांग सूत्र।

भाषा प्राकृत। पृष्ठ संख्या ६३. साइज ११×४।। इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के और अन्त के पृष्ठ नहीं है।

स्वप्नचिंतामणि।

रचयिता श्री जगदेव। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १७. साइज ६।।×४।। इञ्च। दो अधिकार है।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या १३. साइज १०।।×४।। इञ्च। प्रति अपूर्ण है। १० से १२ तक १५ से आगे के पृष्ठ नहीं है।

स्वयम्भू स्तोत्र।

रचयिता आचार्य समंतभद्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २२. साइज ११।।×४।। इञ्च। लिपि संवत् १७१७। लिपि स्थान कृष्णगढ़ लिपिकर्त्ता आचार्य श्री गुणचन्द्र।

स्वरूप संबोधन पंचविंशति।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८. पद्य संख्या २६. साइज १०×४।। इञ्च। विषय—आत्मचिन्तवन। प्रति सटीक है। टीका संस्कृत में है। टीकाकार का उल्लेख नहीं मिलता है।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ६. साइज ११×४।। इञ्च। लिपि संवत् १७०६ भादपद सुदी १। श्री शीलसागर ने अपने पढने के लिये प्रतिलिपि बनाई थी।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २. साइज ११।।×५।। इञ्च। केवल टिप्पणि मात्र है।

श

शकुनप्रदीप ।

रचयिता श्री लावण्य शर्मा । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३१. साइज १०॥×४ इञ्च । विषय-ज्योतिष ।

शकुन विचार ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत पत्र संख्या ६. साइज १०×४॥ इञ्च ।

शकुनमालिका ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३. साइज ६॥×४ इञ्च । लिपिसंवत् १६७८. श्लोक संख्या ५२.

शकुनस्वाध्याय ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ३. साइज १२×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३६. लिपि कर्त्ता—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति ।

शकुन्तला नाटक ।

रचयिता महाकवि श्री कालिदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२१. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १८४६.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४१. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८४१.

शकुनावली ।

रचयिता श्री गर्गाचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १२×५ इञ्च । विषय—ज्योतिष । लिपि संवत् १८६८.

शतानंद ज्योतिष शास्त्र ।

रचयिता शतानन्द । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८. साइज ११×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

शब्दशोभा ।

रचयिता । श्री नीलकण्ठ शुक्ल । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २७. साइज १२॥×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८४२.

शब्दानुशासन।

रचयिता आचार्य हेमचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४५. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृठ पर १४ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ५२-५६ अक्षर। विषय व्याकरण।

शत्रुंजय महातीर्थ महात्म्य।

रचियता श्री धनेश्वर सूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १७१. साइज ११॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४८-५४ अक्षर। प्रथम पृष्ठ नहीं है।

शांतिचक्रपूजा।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १४. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि. १८२६. लिपिस्थान माधोपुर।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४. साइज ११॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १०. साइज ११॥×५॥ इञ्च।

शांतिचक्र पूजा।

रचयिता पंडित श्री धर्मदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३०. साइज १२×५॥ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १८. साइज ८॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८०८. लिपिस्थान जोबनेर (जयपुर; लिपिकर्त्ता पं० उदयराम।

शान्तिनाथ पुराण।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २५८. साइज ११॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पक्तियां और प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १५३. साइज १२॥×५ इञ्च। अन्त के दो पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २०४. साइज १०×६ इञ्च। लिपिशक संवत् १६७७.

शातिनाथ पुराण।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या १५७. भाषा संस्कृत गद्य। साइज १०×४॥ इञ्च। विषय-भगवान शान्तिनाथ का जीवन चरित्र।

शारदीनाममाला।

रचयिता उपाध्याय श्री हर्षकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३८. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक

पृष्ठ पर ६. पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २४-३० अक्षर। लिपि संवत् १७६६.

प्रति नं० २. पत्र संख्या १७४. साइज ११॥×६ इञ्च। प्रशस्ति नहीं है। प्रति प्राचीन मालूम देती है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ११६. साइज १२॥×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण।

शान्तिलहरी।

रचयिता पंडित श्री सूरिचन्द्र। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १६. साइज १०×४॥ इञ्च। इसका दूसरा नाम वैराग्य लहरी भी है। ग्रन्थ समाप्ति के समय कवि ने अपना परिचय दिया है

शारदास्तवन।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २. साइज ११॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ५०-५६ अक्षर। लिपि संवत् १८४०.

शारदस्तवन।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १. साइज ११×४॥ इञ्च।

शारंगधर संहिता।

रचयिता श्री शारंगधराचार्य। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ७१. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८४२. विषय-आयुर्वेद।

प्रति नं २. पृष्ठ संख्या १४. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। सटीक।

शिवभद्र काव्य।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

शिवारुतविचार।

रचयिता श्री गार्ग। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २. साइज १०॥×४ इञ्च। लिपि संवत् १६१२. लिपि कर्त्ता श्री क्षेम कीर्त्ति।

शिशुपालवध।

रचयिता महाकवि माघ। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७३. साइज ६॥×४ इञ्च। लिपि संवत् १७५६.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७७. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति प्राचीन है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २०४. साइज १०।।४।। इञ्च। प्रति सटीक है। टीका का नाम वल्लभं तथा टीकाकार का नाम वल्लभसूरि है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १३५. साइज ११।।×५ इञ्च।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ४२. साइज ११।।×५ इञ्च। केवल ६ सर्ग है अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या २८३. साइज ११।।×४।। इञ्च। प्रति एक दम नवीन है।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या पत्र संख्या ८२. साइज १२×४ इञ्च। केवल मूल मात्र है।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या १७. साइज ११×४।। इञ्च। लिपि संवत् १६८४. लिपिकर्त्ता मुनि रामकीर्त्ति। केवल १६ वां सर्ग है।

शीघ्रबोध।

रचयिता श्री काशीनाथ भट्टाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६. साइज १०।।×४।। इञ्च। लिपि संवत् १७८५. विषय—ज्योतिष।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११. साइज ६।।×५।। इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ११. साइज ६।।×४।। इञ्च। प्रति अपूर्ण तथा जीर्णशीर्ण है।

शील प्राभृत।

रचयिता आचार्य कुन्दकुन्द। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ३. साइज १०×५ इञ्च। प्रति में लिंग प्राभृत भी है।

शीलांग पच्चीसी।

रचयिता श्री दलाराम। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३. पद्य संख्या २५.

शीलोपदेश रत्नमाला।

रचयिता श्री सोमतिलक सूरि। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १६६. साइज ११×४।। इञ्च। विषय—शील कथाओं का वर्णन। लिपि संवत् १६६०,

श्लोकयोजन।

रचयिता श्री पद्माकर दीक्षित। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३. साइज ११।।×४।। इञ्च। लिपि संवत् १७६६.

श्लोकवार्त्तिक ।

रचयिता आचार्य श्री विद्यानन्दि भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५७४. साइज ११×६ इञ्च । लिपिसंवत्त १७६५. ग्रन्थ श्लोक संख्या २२०००. विषय—तत्त्वार्थ सूत्र का गद्य में महा भाष्य है। लिपि सुन्दर और स्पष्ट है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३८८. प्रारम्भ के ३ पृष्ठ तथा अन्तिम पृष्ठ नहीं है । लिपि सुन्दर है ।

श्रावक लक्षण ।

रचयिता पंडित मेधावी । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३. साइज ११॥×५॥ इञ्च । पंडित मेधावी के धर्मसंग्रह में से उक्त अंश लिया गया है। इसमें ११ प्रतिमाओं का कथन किया गया है ।

श्रावकाचार ।

रचयिता श्री पद्मनन्दी । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४१. साइज ११॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में ३८–४२ अक्षर । लिपि काल संवत् १५६४. प्रशस्ति अच्छी दी हुई है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८६. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत्त् १६५४ द्वि० असोज सुदी १०. लिपिस्थान अजमेर ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७७. प्रति अपूर्ण है ।

श्रावकाचार भाषा ।

रचयिता आचार्य वसुनन्दि । भाषा प्राकृत हिन्दी । भाषाकार—पं०दौलतरामजी । पत्र संख्या १३४. साइज ८॥×५॥ इञ्च । गाथा संख्या ५४६. लिपि संवत् १८०८.

श्रावकाचार ।

रचयिता ब्रह्म श्रीजिनदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ११॥×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६–४० अक्षर । लिपि संवत् १८२०. लिपिस्थान वृंदावन ।

श्रावकाचार ।

रचयिता श्री पूज्यपाद स्वामी । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज ८॥×४॥ इञ्च । पद्य संख्या १०३. लिपि संवत्त् १६७५. लिपिकार पांडे मोहन । लिपि स्थान देवली ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपिसंवत् १६५६.

श्रावकाचार ।

सटीक । रचयिता—भट्टारक पद्मनन्दि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि

संवत् १७१२. लिपि स्थान देवपल्यनगर।

श्रावकव्रतसार।

रचयिता पंडित रइधू। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ६१. प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३६-४२ अक्षर। लिपि संवत् अज्ञात। प्रथम ६१ से आगे के पत्र नहीं हैं।

श्रावकाचार।

रचयिता पंडित श्रीचन्द। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२३. साइज ११।।×५ इञ्च। लिपि संवत् १५८६. लिपिस्थान चंपावती। प्रशस्ति अपूर्ण है। लिपिकर्ता ने कुंवर श्री ईसरदास के शासन काल का उल्लेख किया है। अन्तिम पृष्ठ फटा हुआ है।

श्रावकाचारदोहा।

रचयिता अज्ञात। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ७. साइज ११×५ इञ्च। गाथा संख्या २२३. विषय-सम्यग्दर्शन ज्ञान और चरित्र का वर्णन।

श्रीपाल चरित्र।

रचयिता श्री परिमल्ल। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या १२५. साइज १०×५। इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या २३००. रचना संवत्-१७ वीं शताब्दी। लिपि संवत् १७६४. ग्रन्थ समाप्ति के बाद कवि का परिचय भी दिया हुआ है।

श्रीपालचरित्र।

रचयिता पंडित रइधू। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२८. साइज १०।।×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ९ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३०-३५ अक्षर। प्रति लिपि संवत् १६३१. लिपिस्थान टोंक।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १००. साइज ८।।×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १४-१६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३४ अक्षर। रचना संवत् १६४६. प्रति अपूर्ण है १०० पृष्ठ से आगे नहीं हैं। ग्रन्थ की भाषा बहुत ही सरल है।

श्रीपाल चरित्र।

रचयिता पंडित नरसेन। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ४८. साइज १०×५। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ९ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३३-३८ अक्षर। लिपि संवत् १५९९.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३७. साइज ११×५।। इञ्च। लिपि संवत् १६३२.

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ३३. साइज ११×६ इञ्च।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ४३. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १५८४. लिपिस्थान दौलतपुर।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ३६. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १५१२.

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ४१. साइज १०×५ इञ्च।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ४८. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रतिलिपि संवत् संवत् १५७६. लिपिस्थान टोंक।

श्रीपाल चरित्र।

रचयिता श्री जगन्नाथ कवि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५०. साइज ११×५ इञ्च। रचना काल—संवत् १७०० आसोज सुदी दशमी।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २८. साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत् १६०६.

श्रीपाल चरित्र।

रचयिता ब्रह्म नेमिदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११२. साइज ६×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २८—३२ अक्षर। रचना संवत् १५८५. कवि ने अपना परिचय लिखा है लेकिन वह अधूरा है।

श्रीपाल चरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २६. साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १५८६ श्रावण सुदी १३. विषय—महाराजा श्रीपाल का जीवन चरित्र।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ४०. साइज ११॥×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

श्रुतस्कंध।

ब्रह्म हेमचन्द्र। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४. साइज ११॥×५ इञ्च। विषय—सिद्धान्त। बाइ गूजीर के पढने के लिये उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १४. साइज १०×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६. साइज १०×४॥ इञ्च।

श्रुतस्कंधपूजा।

रचयिता भट्टारक श्री त्रिभुवन कीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३. साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १६६४. ब्रह्मचारी अखयराज के पढने के लिये पूजा की प्रतिलिपि की गयी।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७. साइज ६×४॥ इञ्च।

श्रेणिक चरित्र।

रचयिता लक्ष्मीदास चांदवाड। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ११५. साइज १०॥×४॥ इञ्च। रचना संवत् १७८३. लिपि संवत् १८०८.

श्रेणिकचरित्र।

ग्रन्थकर्त्ता जयमित्रहल। भाषा अपभ्रंश पत्र संख्या ७८. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में २८–३५ अक्षर। लिपिसंवत् १५८०. ११ परिच्छेद है। ग्रन्थ साधारण अवस्था में है। ७७ पृष्ठ के एक भाग पर कुछ नहीं लिखा है।

श्रेणिकचरित्र।

रचयिता मुनि शुभचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६१. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १७३०.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११३. साइज १०॥×५ इञ्च। अन्तिम एक पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १०८. साइज ६॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में ३८–४४ अक्षर। लिपि संवत् १८४७.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १७३. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३२–३६ अक्षर। प्रतिलिपि संवत् १८०८.

श्रेणिकरास।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषा–हिन्दी। पत्र संख्या ४२. साइज ६॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में २६–३२ अक्षर।

शृंगार शतक।

रचयिता–श्री भर्तृहरि। भाषा–संस्कृत। पत्र संख्या १८. साइज ११॥५ इञ्च।

ष

षट्कर्मोपदेशरत्नमाला।

रचयिता श्री अमरकीर्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६५. १०॥×५ इञ्च। प्रतिलिपि संवत् १४७१.

प्रतिलिपि बहुत प्राचीन होने पर भी सुन्दर और स्पष्ट है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११३. साइज ६×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति ३३–३७ अक्षर। प्रतिलिपि संवत् १५६२.

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १०५. साइज १०॥×५॥ इञ्च। प्रतिलिपि संवत् १५५८. प्रति प्राचीन है। बहुत पृष्ठों के अक्षर एक दूसरे से मिल गये हैं।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १३७. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १८२६. लिपिस्थान जयपुर। श्री पं० रायचन्दजी के शिष्य श्री सवाईराम ने प्रतिलिपि बनायी।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १६२. साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६६१. लिपिस्थान पनवाडा। श्री ब्रह्मचारी श्रीचन्द ने श्री लालचन्द के द्वारा प्रतिलिपि बनवायी।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १६१. साइज ११॥×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण। १६१ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या १५७. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १७६६. लिपिस्थान बसवा। प्रारम्भ के ७५ पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या १००. साइज १२×६ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। १०० से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ९. पत्र संख्या ८३. साइज १०×५ इञ्च। प्रतिलिपि संवत् १५५३.

प्रति नं० १०. पत्र संख्या १०४. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १५६६.

प्रति नं० ११. पत्र संख्या १३५. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १५७६. लिपिस्थान नागपुर। प्रति अपूर्ण है। प्रथम २ पृष्ठ तथा मध्य के कितने ही पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० १२. पत्र संख्या १२३. साइज १०×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के तथा अन्त के पृष्ठ नहीं है।

षट्कर्मरास।

रचयिता श्री ज्ञानभूषण। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४. साइज १०॥×५ इञ्च। गाथा संख्या ५२.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज ११×५ इञ्च।

षट्पंचासिका।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या १०. भाषा संस्कृत। साइज ६॥×४ इञ्च। सूत्रों की टीका भी है। सात अध्याय हैं। लिपि संवत् १६६३. विषय—ज्योतिष।

षट्पाद।

रचयिता—अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४. साइज १०॥×५ इञ्च। लिपिकार गणि-धर्मविमल।

षट् पाहुड ।

रचयिता आचार्य कुन्दकुन्द । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या ३२. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७६३. लिपिस्थान सांगानेर (जयपुर) ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३२. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १५६४. लिपिस्थान चंपावती । लिपिकर्त्ता श्री नथमल । लिपिकार ने राठौर वंश के राजा श्री ... के नाम का उल्लेख किया है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६८. साइज ११॥×५ इञ्च । लिपि संवत् १७५१. लिपिकर्त्ता श्री कुंदनदास ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या २०. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७४७. प्रति मूलमात्र है ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या २२. साइज ११॥×४॥ इञ्च । प्रति मूलमात्र है ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १६५. साइज १२×५ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार आचार्य श्री श्रुतसागर । लिपि संवत् १७६५.

षट् पाहुड सटीक ।

मूलकर्त्ता आचार्य श्री कुन्दकुन्द टीकाकार सूरिवर श्री श्रुतसागर । भाषा प्राकृत-संस्कृत । पत्र संख्या १८६. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १५८५. भट्टारक प्रभाचन्द्र के शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र के लिये प्रतिलिपि हुई थी ।

षट् पाहुड सटीक ।

मूलकर्त्ता आचार्य कुन्दकुन्द । टीकाकार पंडित मनोहर । भाषा प्राकृत-संस्कृत । पत्र संख्या ४१. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७६०.

षट्पाद ।

रचयिता अज्ञात । लिपिकार श्री धर्मविमल गणि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १०×४॥ इञ्च । विषय-काव्य ।

षट्दर्शनसमुच्चयटीका ।

टीकाकार । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६४. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर २१ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ६५-७० अक्षर । अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

षोडशकारणकथा ।

रचयिता-अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०. साइज ९॥×४॥ इञ्च । विषय-दशलक्षण और सोलह कारण की कथा

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०×४ इञ्च ।

षोडशकारणकथा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०. साइज १०॥×४॥ इञ्च । पद्य संख्या १२६. दश धर्मों की कथायें हैं ।

षोडशकारण व्रतोद्यापन ।

रचयिता मुनि श्री ज्ञानसागर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३५. साइज १०×४॥ इञ्च ।

ह

हनुमंतकथा ।

रचयिता ब्रह्मरायमल । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६०. साइज ८॥×६ इञ्च । रचना संवत् १६१६. लिपि संवत् १७१६. भविष्यदत्त कथा से आगे ६७ वें पृष्ठ से यह कथा शुरू होती है ।

हनुमच्चरित्र ।

रचयिता श्री ब्रह्मजित भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १००. साइज ११×४॥ श्लोक प्रमाण २०००. लिपि संवत १८७४. प्रति नवीन है । श्री हनुमानजी का जीवन चरित्र वर्णित किया गया है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८४. साइज ११×५. इञ्च । लिपि संवत् १५७२.

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ८१. साइज ११॥×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ६७. साइज ११×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ६५. साइज ११×५ इञ्च ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ७३. साइज ११×४ इञ्च । लिपि संवत् १८२६. टौंक नगर में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति ने प्रतिलिपि बनाया ।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या १२२. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६८०. प्रति सुन्दर और स्पष्ट है ।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ६७. साइज ११॥×५ इञ्च । लिपि संवत् १६४६ अषाढ सुदी १३. लिपि-स्थान कोटा । ग्रन्थ के अन्त में है ।

हरिवंश पुराण ।

रचयिता श्री खुशालचन्द । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या २४८. प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४ अक्षर । रचना संवत् १७८०. लिपि संवत् १८६०.

हरिवंशपुराण।

मूलकर्त्ता आचार्य जिनसेन। भाषाकार श्री शालिवाहन। पत्र संख्या १२६. साइज ८×७ इञ्च। पद्य संख्या ३१६१. रचना संवत् १६९५. लिपिसंवत् १७५६. गुटका नं० ३०. ३१६१ पद्यों वाला हिन्दी भाषा का अपूर्व ग्रन्थ है।

हरिवंशपुराण भाषा।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी गद्य, पत्र संख्या ६६. साइज-११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ३८-४४ अक्षर। प्रति अपूर्ण है। ६६ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं। ब्रह्म जिनदास कृत हरिवंश को भाषा में अनुवाद है।

हरिवंशपुराण।

रचयिता भट्टारक श्रुतकीर्त्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४१७. साइज ६॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४५ अक्षर। प्रतिलिपि संवत् १५५२. ग्रन्थ के अन्त में पेज की प्रशस्ति ग्रन्थकार द्वारा लिखी हुई है।

हरिवंशपुराण।

रचयिता ब्रह्म जिनदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३५५. साइज १२×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३५-४५ अक्षर। प्रतिलिपि संवत १६६१. लिपिस्थान राजमहल नगर।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २६७. साइज ११॥×५ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २०. साइज १२॥×६ इञ्च। प्रति अपूर्ण। २० पृष्ठ से आगे के नहीं हैं।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या २२३. साइज १२॥×६॥ इञ्च। लिपि संवत् १८०३. लिपिस्थान जयपुर। प्रति सुन्दर है।

हरिवंशपुराण।

रचयिता श्री जिनसेनाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४६५. साइज १०॥×६ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २४०. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४२०. साइज १०॥×४॥ इञ्च। रचना काल शक संवत् ७०५. लिपिकाल संवत् १६४०.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या २५०. साइज १२॥×५ इञ्च। प्रतिलिपि संवत् १४६६.

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ३२५. साइज ६×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७४२. प्रशस्ति है। ग्रन्थ जीर्ण हो चुका है।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या २६६. साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८२७. प्रथम ५० पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या २६८. साइज ११×४॥ इञ्च। आदि के ८६ तथा अन्त के २६८ से आगे पृष्ठ नहीं हैं। ग्रन्थ जीर्ण शीर्ण हो गया है।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या २६७. साइज १३×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १५५५. प्रशस्ति है।

प्रति नं० ९. पत्र संख्या २६५. साइज ११×६ इञ्च। प्रशस्ति नहीं है।

हरिवंशपुराण।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २१६. साइज ११॥×६ इञ्च। लिपि संवत् १६७४. लिपिस्थान बीजवाड।

हरिषेणचरित्र।

भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ५४. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २८—३५ अक्षर। प्रतिलिपि संवत् १५८३.

हास्यार्णवनाटक।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७. साइज ११॥×४॥ इञ्च। नाटक बहुत छोटा है। लिपि संवत् १८८०. लिपिस्थान सवाई जयपुर। लिपिकर्त्ता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति।

हेम कौमुदी।

रचयिता आचार्य हेमचन्द्र। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ५५८. साइज १०×५॥ इञ्च। चन्द्रप्रभा नामक टीका सहित है। लिपि संवत् १७५६.

होलिका चौपई।

रचयिता श्री छीतर ठोलिया। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १९. साइज ८×४ इञ्च। पद्य संख्या १०२. रचना संवत् १६०७. लिपि संवत् १८११. लिपिस्थान जयपुर। लिपिकार पं० हेमचन्द्र।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज ११॥×५॥ इञ्च। रचना संवत् १६६०. लिपिकर्त्ता श्री दयेराम। लिपिस्थान मालपुरा (जयपुर)।

हेमविधानशांति ।

रचयिता श्री उपाध्याय क्षेम रत्न। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १३३. साइज १०॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३० अक्षर। लिपि संवत् १८६८. विषय-प्रतिष्ठा शास्त्र।

च

चन्द्रचूडामणि ।

महाकवि वादीभसिंह विरचित। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४३ साइज १०॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८३३

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४४. साइज-१२×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६५८.

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४०. साइज - १२॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १५६६. अन्तिम प्रशस्ति वाला पृष्ठ नहीं है।

चेत्रपालपूजा ।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या २. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १८३६. लिपिस्थान माधोपुर।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३. साइज ११॥×४॥ इञ्च।

त्र

त्रिलोक प्रज्ञप्ति ।

रचयिता श्री नेमिचन्द्राचार्य। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या १६७. साइज १२॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३-१७ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४२-५८ अक्षर। लिपि संवत् १५१६. अन्त में एक ७८ श्लोकों वाली प्रशस्ति है। ग्रन्थ अपूर्ण है। शायद दो ग्रन्थों को मिला कर एक ग्रन्थ कर दिया है अथवा ग्रन्थ के फट जाने से दूसरे पत्रों में लिखवाकर दिया है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३७. साइज १२×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण।

त्रिलोकप्रज्ञप्ति ।

भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ६३. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १५७६.

त्रिलोकसार पूजा ।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११२. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११

पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२-३८ अक्षर। ग्रन्थ में तीनों लोकों के चैत्यालय, स्वर्ग, विदेहक्षेत्र आदि सभी की पूजा दे रखी है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६७. साइज ११॥×५॥ इञ्च।

त्रिलोकसार।

रचयिता सिद्धान्त चक्रवर्त्ति श्री नेमिचन्द्राचार्य। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या २८. साइज ११×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७२५.

त्रिलोकसार दर्शन कथा।

रचयिता श्री खड्गसेन। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या १०८ साइज ११×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-४० अक्षर। रचना संवत् १७१३ चैत्र सुदी पंचमी। लिपि संवत् १७६८ पोष सुदी १३. श्री कुन्दकुन्दाचार्य कृत त्रिलोकसार का पद्यों में अनुवाद किया गया है। पद्य बहुत ही सरल भाषा में हैं। ग्रन्थ के अन्त में ग्रन्थकर्त्ता ने अपना परिचय दे रखा है। ग्रन्थ के कई पृष्ठ एक दूसरे से चिपके हुये हैं। ग्रन्थ की प्रतिलिपि उदयपुर में आचार्य श्री सकलकीर्त्ति के शासन काल में हुई थी।

त्रिलोकसार सटीक।

मूलकर्त्ता सिद्धान्त चक्रवर्त्ति श्री नेमिचन्द्राचार्य। टीकाकार श्री बहुश्रुताचार्य। भाषा प्राकृत-संस्कृत। पत्र संख्या ११४. साइज १०×४॥ इञ्च। विषय-तीनों लोकों का वर्णन।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८५. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १५६० भादवा बुदि ११. प्रथम पृष्ठ नहीं है। कितने ही पृष्ठ फट गये हैं।

त्रिलोकसार भाषा।

रचयिता श्री चतुर्भुज। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १६०. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३२-३८ अक्षर। रचना संवत् १७१३. लिपि सवत् १७८६. लिपिस्थान नरायणा (जयपुर) कवि ने अपना परिचय अच्छा दे रखा है।

त्रिंशच्चतुर्विंशतिपूजा।

रचयिता-आचार्य-शुभचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४८. साइज १०॥×४॥ इञ्च। विषय-तीस चौबीसियों की पूजा। लिपिस्थान-उदयपुर। प्रारम्भ के २ पृष्ठ नहीं हैं।

त्रिकाल चतुर्विंशति जिनपूजा ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । पत्र संख्या २२. भाषा संस्कृत । साइज ११।।×४।। इञ्च ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४८. साइज ११×४ इञ्च । लिपि संवत् १८१० प्रारम्भ के २ पृष्ठ नहीं है ।

त्रिकाल चौबीसी पूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १०. साइज १२×५।। इञ्च ।

त्रिपंचाशक्रियाव्रतोद्यापन ।

रचयिता श्री देवेन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२. साइज १०।।×४।। इञ्च । लिपि संवत् १६६८. लिपिकर्त्ता आ० श्री रत्नचन्द्रजी ।

त्रिफलादिविचार ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ३१. साइज ६।।×४।। इञ्च । विषय—आयुर्वेद ।

त्रिविक्रमशती ।

रचयिता श्री हर्ष । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २७. साइज १०।।×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२—३८ अक्षर । लिपि संवत् १६५८. प्रति सटीक है । टीका का नाम सुबुद्धि है ।

त्रिषष्टिस्मृतिपुराणसार ।

रचयिता पं० आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३६. साइज १०।।×४।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २४—३२ अक्षर । प्रशस्ति है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३६. साइज १०।।×४।। इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

त्रिषष्ठिशलाका ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३७. साइज १०×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

त्रिशती सूत्र ।

रचयिता श्रीधराचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२. साइज १०×४।। इञ्च । विषय—गणित प्रति अपूर्ण है । १२ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १६. साइज १०×४।। इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

त्रेपन क्रिया कोश ।

रचयिता श्री किशनसिंह । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १६५. साइज ८॥×६ इञ्च । रचना संवत् १७८४. प्रारम्भ के ७ पृष्ठ दीमक ने खा रखे हैं । कोश के अन्त में ग्रन्थकर्ता ने अपना परिचय भी दे रखा है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७४. साइज १०×६ इञ्च । लिपि संवत् १८२६.

त्रेपनक्रियाकोश ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४४. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४-५० अक्षर । प्रति अपूर्ण है अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

ज्ञ

ज्ञातृधर्मकथांग ।

भाषा प्राकृत । पृष्ठ संख्या ६०. साइज १२×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । ६१ से पहिले के पृष्ठ नहीं है । लिपि संवत् १६०७. लिपिकर्त्ता श्री अजयगणि ।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ६६. साइज १२॥×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

ज्ञानांकुश ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३. साइज ८॥×४ इञ्च । पद्य संख्या ४०.

ज्ञानार्णव भाषा ।

रचयिता श्री जिनदासगणि । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ४७. साइज १३×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ४२-४८ अक्षर । ग्रन्थ अपूर्ण है ।

ज्ञानार्णव ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७५. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३४-३६ अक्षर । लिपि संवत् १६६४.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११७. साइज ११×५ इञ्च ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६३. साइज १०॥×५ इञ्च ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ७०. साइज १२×६ इञ्च । लिपि संवत् १५०३. लिपिस्थान अजमेर । श्री ब्रह्म धर्मदास ने अपनी पुत्री हीरा के पढ़ने के लिये प्रति लिपि करवायी । ग्रंथ दीमक लग जाने से जीर्ण शीर्ण हो चुका है ।

श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर-शास्त्र भण्डार

चान्दनगांव (जयपुर, राजस्थान)

अ

१. अजितनाथ पुराण ।

रचयिता श्री अरुणमणि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४२८. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६१६.

२. अध्यात्मतरंगिणी ।

मूलकर्त्ता आचार्य सोमदेव । भाषाकार अज्ञात । भाषा–हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ५६. साइज १२×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४–४८ अक्षर । प्रति अपूर्ण है । ५६ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं । भाषा सरल तथा सुन्दर है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १५. साइज ११॥×५ इञ्च । केवल मूल भाग है ।

३. अनागारधर्मामृत ।

रचयिता महापंडित आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८५. साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १५८१ ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १३४. साइज ११×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १६१२ जेठ सुदी ५. प्रशस्ति है । प्रथम पृष्ठ तथा अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

४. अनंतव्रतोद्यापन ।

रचयिता श्री गुणचंद्र सूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६१. साइज ११॥×५॥ इञ्च । प्रति प्राचीन है ।

५ अनंतव्रतोधापनपूजा ।

रचयिता आचार्य श्री गुणचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४०. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रशस्ति है । लिपि स्थान जयपुर ।

६ अनुभव प्रकाश भाषा ।

भाषाकार—अज्ञात । पत्र संख्या ३७. साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १६८०. लिखावट सुन्दर है ।

७ अनेकार्थसंग्रह

भाषाकार अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ५४. साइज १२×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३८ ।

८ अंगुलास्तोत्र ।

पत्र संख्या ३. भाषा संस्कृत । उक्त स्तोत्र मार्कंडेय पुराण में से लिया गया है ।

६ अम्बिका कल्प ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४५. साइज ८॥×६ इञ्च । लिपि संवत् १६१२. लिपि कर्त्ता पं० चुन्नीलाल । विषय—मन्त्र शास्त्र ।

१० अरिष्टाध्याय ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १५५५. लिपि कर्त्ता पं० हरीसिंह ।

११ अर्हद्देव महाभिषेकविधि ।

रचयिता महा पंडित आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६४. साइज १०॥×५ इञ्च । लिपि संवत् १५०८ ।

१२ अवजद पाशा केवली ।

भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६. साइज १०×५॥ इञ्च । भव्यजीव को प्रश्नकर्त्ता मान करके प्रश्नों का जवाब दिया गया है । प्रति प्राचीन है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०. साइज १०×४॥ इञ्च । इस प्रति की हिन्दी शुद्ध है ।

प्रति नं० ३. भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १०×४ इञ्च । प्रति जीर्ण हो चुकी है ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ३. साइज ११॥×५॥ इञ्च ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ८. साइज १०×५ इञ्च।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ६. साइज १२×५।। इञ्च। प्रति पूर्ण है। जिल्द बंधी हुई है।

१३ अवधूतगीता।

संग्रह कर्ता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ७२. साइज ६×४ इञ्च। आठ स्तोत्र का संग्रह है।

१४ अष्टशती।

रचयिता श्री भट्टाकलंक देव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६०. साइज १४×७।। इञ्च। प्रति नवीन है।

१५ अष्ट सहस्री।

रचयिता आचार्य विद्यानन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३१६. साइज १२।।×५।। प्रती नवीन है। लिखावट सुन्दर है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १८२. साइज १४×७।। इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

आ

१६ आगमभाव सिद्ध पूजा।

रचयिता भट्टारक श्री भानुकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २१३. साइज १३×५। लिपि संवत् १८८० लिपि कर्त्ता नरेंद्रकीर्ति।

१७ आदित्यवार कथा।

रचयिता श्री गंगामल। भाषा हिन्दि पत्र। संख्या १४. साइज ६×५ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १५३. लिपि संवत् १८२७. लिपि स्थान वृंदावन। लिपि कर्त्ता पंडित उदयचंद। प्रशस्ति है।

१८ आदि पुराण।

रचयिता महाकवि पुष्पदंत। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या २६६. साइज ११।।×५ इञ्च। लिपि संवत् १५३७. लिपिकर्त्ता साधू मल्लू। लिपि कर्त्ता ने कतुवखां के शासन काल का उल्लेख किया है। प्रशस्ति दी हुई है। प्रति जीर्ण है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २८७. साइज ११।।×४।।। लिपि संवत् १५८५ लिपि कर्त्ता ने बादशाह बाबर का नामोल्लेख किया है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २६६. साइज १२×५।। इञ्च। लिपि संवत् १६१६. प्रशस्ति है। लिपिस्थान मलकपुर। लिपि कर्त्ता श्री भुवन कीर्त्ति।

इ

१९ इन्द्रध्वजपूजा ।

रचयिता श्री विश्वभूषण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७. साइज १०x४॥ इञ्च । प्रति पूर्ण है लेकिन जीर्णावस्था में है । अन्तिम पृष्ठ पर कागज चिपका चुका हुआ है जिससे अन्त की पंक्तियां पढने में नहीं आती ।

२० इन्द्रप्रस्थप्रबंध ।

लिपि कर्त्ता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७. साइज १०x४॥ इञ्च । विषय-इन्द्रप्रस्थ (देहली) पर शासन करने वाले राज वंशों का परिचय दिया हुआ है ।

२१ इन्द्रमाला परिधापन विधि ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २. साइज ६॥x४ इञ्च । उक्त पाठ प्रतिष्ठापाठ में से लिया गया है ।

२२ इष्टोपदेश सटीक ।

टीका कार कर्त्ता श्री विनयचन्द्र मुनि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३६. साइज ११x४ इञ्च । लिपि संवत् १५४१. लिपि कर्त्ता भट्टारक ज्ञान भूषण । लिपि स्थान गिरिपुर । लिपि कर्त्ता ने राजा गंगादास के नाम का उल्लेख किया है ।

उ

२३ उत्तरपुराण ।

रचयिता महाकवि पुष्पदंत । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ३२६. साइज ११॥x५ इञ्च । लिपि संवत् १५३६. लिपिकर्त्ता साधू मल्लू । लिपि कर्त्ता सुलतान बहलोल लोदी के शासन काल का उल्लेख किया है । प्रति सुन्दर है । लिपिकर्त्ता के द्वारा लिखी हुई प्रशस्ति भी है ।

२४ उत्तर पुराण ।

रचयिता गुणभद्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४८०. साइज ११॥x५ इञ्च । लिपि संवत् १६१०. ग्रन्थ कर्त्ता तथा लिपि कर्त्ता दोनों के द्वारा प्रशस्तियां लिखी हुई है । प्रति पूर्ण है ।

२५ उपदेश रत्नमाला ।

रचयिता आचार्य श्री सकल भूषण । भाषा संस्कृत पत्र संख्या ३६६. साइज ६॥x५ इञ्च । प्रति सटीक है । लिपि संवत् १७०२ चैत सुदी १४ दीतवार । प्रति पूर्ण है तथा लिखावट अच्छी है ।

२६ उपासकाध्ययन ।

रचयिता आचार्य प्रभाचन्द्र देव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १०×४ इञ्च । लिपि संवत् १५७८. लिपिकर्त्ता मुनि श्री नेमिचन्द्र ।

२७ उमास्वामि श्रावकाचार भाषा ।

भाषाकर्त्ता हिसार निवासी श्री हलायध । भाषा हिन्दी गद्य संख्या ७२. साइज ६×७॥ इञ्च ।

२८ उष्मभेद ।

रचयिता श्री महेश्वरकवि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १०×४ इञ्च । लिपि संवत् १८४८ पद्य संख्या ६५ । विषय—व्याकरण

ऋ

२९ ऋषिमंडल पूजा ।

रचयिता श्री गुणनन्दि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १८. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८५६. लिपि स्थान तक्षकपुर ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२. साइज ११×५ प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ के पृष्ठ नहीं है । किसी ग्रन्थ में से उक्त पूजा के अलग पृष्ठ निकाले लिये गये हैं ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १०. साइज १२×६ इञ्च । प्रति पूर्ण है ।

३० ऋषिमंडल स्तोत्र ।

लिपिकर्त्ता मुनि श्री मेघ विमल । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या २. पद्य संख्या ७६. प्रति सुन्दर नहीं है ।

ए

३१ एकाक्षर नाममालाका ।

रचयिता महाकवि अमर । पत्र संख्या ३. साइज १०×४ इञ्च । लिपि संख्या १५१४. चैत्र बुदि ७ बृहस्पतिवार ।

प्रति नं २. पत्र संख्या ७. साइज ११॥×५ इञ्च ।

क

३२ कथा कोश संग्रह ।

इस संग्रह में निम्न लिखित कथायें हैं—

नाम	रचयिता	भाषा	पत्र	रचना, सं०	लिपि संवत्
आदित्यवार कथा	×	हिन्दी	३		×
”	श्रुतसागर	”	१२	१७४६	१८३४
श्रावण द्वादशी कथा	×	”	८	×	×
षोडश कारण व्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	”	६	×	×
अष्टाह्निका व्रत कथा	पं० बुधजन	”	६	१८२१	×
अशोक रोहिणी कथा	श्रुतसागर	संस्कृत	५	×	×
रोहणी व्रत कथा	भानुकीर्ति	”	६	×	१८८८
अनंत व्रत पूजा	×	”	१७	×	×
अनंत चतुर्दशी व्रत कथा	×	”	१४	×	×
पंचमी व्रत कथा	हर्षकीर्ति	”	७	×	×
पुरंदर व्रत पूजा	×	”	४	×	×
पुष्पांजलि व्रतोद्यापन पूजा	पं० गंगादास	”	६	×	×
”	भ० रत्नकीर्ति	”	६	×	×
सुखसम्पत्ति गुण पूजा	×	”	४	×	×
”	भ० रत्नचन्द्र	”	५	×	१८८२
द्वादशी व्रतोद्यापन पूजा	भ० देवेन्द्रकीर्त्ति	”	२१	×	×
कोकिला पंचमी विधान	×	”	६	×	×
भक्तामर पूजा	भ० सोमकीर्त्ति	”	६	×	×
कल्याणक उद्यापन	भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति	”	२४	×	१८८७
पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा	”	”	४	×	”
मुक्तावली पूजा	×	”	४	×	×
आदित्य व्रतोद्यापन पूजा	भ० जयसागर	”	५	×	×

३३ कथा संग्रह भाषा।

भाषा कर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी गद्य। साइज ८×५ इञ्च. ६ कथाओं का संग्रह है। हिन्दी भाषा विशेष शुद्ध नहीं है।

३४ कर्मदहन पूजा।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या-१२. साइज ११।।×६ इञ्च।

३५ कर्मप्रकृति।

रचयिता श्री नेमिचन्द्राचार्य। भाषा प्राकृत। साइज १२×५ इञ्च। गाथा संख्या १६१. प्रति प्राचीन है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १६. साइज १०।।×५ इञ्च। लिपि संवत् १८७८. लिपि स्थान जयपुर। लिपि कर्त्ता ने महाराजा जयसिंह का उल्लेख किया है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १४. साइज १२×४।। इञ्च। लिपि संवत् १८४७. लिपि स्थान आमेर। लिपि कर्त्ता भट्टारक श्री सुरेन्द्र कीर्त्ति।

३६ कर्म विपाक विचार भाषा।

भाषाकार अज्ञात। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या १७३. साइज १०।।×५।। इञ्च। लिपि संवत् १६३१

३७ कल्याण मन्दिर प्रकटन विधि कथा।

भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १५. साइज ६×४ इञ्च। पद्य संख्या ६२. कल्याण मन्दिर स्तोत्र की किस प्रकार रचना हुई इसकी कहानी वर्णित है।

३८ कलशविधि।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १८६१ श्री चंपालालजी ने उक्त विधि की प्रतिलिपि करवायी। लिखावट सुन्दर है।

३९ कवि कर्पटी।

रचयिता कवि श्री शंखद्ध। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११. साइज १०।।×५ इञ्च। लिपि कर्त्ता भट्टारक श्री शक्रदेव। प्रति पूर्ण है।

४० कविराज चूड़ामणि।

रचयिता श्री विष्णुदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०. साइज १०×५ इञ्च। विषय शृंगार रस का वर्णन।

४१ क्रियाकलाप सटीक।

टीकाकार आचार्य प्रभाचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १३१. साइज ६||×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३१-३४ अक्षर। लिपि संवत् १५६२. लिपिकर्त्ता द्वारा प्रशस्ति लिखी हुई है।

४२ क्रियाकोष भाषा।

भाषाकार श्री पं० दौलतरामजी। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १४१. साइज ६×६ इञ्च। रचना सम्वत् १७६५. लिपि संवत् १८०७. प्रति नवीन है। प्रशस्ति है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६८. साइज ११||×५ इञ्च। लिपि संवत् १८५२. प्रति नवीन है।

४३ कुवलयानंद।

रचयिता श्री अप्पय दीक्षित। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६३. साइज १०||×४|| इञ्च। लिपि संवत् १८४६. लिपि कर्त्ता भट्टारक श्री सुरेंद्रकीर्त्ति।

४४ कौतुकरत्नावली।

संग्रहकर्त्ता जानकीदास। भाषा संस्कृत हिन्दी। पत्र संख्या ८७. साइज १२×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११. पंक्तियाँ तथा प्रति पंक्ति में ४७-५०. अक्षर। लिपि संवत् १८५४. अनेक मन्त्र विद्याओं के बारे में लिखा है।

ग

४५. गणितसार संग्रह।

रचयिता श्री महावीराचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८. साइज १४×६|| इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

गुटके

गुटका नं० १ पत्र संख्या २०. साइज ५×४. गुटके में केवल एकी भाव स्तोत्र तथा पृथ्वीभूषण विरचित पद्मावती स्तोत्र ही है।

गुटका नं० २. पत्र संख्या २० साइज ५×४ इञ्च। गुटके में केवल चक्रेश्वरी देवी सबीज स्तोत्र है।

गुटका नं० ३. संख्या ७५. साइज १०||×५|| इञ्च। प्रारम्भ के १५. पत्र नहीं हैं। गुटके में निम्न उल्लेखनीय सामग्री है।

१. योगसार
२. योगाभ्यास क्रिया
३. प्रश्नोत्तर माला

४. पिंड स्थान प्ररूपक
५. कल्याणालोचन   ब्रह्मारिजित कृत।
६. चतुर्विंशति स्तुति   मुनि श्री माघनन्दि।
७. तत्त्वार्थ सूत्र   प्रभाचन्द्राचार्य।

गुटका नं० ४ संग्रह कर्त्ता अज्ञात। पत्र संख्या २६६. साइज ६×४ इञ्च। प्रति नवीन है। प्रारम्भ के ७६ पृष्ठ नहीं है।

गुटके में निम्न सामग्री है—

१. पार्श्वनाथ जिन स्तोत्र   भाषा हिन्दी
२. शान्ति नाम   ,,   ,,
३. आदित्यवार कथा   ,,
४. समाधि मरण   ,,
५. बारह मासा   ,,
६. चौबीस ठाणा
७. चौबीस तीर्थंकर वर्णावली
८. धर्म विलास
९. भंगनाम

गुटका नं० ५. लिपिकर्त्ता श्री दोलतराम। भाषा हिन्दी। लिपि संवत् १८२२. पत्र संख्या २००. साइज ६×६ इञ्च। गुटके में निम्न सामग्री है—

१. क्रियाकोष   भाषा
२. श्रावकाचार कथा   ,,
३. षटलेखा   ,,

गुटका नं० ६. पत्र संख्या ५६. साइज ११×४ इञ्च। अनेक उपयोगी चर्चाओं तथा ज्ञातव्य बातों का संग्रह है। इनकी कुल संख्या ५१ है।

गुटका नं० ७. संग्रहकर्त्ता पं० मोहनलाल। पत्र संख्या ३५, साइज ८×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८७३, गुटके में निम्न विषय हैं—

१. आदित्यवार की कथा
२. पंच पर्वों की कथा

३. मुनिसुव्रत नाथ की स्तुति

४. द्रव्य संग्रह की २१ गाथाओं की टीका

गुटका नं० ८. लिपि कर्त्ता पं० जगदेवजी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १२७. साइज ४॥x५ इञ्च। लिपि संवत् १६३० बैशाख सुदी ५ गुरुवार। गुटके में सहस्रनाम स्तोत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, तथा अन्य स्तोत्र, और पूजायें आदि हैं।

गुटका नं० ६. लिपिकर्त्ता अज्ञात। भाषा संस्कृत-हिन्दी। पत्र संख्या ३८. साइज ६x४ इञ्च। गुटके में पंच मंगल (हिन्दी) ऋषि मंडल स्तोत्र, पद्मावती पूजा तथा बीस विद्यमान तीर्थंकर पूजा आदि हैं।

गुटका नं० १०. लिपिकर्त्ता पं० हेमराज। भाषा संस्कृत-हिन्दी। पत्र संख्या १२२. साइज ५x४ इञ्च। लिपि संवत् १७६२। गुटके में निम्न सामग्री है—

१. ऋषि मंडल स्तोत्र	संस्कृत
२. अनंत व्रत रासो	हिन्दी
३. अनंत व्रत पूजा	संस्कृत
४. पल्य विधान	हिन्दी
५. काका बत्तीसी	"
६. पद संग्रह	"
७. मेघकुमार की चौपाई	"
८. अनंत चतुर्दशी अष्टक (पूजा)	संस्कृत

गुटका नं० ११. लिपिकर्त्ता श्री नेमिचन्द्र। भाषा संस्कृत-हिन्दी। पत्र संख्या २२०. साइज ६x५ इञ्च। लिपि संवत् १६२६। गुटके में निम्न सामग्री है—

		रचनाकार
१. पंच परमेष्ठी गुण	भाषा हिन्दी	चन्द्रसागर
२. श्रावक क्रिया भाषा	"	×
३. ऋषीश्वर पूजा	"	×
४. त्रिकाल चतुर्विंशति कथा	"	×
५. त्रिलोक पूजा	"	सूरतराम
६. बारहखडी	"	×
७. पद संग्रह	"	×
८. पूजा स्तोत्र	"	×

गुटका नं० १२. लिपिकर्त्ता श्री सवाईराम। भाषा हिन्दी संस्कृत। पत्र संख्या १२५. लिपि संवत् १८४६. गुटके में स्तुति तथा पूजा के अतिरिक्त चौदह गुणस्थान चर्चा भी है।

गुटका नं० १३ लिपिकर्त्ता श्री सुखलाल। भाषा हिन्दी पत्र संख्या १२६. साइज ६×६ इञ्च। लिपि संवत् १८४०. गुटके में पूजा स्तोत्रों के अतिरिक्त कुछ पद व गीत भी है जिनकी रचना संवत् १७४६. है। ये भजन पंडित विनोदीलाल तथा भैया भगवतीदास आदि के हैं।

गुटका नं० १४. पत्र संख्या २१. भाषा हिन्दी। लिपि कर्त्ता श्री मुन्शीलाल। लिपि संवत् १६८३।

गुटके में निम्न रचनायें हैं—

१. चतुर्विंशति जिन पूजा
२. वर्द्धमान जिन पूजा
३. कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा
४. निर्वाण काण्ड भाषा
५. दुःखहरण विनती
६. समाधि मरण
७. स्तुति

गुटका नं० १५. लिपिकर्त्ता अज्ञात। पत्र संख्या २१८. भाषा संस्कृत। साइज ६×५ इञ्च। गुटके में कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है। केवल स्तोत्र पूजा पाठ आदि का ही संग्रह है।

गुटका नं० १६. लिपिकर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी संस्कृत। पत्र संख्या ३२६. साइज ७×६ इञ्च। गुटका प्राचीन है लेकिन कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है।

गुटका नं० १७. लिपिकर्त्ता संघी श्री चीहरजी। भाषा हिन्दी संस्कृत। पत्र संख्या ४०५. साइज ६×५ इञ्च। लिपि संवत् शाके १६७१ गुटके में पूजा, स्तोत्र आदि का ही संग्रह है।

गुटका नं० १८. लिपिकर्त्ता अज्ञात। पत्र संख्या १६. साइज ८×४ इञ्च। प्रति प्राचीन है। गुटके में भक्तामर, कल्याण मन्दिर स्तोत्र हैं। महाकवि बनारसीदास का कल्याण मन्दिर स्तोत्र है।

४६ गोम्मटसार जीवकाण्ड सटीक।

रचयिता नेमिचन्द्राचार्य। टीकाकार अज्ञात। भाषा प्राकृत। संस्कृत पत्र संख्या ६२. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रारम्भ में संस्कृत में प्रारम्भिक आचार्यों का परिचय दिया गया है। जीवकाण्ड के प्रथम अध्याय पर ही संस्कृत में विशद रूप से टीका की गयी है।

४७ गोम्मटसार जीवकण्डभाषा ।

भाष कार पं० टोडरमलजी । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ४०१. साइज ११×७ इञ्च । कर्णाटक लिपि से टीका लिखी गयी है । प्रारम्भ में टीकाकार ने अपना विस्तृत परिचय दिया है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५६५. साइज ११×७ इञ्च । केवल ४०२ से ५६५ तक के पृष्ठ हैं । यह कर्मकांड की प्रति है ।

४८ गोम्मटसार भाषा ।

भाषाकार पंडित टोडरमलजी । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ६६४. साइज १३×८। लिपि स्थान १८८२. पंडित घासीरामजी के पढने के लिये उक्त ग्रन्थ की प्रति लिपि की गयी । प्रति पूर्ण है । लिखावट सुन्दर है ।

४६ गोम्मटसार वृत्ति ।

भाषा संस्कृत-प्राकृत । पत्र संख्या २५५. साइज ११॥×५॥ इञ्च । गाथाओं की संस्कृत में टीका है । लिपि संवत् १७४४. लिपि स्थान श्री संग्रामपुर । १४७ से १८६ तक के पृष्ठ नहीं है ।

घ

५० घंटाकर्ण कल्प ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६. साइज ६×५ इञ्च । प्रति जीर्ण हो गयी है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४. साइज १०×४ इञ्च । संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद है । लिपि संवत् १८८६ ।

च

५१ चतुर्गति वर्णन ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ८. साइज ६×५ इञ्च । गोम्मटसार मूलाचार आदि शास्त्रों के आधार पर चारों गतियों के सुख दुख का वर्णन किया गया है ।

५२ चतुर्भंगी वर्णन ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या २१३. प्रति अपूर्ण है पृष्ठ संख्या २०८ से २१२ तक के पृष्ठ नहीं है । गुटका नं० २ ।

५३ चतुर्दशी स्तोत्र ।

भाष कार श्री रतनलाल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या २२. साइज १२×८ इञ्च । लिपि संवत् १६८६ प्रति नवीन है । लिखावट सुन्दर है ।

५४ चतुर्विंशति जिन पूजा ।

रचयिता श्री बख्तावरसिंह । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६७. साइज ११×६ इञ्च । लिपि संवत १९३२ जेठ बुदि ३. प्रति जीर्णावस्था में है । अन्त में कवि ने अपना अच्छा परिचय दिया है रचना संवत् १८९२ है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६६. साइज १२×७ इञ्च लिपि संवत् १९०७. प्रथम पृष्ठ नहीं है।

५५ चतुर्विंशति जिन पूजा ।

रचयिता कविवर श्री वृन्दावन । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ५५ साइज १२×८ इञ्च । लिपि संवत १९२२. अन्त में लिपि कर्त्ता ने अपना परिचय दिया है । प्रति पूर्ण है। लिखावट सुन्दर है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५७. साइज ११×७ इञ्च । लिपि संवत् १९३५. ११ वां पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४४. साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८८८. लिपि स्थान जयपुर। लिपिकर्त्ता वसंतरावजी ।

५६ चतुर्विंशति जिन पूजा ।

रचयिता श्री सेवाराम । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ५५. साइज ६॥×५॥ इञ्च । रचना संवत् १८५४. लिपि संवत् १८७१. प्रति पूर्ण है । कवि ने अन्त में अपना परिचय भी दिया है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४२. साइज ११॥×५ इञ्च । प्रति पूर्ण है । लिखावट सुन्दर है।

५७ चतुर्विंशति जिन पूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४२. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रथम पृष्ठ नहीं है । भाषा सुन्दर तथा सरल है ।

५८ चतुर्विंशति जिन स्तुति सटीक ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४१. साइज १०॥×४॥ इञ्च । वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति है तथा उसकी वृहद टीका भी है।

५९ चतुर्विंशति पूजा ।

रचयिता श्री चौ० रामचन्द्र । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६५. साइज १०×६॥ इञ्च । लिपि संवत् १८५९. लिपि कर्त्ता पं० मिश्रलालजी । प्रति पूर्ण है ।

प्रति नं० पत्र संख्या ६५. साइज १०×७ इञ्च । लिपि संवत् १९३५. प्रति पूर्ण है ।

६० चंदनो चरित्र ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३२. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३१. भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति ने ग्रंथ की प्रतिलिपि बनायी है ।

६१ चंद्रप्रभकाव्य ।

रचयिता श्री वीरनन्दि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४५. साइज १०॥×५ इञ्च । प्रति नवीन है । लिखावट सुन्दर है ।

प्रति नं० पत्र संख्या ६३. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति प्राचीन है ।

६१ चरचसार ।

रचयिता पंडित शिवजीलालजी । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या १३६. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां हैं तथा प्रति पंक्ति में २४-२८ अक्षर । प्रति विशेष प्राचीन नहीं है ।

६२ चरचाशतक ।

भाषाकार श्री द्यानतरायजी । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४२२. साइज १०॥×७॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३२ अक्षर । मध्य भाग के कुछ पत्र गल गये हैं । रचना संवत् १८४२. लिपि संवत् १९३७. श्री बिहारीलाल के सुपुत्र श्री हीरालाल के पढने के लिये ग्रन्थ की प्रतिलिपि तैय्यार की गयी ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५४. साइज ७५. इञ्च । लिपि संवत् १९५६ ।

६३ चरचासमाधान ।

रचयिता पं० भूधरदासजी । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ५८. साइज १२×६॥ इञ्च । लिपी संवत् १८२०. ग्रन्थ के अन्त में भाषाकार ने अपना परिचय भी दे रखा है ।

६४ चाणक्यनीति शास्त्र ।

लिपिकर्त्ता विद्यार्थी जीवराम । पत्र संख्या २७. साइज ६×५ इञ्च । लिपि संवत् १८८०. केवल द्वितीय अध्याय से लेकर अष्टम अध्याय तक है ।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या १६. साइज ७×४॥ इञ्च । केवल तीसरा अध्याय है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १६. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

६५ चिन्तामणि पत्र ।

रचयिता पं० दामोदर । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १६. साइज १०×४ इञ्च । विषय—मंत्र शास्त्र । अजैन मंत्र शास्त्र है ।

६६ चौबीस ठाणा ।

रचयिता श्री नेमिचन्द्राचार्य । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या ३६. साइज १२×५ इञ्च । लिपि संवत्

१८४७. भट्टारक श्री सुरेंद्र कीर्त्ति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनायी। प्रति सटीक है। कठिन शब्दों का अर्थ संस्कृत में दे रखा है।

ज

६७ जगसुन्दरी प्रयोगमाला।

रचयिता श्री मुनि यशः कीर्त्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ११२. साइज ११×५ इञ्च। विषय वैद्यक।

६८ जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति।

रचयिता—अज्ञात भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या २०. साइज ११॥×४॥ इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४६ ५० अक्षर। लिपि संवत् १४६२, माह सुदी १५. लिपि कर्त्ता ने प्रशस्ति लिखी है। लिपि स्थान तक्षकगढ। लिपि कर्त्ता ने सोलं की वंशोत्पन्न राज सेढूनदेव के राज्य का उल्लेख किया है।

६९ जम्बूस्वामीचरित्र।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १०६. साइज ११×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६३०. लिपि स्थान जयपुर। ग्रन्थकर्त्ता और लिपिकार दोनों ही के द्वारा की प्रशस्तियां लिखी हुई हैं। प्रति पूर्ण है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २०६. साइज १०॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १६६२. लिपि कर्त्ता ने आमेर के महाराजा मानसिंह का उल्लेख किया गया है। अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

७० जलयात्राविधि।

पत्र संख्या २. भाषा संस्कृत। साइज ११॥×५ इञ्च। प्रति प्राचीन है।

७१ जातककर्मपद्धति।

रचयिता श्री श्रीपति। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या ५. साइज ६॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६३७.
प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज ६॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६४५.

७२ जिनांतर।

लिपिकर्त्ता पं० चिंतामणी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. लिपि संवत् १७०८. विषय तीर्थंकरों के समयान्तर आदि का वर्णन किया।

७३ जिनबिंब प्रवेशविधि ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १. साइज १०×४ इञ्च । उक्त विधि प्रतिष्ठापाठ में से ली गयी है ।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ११. साइज १०×४ इञ्च । प्रति पूर्ण है । बिम्ब प्रतिष्ठा विधि भी है ।

७४ जिनयज्ञकल्प ।

रचयिता महा पंडित आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १३४. साइज ११×४ इञ्च । लिपि संवत् १५६४ सावण सुदी ६. लिपि कर्त्ता ने एक अच्छी प्रशस्ति लिखी है । मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र के पढने के लिये ग्रन्थ की प्रतिलिपि गयी । प्रति की जीर्णावस्था में है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८६. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६१०. मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र के शिष्य श्री नेमिचन्द्राचार्य ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनायी ।

७५ जीवंन्धर चरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२५. साइज १२॥×६ इञ्च । लिपि संवत् १८६२. प्रशस्ति है ।

७६ जैनलोकोद्धारक तत्वदीपक ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या २१. साइज १२×६ इञ्च । विषय-धार्मिक । प्रति नवीन है ।

७७ जैनविवाहविधि ।

रचयिता पंडित तुलसीराम । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १७. साइज १२×४॥ इञ्च । पंडितजी ने लिखा है कि विवाह विधि को अन्य जैनाजैन विधियों को देखने के पश्चात् बनाया गया है ।

७८ जैनविवाहविधि ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ७२. साइज ६×४ इञ्च । प्रति सुन्दर है । जिल्द बंधी हुई है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज ११॥×५॥ इञ्च । विवाह विधि संक्षेप में है ।

७९ जैनशान्तिमंत्र ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५. साइज १०॥×३ इञ्च । प्रति पूर्ण है । अन्तिम पृष्ठ के एक भाग पर पर कुछ कागज चिपका हुआ है ।

८० जैन सिद्धान्त उद्धरण ।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७. साइज १०॥×४ इञ्च । अजैन ग्रन्थों में जैन सिद्धान्त के उद्धरणों को दिखलाया गया है ।

८१ ज्योतिषसारसंग्रह ।

रचयिता श्री मुंजादित्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३८. लिपिकर्त्ता भट्टारक श्री सुरेंद्रकीर्त्ति ।

ण

८२ णमोकार पूजोद्यापन ।

रचयिता श्री छत्रराम । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५. साइज ११×५ इञ्च । प्रशस्ति दी हुई है ।

त

८३ तत्त्वार्थसूत्र ।

रचयिता श्री उमास्वामी । भाषा संस्कृत । भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति ने उक्त शास्त्र की प्रति लिपि बनायी । प्रति सुनहरी अक्षरों में लिखी हुई है । शास्त्र के दोनों ओर के कागजों पर सुन्दर वृक्षों के चित्र भी हैं ।

८४ तत्त्वार्थसूत्र भाषा ।

भाषाकार अज्ञात । पत्र संख्या ७२. साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३–३६ अक्षर । भाषा सरल तथा सुन्दर है । लिपि संवत १६१२. आसोज बुदी १. लिपि कर्त्ता पं० शालगराम ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६०. साइज १०॥×६॥ इञ्च । प्रति नवीन है । लिपि संवत् १६७५ ।

८५ तत्त्वार्थसूत्रवृत्ति ।

वृत्तिकार श्री श्रुतसागर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६१. साइज ११॥×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४–४७ अक्षर । लिपि संवत् १७४०. लिपिकर्त्ता बाबा सांवलदास । पांडे श्री लक्ष्मीदास ने ग्रंथ की प्रतिलिपि बनायीं । प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४५. साइज १०॥×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । पंचम अध्याय तक ही ग्रंथ है ।

८६ तत्त्वार्थसूत्रवृत्ति ।

वृत्तिकार श्री योगदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्य ८२. साइज ११॥×५ इञ्च । सूत्रों का अर्थ सरल

संस्कृत भाषा में दे रखा है। प्रति प्राचीन है। अन्त में वृत्तिकार ने अपना परिचय भी दे रखा है।

प्रति नं० २. वृत्तिकार भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। पत्र संख्या ७४. साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८३०. संस्कृत पद्यों में सूत्रों का अर्थ दे रखा है।

८७ तत्त्वज्ञान तरंगिणी।

रचयिता भट्टारक श्री ज्ञान भूषण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २८. साइज १०॥×६॥ इञ्च। लिपि संवत् १८०७. लिपि स्थान उदयपुर।

८८ तीर्थवंदना।

भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ५. साज ६×६ इञ्च। प्रायः सभी तीर्थों का स्तवन किया गया है।

८९ तीर्थंकरस्तोत्र।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २. साइज १०॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १६१६।

९० तेरह द्वीप पूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २६५. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६३४. लिपि कर्त्ता नन्दराम। लिपि स्थान जयपुर। प्रति नवीन है।

द

९१ दत्तात्रयपंत्र।

भाषा संस्कृत पत्र संख्या ३६. साइज६×३ इञ्च। प्रति पूर्ण है। विषय-मंत्र शास्त्र है।

९२ दंडक की चौपई।

भाषाकार पं०दौलतराम। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ६०. साइज ६॥×४ इञ्च। प्रति नवीन है अन्तिम पत्र पर एक कागज चिपका हुआ है।

९३ दर्शनकथा।

रचयिता पं० भारमल्ल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या २५. साइज १३×८॥ इञ्च। प्रति नवीन है। लिपि सुन्दर है।

९४ दशलक्षण कथा।

रचयिता श्री लोकसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११. साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत् १८६०।

९५ द्रव्य संग्रह सटीक।

टीकाकार श्री ब्रह्मदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ९३. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर। प्रति प्राचीन पूर्ण है।

९६ दान कथा।

रचयिता पं० भारमल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ४४. साइज १०॥×५ इञ्च। प्रती नवीन है।

ध

९७ धन्यकुमारचरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४८. साइज १२×४॥ इञ्च। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४७. साइज ८॥×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

९८ धन्यकुमारचरित्र।

मूलकर्त्ता ब्रह्मनेमिदत्त। भाषाकर्त्ता श्री खुशालचन्द। भाषा-हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ३७. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३२ अक्षर। भाषा सरल और अच्छी है। अन्त में भाषाकार ने अपना परिचय भी दे रखा है। सम्पूर्ण पद्य संख्या ८३९ है।

९९ धर्मकुण्डलि भाषा।

भाषाकर्त्ता श्री बालमुकुन्द। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ४०. साइज १०×८ इञ्च। रचना संवत् १९२१. लिपि संवत् १९३०।

१०० धर्मचरचा वर्णन।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी (गद्य) पत्र संख्या २०. साइज १०॥×५ इञ्च। विषय धार्मिक चर्चाओं का वर्णन। लिपि संवत् १९२२. भाषा विशेष अच्छी नहीं है।

१०१ धर्म चक्रपूजनविधान।

रचयिता श्री यशोनन्दिसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २५. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है। अन्त में आचार्य धर्म भूषण को नमस्कार किया गया है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १७. साइज ११×५॥ इञ्च। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है।

१०२ धर्मपरीक्षा ।

रचयिता श्री जगद्दत्त गौड़ । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १२५. साइज ६॥×६ इञ्च । रचना स्थान वामपुर । प्रति नवीन है ।

१०३ धर्मपरीक्षा भाषा ।

रचयिता श्री मनोहरलाल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ८६. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १८७६. भाषाकर्त्ता ने एक बृहत् प्रशस्ति दे रखी है ।

१०४ धर्मप्रबोध ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या २८. साइज ६×४॥ इञ्च । विषय—स्याद्वाद सिद्धान्त का समर्थन । अनेक जैनाजैन ग्रन्थों के उदाहरणों द्वारा यह सिद्ध किया है कि स्याद्वाद सिद्धान्त को अपनाना कल्याण मार्ग की पकड़ना है । भाषा अच्छी है । प्रति प्राचीन मालूम देती है । लिपि संवत् १६१३. प्रथम पृष्ठ नहीं है ।

१०५ धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचार ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८८. साइज १०॥×५ इञ्च । श्लोक संख्या १५०० । लिपि संवत् १६४५ ।

१०६ धर्मरत्नाकर ।

रचयिता श्री जयसेन सूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२३. साइज ११×४ इञ्च प्रशस्ति है ।

१०७ धर्मशर्माभ्युदय सटीक ।

टीकाकार पंडित यशःकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २२६. प्रारम्भ के १५६ पृष्ठ नहीं हैं । अन्तिम पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २१६. साइज ११×५ इञ्च । प्रति पूर्ण तथा प्राचीन है । टीका का नाम संदेह ध्वांतदीपिका ।

१०८ धर्मसार ।

रचयिता श्री पंडित शिरोमणिदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६६. साइज १०×४॥ इञ्च । रचना संवत १७३२. लिपि संवत् १६१७. दशधर्मों के अतिरिक्त अन्य सिद्धान्तों का भी वर्णन है । प्रति पूर्ण है । लिखावट सुन्दर है ।

१०६ धर्मोपदेश श्रावकाचार।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३०. साइज १०|×४|| इञ्च। लिपि संवत् १७४८ लिपिस्थान मालपुरा।

न

११० नंदीश्वरवृहत्पूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६७. साइज १०×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ और अन्त के पृष्ठ नहीं हैं।

१११ नयचक्रवृत्ति।

वृत्तिकार भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४२. साइज १२×६ इञ्च। प्रति पूर्ण है।

११२ नवग्रहपूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज ११||×५|| इञ्च। पूजा में काम आने वाली सामग्री की सूची भी दे रखी है। नवग्रहों का एक चित्र भी है।

११३ नवग्रहपूजा विधान।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पृष्ठ संख्या १२. साइज १०||×७|| इञ्च। प्रति पूर्ण है।

११४ नागकुमार पंचमीकथा।

रचयिता श्री मल्लिषेणसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६. साइज १०||×४|| इञ्च।

११५ नागश्री की कथा।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १४. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १८७३. रात्रिभोजन त्याग का उदाहरण है।

११६ नामावलि।

रचयिता श्री धनंजय। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या २७. साइज ६×४ इञ्च। लिपि संवत् १८०४ विषय-शब्दकोष।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३७. साइज ११||×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

११७ न्यायदीपिका ।

रचयिता धर्मभूषणाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३१. साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत् १७१३. लिपिस्थान जयपुर।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६७. साइज ११।।×५ इञ्च। प्रति नवीन है। अक्षर बहुत मोटे २ लिखे हुये हैं।

११८ निशिभोजनकथा ।

र० पं० भूरामल। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २८. साइज ६×४।। इञ्च। लिपि संवत् १६४६. लिखावट सुन्दर है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १७. साइज १०।।×४।। इञ्च।

११६ नीतिसार ।

रचयिता श्री इन्द्रनन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज १०।।×४।। इञ्च। ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित है।

१२० नेमिनाथपुराण ।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १७४. साइज १०×४।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर। ग्रन्थकर्त्ता तथा लिपिकर्त्ता दोनों ने ही प्रशस्ति लिखी है। लिपिकर्त्ता ने तीन पृष्ठ की प्रशस्ति लिखी है। लिपि संवत १७०३ फागुण सुदी पंचमी।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १५५. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १८६८. लिपि कर्त्ता पं० उदयलाल।

१२१ नेमीश्वर गीत ।

रचयिता श्री वल्हव। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १५. साइज १०×४।। इञ्च। लिपि संवत् १६५०. रचना प्राचीन है। भाषा हिन्दी से बहुत कुछ मिलती जुलती है।

प

१२२ पद संग्रह ।

इस संग्रह में निम्न रचनायें हैं—

(१) वीर भजनावलि। रचयिता श्री देवचन्द्र। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ६. साइज ६।।×४ इञ्च।

(२) अढाई रासा। रचयिता श्री विनयकीर्त्ति। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४. साइज ६×४ इञ्च। लिपि कर्त्ता अतरलाल।

(३) राजुल पच्चीस। रचयि॥ विनोदीलाल। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ११. साइज ६×४ इञ्च। लिपि कर्त्ता यति गुमलीराम।

(४) तीन स्तुति। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ८.

(५) षट् रस व्रत कथा। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४.

(६) नरक दुःख वर्णन। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४. साइज ६×५ इञ्च।

(७) चौबीस बोल। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४. लिपिकर्त्ता पं० बखतराम।

(८) कपट पच्ची। रचयिता श्री रायचन्द्र। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १.

(९) उपदेश पच्चीसी। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३.

(१०) सुभाषित दोहा। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३. पद्य संख्या ७५.

(११) नौरत्न। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३. साइज ६×४ इञ्च।

(१२) प्रतिमा बहत्तरी। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १३. रचयिता पं० शूलराम। रचना संवत् १८०२.

(१३) साधु वंदना। रचयिता महाकवि बनारसीदास। पत्र संख्या १०.

(१४) शिक्षा पद। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १०. साइज ८×३॥ इञ्च।

(१५) त्रयोदशमार्गी रासा। रचयिता श्री धर्मसागर। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १०. लिपि कर्त्ता श्री गंगाबक्स। भाषा सुन्दर है।

१२३ पद्मनन्दि श्रावकाचार।

रचयिता श्री पद्मनन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७१. साइज ११×४ इञ्च। लिपि संवत् १५८६. प्रशस्ति है।

१२४ पद्मपुराण भाषा।

भाषाकार पं० दौलतरामजी। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ५३३. साइज १२×७ इञ्च। रचना संवत् १८२३. लिपि संवत् १९७२. प्रारम्भ के ३६८ पृष्ठ नहीं हैं।

१२५ पद्मपुराण।

रचयिता श्री रविषेणाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८५८. साइज १६×६ इञ्च। लिपि संवत् १७४७. प्रशस्ति है। पत्र २०० से ४०७ तक नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५८६. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १६६८ माघ बुदी तेरस। प्रति सटीक है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ८२६ साइज १०×५ इञ्च। रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। लिपि संवत् १६१७. प्रशस्ति है। उक्त पुराण दो वेष्टनों में बंधा हुआ है।

१२६ पद्मपुराण।

भाषाकार अज्ञात। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या २०६. साइज ११॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ५३-५६ अक्षर। प्रति अपूर्ण है। २८ वें पर्व से आगे नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४५७. साइज १०॥×७॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

१२७ पद्मावती स्तोत्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ३. साइज १०×५ इञ्च। पद्य संख्या ३५.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४. साइज ६॥×५ इञ्च। प्रति पूर्ण है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७. साइज १०॥×४॥ इञ्च। उद्यापन की विधि भी दे रखी है।

१२८ परमात्मप्रकाश।

रचयिता आचार्य श्री योगीन्द्रदेव। भाषा प्राकृत। पृष्ठ संख्या २७. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर। लिपि संवत् १६२० कार्त्तिक सुदी १२ बृहस्पतिवार। आचार्य श्री हेमकीर्त्ति के सदुपदेश से सेठ भोजाणी के पढने के लिये ज्योतिषाचार्य श्री महेश ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनायी। ग्रन्थ पूर्ण तथा सुन्दर है।

१२९ परमात्म प्रकाश।

भाषाकार—पं० दौलतरामजी। पत्र संख्या २८६. साइज १०॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३१-३५ अक्षर। मूल ग्रन्थ की टीका श्री ब्रह्मदेव ने संस्कृत भाषा में बनायी तथा उसी टीका के आधार पर पं० दौलतरामजी ने हिन्दी भाषा में सरल अर्थ लिखा। लिपि संवत् १८८१ आषाढ सुदी ३ बृहस्पतिवार। दीवाण श्री जयचन्दजी छावड़ा के सुपुत्र श्री ज्ञानचन्द्र तथा उनके सुपुत्र चोखचन्दजी पंन्नालालजी ने उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनवायी।

प्रति नं० २. साइज ११॥×८ इञ्च। पत्र संख्या १२३. लिपि संवत १६१३. लिपि स्थान—जयपुर। श्री धनजी पाटणी साली वालों ने उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनवायी।

१३० पंचकल्याण।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २६. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

१३१ पंचपरमेष्ठि पूजा।

रचयिता श्री यशोनन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५६. साइज ११।।×५।। इञ्च। लिपि संवत् १८६८. प्रशस्ति है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३५. साइज १०।।×५ इञ्च। लिपि संवत् १६२०.

१३२ पंचम रोहिणी पूजा।

रचयिता श्री केशवसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज ११।।×५।। इञ्च। लिपि संवत् १८३६. लिपिकर्त्ता भट्टारक सुरेन्द्र कीर्त्ति।

१३३ पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेंद्रकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज १०।।×५ इञ्च।

१३४ पंचमुखीहनुमानकवच।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २. साइज १५×७।। इञ्च। विषय—मन्त्र शास्त्र। प्रति पूर्ण है।

१३५ पंचस्तवनावचरि।

लिपिकर्त्ता श्री जेठमल। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३५. साइज १०×६ इञ्च। लिपि संवत् १६०६. भक्तामर, कल्याणमन्दिर, एकीभाव, विषापहार, भूपालचतुर्विंशति स्तवनों का संग्रह है।

१३६ पंचास्तिकाय।

भाषा प्राकृत। पृष्ठ संख्या ७६. साइज १२×५ इञ्च। प्रति जीर्ण हो चुकी है। प्रति सटीक है।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ५१. साइज ११×४।। इञ्च। लिपिकर्त्ता श्री चन्द्रसूरि।

१३७ पंचसंग्रह।

रचयिता अमितगत्याचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६६. साइज ११×४।। इञ्च। लिपि संवत् १५०७ लिपिस्थान गोपाचलदुर्ग। लिपिकर्त्ता ने महाराजाधिराज श्री डूंगरसिंह का उल्लेख किया है। प्रति पूर्ण है।

१३८ प्रबोधसार।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३२. साइज ६×३।। इञ्च। विषय—श्रावकाचार। प्रति पूर्ण है।

१३९ प्रतापकाव्य ।

रचयिता भट्टारक श्री शक्रदेव । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ११६. साइज १०×५ इञ्च । लिखावट सुन्दर है । जिल्द बंधी हुई है ।

१४० प्रतिष्ठा पाठ सामग्री विधि ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६३. मंडलाचार्य श्री चन्द्रकीर्त्ति के उपदेश से प्रतिलिपि की गयी । प्रति में अनेक चित्र भी हैं तथा मन्त्रों के आकार भी दे रखे हैं ।

१४० प्रतिष्ठासार ।

रचयिता आचार्य वसुनन्दि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २७. साइज १०।।×४ इञ्च । लिपि संवत् १५१७ जेठ बुदी ६ सोमावार । प्रति की दशा अच्छी है ।

१४१ प्रद्युम्न चरित्र ।

रचयिता श्री महासेनाचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०४. साइज १०×४।। इञ्च । लिपि संवत् १५४८. लिपिकर्त्ता मुनि रत्नकीर्त्ति । प्रशस्ति है । दश सर्ग हैं ।

१४२ प्रद्युम्नचरित्र ।

रचयिता श्री म० सेनाचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०४. साइज ११×४।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३६ अक्षर । सर्ग संख्या १४. लिपि संवत् १५१८. लिपिस्थान टोडा । ग्रन्थ पूर्ण है लेकिन जीर्णावस्था में है ।

१४३ प्रद्युम्नचरित्र ।

रचयिता आचार्य श्री सोमकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २१५. साइज १०।।×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-३८ अक्षर । लिपि संवत् १६११. ग्रन्थकार तथा लिपिकार दोनों के द्वारा ही लिखी हुई प्रशस्तियां हैं । ग्रन्थ की हालत विशेष अच्छी नहीं है ।

१४४ प्रमेयरत्नमाला ।

रचयिता श्री माणिक्य नन्दि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६. साइज १२।।×५ इञ्च । लिपि संवत् १५७१. प्रशस्ति है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २१. साइज ११।।×५।। इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

१४५ प्रश्नोत्तर श्रावकाचार ।

रचयिता श्री बुलाकीदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १८६. साइज १०।×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

१४६ प्रश्नोत्तर श्रावकाचार ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२२. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १६७२. प्रति पूर्ण है । लिपिकर्त्ता द्वारा लिखी हुई प्रशस्ति है ।

१४७ प्रायश्चित ग्रंथ ।

रचयिता श्री इंद्रनन्दि । भाषा प्राकृत । पृष्ठ संख्या १३. साइज ११।।×४।। इञ्च । लिपि संवत् १८४६. लिपिस्थान जयपुर ।

१४८ प्रायश्चित विनिश्चय वृति ।

वृत्तिकार श्री नन्दिगुरु । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६६. साइज १२×५ इञ्च । लिपि संवत् १८२६. ग्रन्थ श्वेताम्बर सम्प्रदाय का है । लिपिस्थान जयपुर ।

१४९ प्रायश्चित शास्त्र ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७. साइज १०×४।। इञ्च । पद्य संख्या ६.

१५० प्रायश्चितविधान ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७. साइज ६×४ इञ्च । लिपि संवत् १६४५. भट्टारक श्री महेंद्रकीर्त्ति जी ने अपने पढने के लिये उक्त विधान की प्रतिलिपि की थी । पद्य संख्या ८८.

१५१ पाण्डव पुराण ।

रचयिता पंडित भूधरदासजी । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ११३. साइज १०×७। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६-३२ अक्षर । रचना संवत् १७८९. लिपि संवत् १६१८. प्रति पूर्ण है तथा शुद्ध है । लिपिकर्त्ता श्री छीतरमल । प्रशस्ति है ।

१५२ पाण्डव पुराण ।

रचयिता श्री पं० बुलाकीदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ३२४. साइज ११×५।। इञ्च । लिपि संवत् १६०४. प्रति नवीन तथा सुन्दर है ।

१५३ पार्श्वनाथ चरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १०६. साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८०३. लिपि स्थान जयपुर । महाराजा श्री ईश्वरीसिंहजी के शासनकाल में श्री घनराज जी ने उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी ।

१५४ पार्श्वनाथ पुराण ।

रचयिता पं० भूधरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ६६. साइज १२×५॥ इञ्च । रचना संवत् १७८९. लिपि संवत् १८८८. लिपि स्थान उणियारा । श्री मह्याचंदजी उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी ।

१५५ पार्श्वनाथरासो ।

रचयिता ब्रह्मवस्तुपाल । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ३६. साइज १०×४॥ इञ्च । रचना संवत् १६५६. प्रशस्ति है । प्रति नवीन है ।

१५६ पिंडस्थान ध्यान निरूपण भाषा ।

मूलकर्त्ता आचार्य शुभचन्द्र । भाषाकार अज्ञात । पत्र संख्या ११. साइज ६॥×३॥ इञ्च । उक्त प्रकरण ज्ञानार्णव में से लिया गया है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३१. साइज ११×५ इञ्च । ध्यान का वर्णन संस्कृत में है । प्रति अपूर्ण है ।

१५७ पुण्याश्रव कथाकोष ।

रचयिता श्री रामचन्द्र मुमुक्षु । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५७. साइज ११॥×५ इञ्च । प्रशस्ति है । प्रति पूर्ण तथा नवीन है ।

१५८ पुण्यास्रवकथाकोष ।

भाषा हिन्दी । पृष्ठ संख्या ७७. साइज ११×६८ इञ्च । लिपि संवत् १८५६. लिपि स्थान जयपुर ।

१५९ पुण्याश्रव कथाकोश ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र सख्या २८६. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८२८. लिपिकर्त्ता श्री चैनराम ।

१६० पुरुषपरीक्षा ।

रचयिता श्री विद्यापति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७८. साइज ११×४ इञ्च । कथा साहित्य की

तरह विषय का वर्णन किया गया है। लिपि संवत् १८६०. चार परिच्छेद हैं। ग्रन्थ पूर्ण है। चाणक्य और राक्षस के सन्देशों का आदान प्रदान किया गया है। गद्य भाषा में होने से ग्रन्थ का विशेष महत्त्व है।

१६१ पुरुषार्थानुशासन।

रचयिता श्री गोविन्द। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७३. साइज ११×५ इञ्च। प्रारम्भ के तीन पृष्ठ नहीं है। प्रशस्ति तीन पृष्ठ की है।

अन्तिम भाग इस प्रकार है—

इति गोविन्द रचिते पुरुषार्थानुशासने कायस्थ माथुर वंशावतंस लक्ष्मण नामांकिते मोक्षार्थख्यान नाम षष्टमोवसरः।

१६२ पुष्पांजलि व्रतोद्यापन।

रचयिता धर्मचन्द्र के शिष्य श्री गंगादास। पत्र संख्या ८. साइज ११॥×६ इञ्च लिपि संवत् १६६५.

१६३ पूजा संग्रह।

भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २१. साइज ६×६॥ इञ्च। आदिनाथ, अजितनाथ तथा संभवनाथजी की पूजा है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५०. साइज ६×६॥ इञ्च। प्रति प्राचीन है। प्रति में निम्न पूजायें हैं।

1. चतुर्विंशतिपाठ
2. चन्द्रप्रभपूजा
3. मल्लिनाथ पूजा

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४४. साइज १२×८ इञ्च। चतुर्विंशति जिनपूजा रामचन्द्र कृत है। प्रति जीर्ण हो चुकी है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ४१. साइज ११॥×६ इञ्च। आदिनाथ से नेमिनाथ तक की पूजायें है।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ४२. साइज ११×६ इञ्च। भाषा संस्कृत। आदिनाथ से पार्श्वनाथ तक पूजायें है।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ४६. साइज १३॥×८॥ इञ्च। भाषा हिन्दी। आदिनाथ से अरहनाथ तक की पूजायें हैं।

१६४ पूजा संग्रह

इस संग्रह में निम्न लिखित पूजायें हैं—

पूजा नाम	भाषा	पत्र संख्या	लिपि संवत्
तीर्थोदक विधान	संस्कृत	५	१८८२
अक्षयनिधि पूजा	,,	४	,,
सूत्र पूजा	,,	२	×
अष्टाह्निका पूजा	,,	१६	१६७४
द्वादशांग पूजा	हिन्दी	१३	×
रत्नत्रय पूजा	सस्कृत	६	×
सिद्धचक्र पूजा	,,	८	×
बीस तीर्थंकर पूजा	,,	३	×
देवपूजा	हिन्दी	१०	×
ऋषि मंत्रपूजा	संस्कृत	६	×
सिद्ध पूजा	,,	५	×

१६५ पूजापाठ संग्रह।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४७. साइज १०॥×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्तिम पत्रों के अतिरिक्त २,४४,४५,४६ के पृष्ठ भी नहीं हैं।

१६६ पूजा सामग्री संग्रह।

लिपिकर्त्ता अज्ञात। पत्र संख्या ४. इस संग्रह में विविध पूजा प्रतिष्ठाओं के अवसर पर सामग्री की सूची तथा प्रमाण दिया है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २१. साइज १०॥×४ इञ्च।

ब

१६७ ब्रह्मविलास।

रचयिता भैया भगवतीदास। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या १६५. साइज १२×४ इञ्च। लिपि संवत् १६५६. प्रति पूर्ण है। लिखावट सुन्दर नहीं है।

१६८ बीस तीर्थंकर पूजा।

रचयिता श्री छीतरदास। भाषा हिन्दी। पृष्ठ संख्या ६६. साइज १२।।×८ इञ्च। लिपि संवत् १६७६. प्रति नवीन है लिखावट सुन्दर है। पूजायें अलग २ हैं। अन्त में ग्रन्थकर्त्ता ने प्रशस्ति भी लिखी है।

१६६ बुधजनसतसई।

रचयिता पं० बुधजन। भाषा हिन्दी पृष्ठ संख्या २५. साइज १०।।×७।। इञ्च।

भ

१७० भगवती आराधना।

रचयिता श्री शिवार्य। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या २४३. साइज १०×४।। इञ्च। प्रति नवीन है।

१७१ भजनावलि।

संग्रहकर्त्ता श्री दुर्गालाल। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ६०. साइज १२×५।। इञ्च। अनेक भजनों का संग्रह है।

१७२ भट्टारक पट्टावली।

पृष्ठ संख्या ६. भाषा हिन्दी। भट्टारकों की नामावली दी हुई है। उनके भट्टारक होने का समय स्थान आदि का भी उल्लेख है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११. साइज १०×६ इञ्च।
प्रति नं० ३. पत्र संख्या ३. साइज ११×४।। इञ्च।
प्रति नं० ४. पत्र संख्या ३. साइज ११×५ इञ्च।
प्रति नं० ५. पत्र संख्या ११. साइज १०।।×५ इञ्च। भट्टारकों का विस्तृत परिचय दिया हुआ है।

१७३ भक्तामर स्तोत्र वृत्ति।

वृत्तिकार ब्रह्मरायमल्ल। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३८. साइज १०।।×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर। प्रति पूर्ण है।

१७४ भक्तामरस्तोत्र।

प्रति सटीक है। मन्त्रों सहित है। मन्त्रों के चित्र तथा विधि आदि सभी लिखी हुई है। पत्र संख्या २५. साइज १०।।×७ इञ्च। तीसरे पद्य से ४१ वें पद्य तक है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २५. साइज ६×५ इञ्च। प्रति पूर्ण है।

१७५ भक्तामरस्तोत्र मंत्र विधि।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २७. साइज ६×३॥ इञ्च। मंत्र बोलने वाले आदि सभी के लिये विधि दे रखी है।

१७६ भक्तामर भाषा।

भाषाकर्त्ता श्री नथमल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ६०. साइज ६×६ इञ्च। रचना १८२६. लिपि संवत् १८७६. पं० रतनचन्दजी के शिष्य लाल ने प्रतिलिपि बनायी।

१७७ भर्तृहरिशतक।

भाषाकार महाराज श्री सवाई प्रतापसिंह जी। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ५७. साइज ४×३॥ इञ्च। प्रथम पत्र नहीं है। लिपि संपि संवत् १६१७.

१७८ भाव संग्रह।

रचयिता श्री वामदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३६. साइज १०॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १६१७. प्रशस्ति है।

१७९ भावसार संग्रह।

रचयिता श्री चामुंडराय। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७७२. लिपिकर्त्ता भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति। लिपिस्थान आमेर (जयपुर)

१८० भैरव पद्मावती कल्प।

रचयिता श्री मल्लिषेण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५६. साइज १५×७ इञ्च। प्रति सटीक है। प्रशस्ति है। विषय—मन्त्र शास्त्र। प्रथम चार पत्र नहीं है।

म

१८१ मदन पराजय।

रचयिता श्री जिनदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६७. साइज १०×३॥ इञ्च। प्रति पूर्ण है।

१८२ महापुराण।

रचयिता पुष्पदंत। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ५६३. साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत् १६०६.

लिपिकर्त्ता ने अन्त में विस्तृत प्रशस्ति दे रखी है। ग्रन्थ पूर्ण है। आचार्य श्री जयकीर्ति ने उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनवायी।

१८३ महापुराण भाषा।

भाषाकर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी (गद्य)। पत्र संख्या ४२५. साइज १२॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८०३. कोटा निवासी श्री गूजरमल निगोत्या ने उक्त पुराण की प्रतिलिपि करवायी।

१८४ महीपाल चरित्र।

रचयिता महाकवि श्री चारित्र भूषण मुनि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३५. साइज १०×४ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या ६६५. प्रति शुद्ध तथा सुन्दर है। प्रशस्ति है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३८. साइज ११×५॥ इञ्च।

१८५ महीपालचरित भाषा।

भाषाकार श्री नथमल। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ३८. साइज १३×७॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पृष्ठ पर ४२-४४ अक्षर। ग्रन्थ पूर्ण है। भाषाकार द्वारा लिखित प्रशस्ति है। रचना संवत् १९१८. लिपि संवत् १९८२. लिखावट सुन्दर है।

१८६ महीपाल चरित्र भाषा।

भाषाकर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ५३. साइज १२×८ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-३८ अक्षर। महाकवि चारित्र भूषण द्वारा रचित संस्कृत काव्य का हिन्दी अनुवाद है। हिन्दी प्राचीन होने पर भी अच्छी है। प्रति बिलकुल नवीन है।

१८७ मिथ्यात्व निषेधन।

रचयिता महाकवि बनारसीदास। भाषा हिन्दी गद्य। पृष्ठ संख्या २८. साइज ११×६ इञ्च। मिथ्यात्व का अनेक उदाहरणों द्वारा खंडन किया गया है। प्रारम्भ के ८ पृष्ठों का एक तरफ का भाग फटा हुआ है।

१८८ मूलाचार।

रचयिता श्री वट्टि केलाचार्य। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या १५२. साइज ११×५॥ इञ्च। प्रति पूर्ण है। लिखावट अच्छी है।

१८९ मूलाचार भाषा ।

भाषाकर्त्ता श्री नन्दलाल और ऋषभदास । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ७५२. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ९ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३१-३५ अक्षर । रचना संवत् १८८८. लिपि संवत् १९२५. भाषाकर्त्ता ने अपना विस्तृत परिचय दिया है । जयपुर के दीवान श्री अमरचंन्द का भी उल्लेख किया है ।

१९० मूलाचार प्रदपीक ।

रचयिता आचार्य श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १३७. साइज १२×४॥ लिपि संवत् १८८३. लिपिकर्त्ता ने रामपुरा के महाराजा श्री किशोरसिंह का नामोल्लेख किया है । लिपिकर्त्ता श्री विरदीचंद । प्रति सुन्दर है ।

य

१९१ यशोधर चरित्र ।

रचयिता महाकवि पुष्पदंत । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १०८. साइज ११॥×५ इञ्च । अपभ्रंश से संस्कृत में भी उल्था दे रखा है ।

१९२ यशोधर चरित्र ।

रचयिता श्री वासवसेन । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५९. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति प्राचीन है ।

१९३ यशोधर प्रदीप ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५. साइज १०×४॥ इञ्च । प्राकृत से संस्कृत में टीका है । लिपिकर्त्ता पं० गेगा ।

१९४ यशस्तिलक चम्पू ।

रचयिता महाकवि श्री सोमदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३१५. साइज ११×५ इञ्च । प्रति प्राचीन है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४६. साइज १२×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

१९५ यशोधरचरित्र भाषा ।

भाषाकर्त्ता पंडित लक्ष्मीदास । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ६९. साइज १०॥×६ इञ्च । रचना संवत् १७८१. भाषाकर्त्ता ने अपना परिचय अन्त में लिखा है ।

१९६ योगचिंतामणि ।

रचयिता भट्टारक श्रीअमरकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२८. लिपि संवत् १७६२. लिपि स्थान टोंक ।

१९७ युगादिदेवस्तवन पूजा विधान ।

रचयिता आचार्य पद्मकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १८००. लिपिस्थान जिहानाबाद ।

ई

१९८ रत्नकरण्ड श्रावकाचार ।

रचयिता पं० श्री श्रीचन्द । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १११. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १५१६.

१९९ रत्नकरण्ड श्रावकाचार ।

रचयिता स्वामी समन्तभद्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २०. साइज १०×५ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार का नाम प्रभाचन्द है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १३. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १९३०.

२०० रत्नकरण्डश्रावकाचार सार्थ ।

मूलकर्त्ता समन्तभद्राचार्य । भाषाकार अज्ञात । पत्र संख्या ५६. साइज ८×८. लिपि संवत् १९६४.

२०१ रसमञ्जरी ।

रचयिता श्री भानुदत्तमिश्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४१. साइज ११×५ इञ्च । प्रति पूर्ण है ।

२०२ रात्रि भोजन परित्याग कथा ।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६५. साइज ८॥×६ इञ्च ।

२०३ रामसनेही उत्पत्ति वर्णन ।

पृष्ठ संख्या २. भाषा हिन्दी । साइज ६×५ इञ्च । रामसनेही साधुओं की उत्पत्ति का वर्णन है ।

२०४ रोट तीज कथा ।

पत्र संख्या ५. भाषा हिन्दी गद्य । लिपिकर्त्ता मुन्शीलाल जैन । लिखावट सुन्दर है ।

२०५ रौद्रव्रतकथा ।

रचयिता श्री गणि देवेन्द्रकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५. साइज १०॥×५ इञ्च ।

ल

२०६ लग्नचन्द्रिका ।

रचयिता पं० काशीनाथ । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २५. साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८५२. लिपिकर्त्ता श्री रामचन्द्र ।

२०७ लघुशान्तिविधान ।

रचयिता पं० आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११. साइज १०॥×५ इञ्च । लिपि संवत् १८७६. लिपिकर्त्ता ने प्रशस्ति में महाराजा सवाई जयसिंह का उल्लेख किया है । लिपिकर्त्ता श्री नैणसुख ।

२०८ लब्धिसार ।

रचयिता नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या १४१. भाषा प्राकृत–संस्कृत । साइज १०×५॥ इञ्च । जयधवला नामक महाग्रन्थ में से लब्धिसार के विषय को लिया गया है । गाथाओं का अर्थ संस्कृत में अच्छी तरह दे रखा है । प्रति नवीन है । लिपि संवत् १८२३.

२०९ लोकनिराकरण रास ।

रचयिता श्री रत्नभूषण । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ३१. साइज ११॥×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२–३६ अक्षर । रचना संवत् १६२७. लिपिसंवत् १७१०. अन्त में ग्रन्थकर्त्ता ने अपना परिचय दिया है । ग्रन्थ प्राचीन है , ग्रन्थ की हालत विशेष अच्छी नहीं है ।

व

२१० वज्रकुमार महामुनिकथा ।

रचयिता ब्रह्म श्र. नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६. साइज ८॥×६ इञ्च ।

२११ वरांगचरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री वर्द्धमानदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६८. साइज १०×५ इञ्च । श्लोक संख्या १३८३. सर्ग संख्या १३. चरित्र पूर्ण है तथा सुन्दर लिखा हुआ है ।

२१२ वसुनन्दीश्रावकाचार ।

भाषाकार भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ४२६. साइज ११×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२–३५ अक्षर । प्रति अपूर्ण है । ४२६ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं । भाषाकर्त्ता ने दौलतरामजी की वचनिका का उल्लेख किया है । भाषा स्पष्ट तथा सुन्दर है ।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ३७४. साइज १२×५॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ३७४ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रति नं० ३. संख्या ३३६ से ३५४. साइज १२×५॥ इञ्च । ग्रन्थ का अन्तिम भाग है ।

२१३ व्रत कथा संग्रह ।

संग्रह कर्त्ता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५. साइज १०॥×५ इञ्च । संग्रह में निम्न कथायें हैं—

षोड़श कारण व्रत कथा
मेघमाला व्रत „
चंदन षष्टी व्रत „
लब्धि विधान „
पुरंदर विधान „

२१४ व्रतसार संग्रह ।

संग्रह कर्त्ता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६. साइज १०×५ इञ्च । संग्रह में समन्तभद्र, प्रभाचन्द्र, यशः कीर्त्ति आदि आचार्यों की कृतियों का संग्रह है ।

२१५ व्रत कथा कोश भाषा ।

मूल कर्त्ता आचार्य श्रुतसागर । भाषाकार श्री ·············दास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १३७ रचना संवत् १७८७, प्रशस्ति दी हुई है । २४ कथायें हैं ।

२१६ वर्तमान चौबीसी का पाठ ।

रचयिता कविवर देवीदास । भाषा हिन्दी पत्र संख्या १०३. साइज १०×६ इञ्च । विषय-पूजा पाठ । अन्तिम पत्र पर कागज चिपके हुये होने के कारण लिपि काल वगैरह पढने में नहीं आ सकते हैं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६०. साइज १०×५॥ इञ्च । रचना संवत् १८२१. पाठ कर्त्ता ने अन्त में अपना परिचय भी दे रखा है ।

२१७ वर्द्धमानपुराण भाषा ।

मूलकर्त्ता आचार्य सकलकीर्त्ति । भाषाकार अज्ञात । भाषा हिन्दी गद्य पद्य । पत्र संख्या १७३. साइज ११।।×८।। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६–४३ अक्षर । प्रति अपूर्ण है । प्रति ज्यादा प्राचीन नहीं है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १३६. साइज १०।।×५ इञ्च । लिपि संवत् १६५६ ।

२१८ वर्द्धमानमहाकाव्य ।

रचयिता महाकवि श्री असग । भाषा संस्कृत, पत्र संख्या १२०. साइज १०।।×४।। इञ्च । लिपि संवत् १७३६. पंडिताचार्य श्री तुलसीदास के पढने के लिये आचार्य वर्य श्री उदय भूषण ने महाकाव्य की प्रति लिपि बनायी । प्रति जीर्ण हो गयी है ।

२१९ व्रतोद्यापन श्रावकाचार ।

रचयिता पंडित प्रवरसेन । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३१. साइज १०।।×४ इञ्च । लिपि संवत् १५४१. प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२२० व्रतोद्यापनश्रावकविधान ।

रचयिता पं० अभ्रदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २२. साइज ११।।×४।। इञ्च । रचना संवत् १८३६ । ग्रन्थ कर्त्ता ने अन्त में अपना परिचय भी दिया है ।

२२१ वाग्भट्टालंकार।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २५. साइज १०।।×४।। इञ्च । लिपि संवत् १७२४. लिपिकर्त्ता मुनि श्री रविभूषण । प्रति पूर्ण तथा नवीन है ।

२२२ वास्तुपूजा ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १०।।×४. इञ्च । लिपि संवत् १७६८, लिपिकर्त्ता श्री दोदराज । उक्त पूजा प्रतिष्ठापाठ में से ली गयी है ।

२२३ विजयपताकायंत्र ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १५×७ इञ्च । विषय-मंत्र शास्त्र । मंत्र का चित्र भी दे रखा है ।

२२४ विदग्धमुखमंडन सटीक।

पृष्ठ संख्या ६०. साइज ६॥×३॥ इञ्च। प्रति पूर्ण है। लिपि संवत् १७०३. अक्षर मिटने लग गये हैं तथा पढने में नहीं आते हैं।

२२५ विद्यानुवाद।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७३. साइज १५॥×७ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। ७३ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं। विषय—मन्त्र शास्त्र।

२२६ विद्यानुवाद पूजा समुच्चय।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०४. साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत् १४८७. लिपि कर्त्ता श्री टीला। प्रशस्ति दी हुई है। ग्रन्थ महात्मा प्रभाचन्द्र को भेंट किया गया था। विषय—मन्त्र शास्त्र।

२२७ विमानशुद्धिपूजा।

रचयिता यति श्री चन्द्रकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११. साइज ८॥×७ इञ्च। लिपि संवत् १८६०।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०. साइज १०॥×५ इञ्च। लिपि संवत १८८२. लिखावट अच्छी है।

२२८ विवाहपटल।

लिपिकर्त्ता पं० रेखा। पत्र संख्या २६. भाषा संस्कृत। साइज १०×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १७०६. लिपिस्थान चाटसू।

२२९ विवेक विलास।

रचयिता श्री जिनदत्त सूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०३. साइज १०॥×४ इञ्च। लिपि संवत १७८२ प्रति जीर्ण शीर्ण अवस्था में है।

२३० वैद्य जीवन।

रचयिता श्री लोलम्भिराज। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या २१. साइज ११×५ इञ्च। प्रति पूर्ण है। अध्याय पांच हैं।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ३२. साइज १०×७ इञ्च। प्रति पूर्ण है।

२३१ वैद्यमनोत्सवभाषा ।

भाषाकर्त्ता श्री चैनसुख । भाषा हिन्दी गद्य । पृष्ठ संख्या २८. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १८२६. प्रति पूर्ण है ।

२३२ वैराग्य मणि माला ।

रचयिता ब्रह्म श्री चन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १०॥×४ इञ्च । पद्य संख्या ७१.

२३३ वृहद् गुर्वावलीपूजा ।

रचयिता श्री स्वरूपचंद । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ३५. साइज १०॥×५ इञ्च । प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है ।

२३४ वृहद् शान्तिविधान ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४६. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८८१. लिपिकर्त्ता ने प्रशस्ति भी लिखी है ।

श

२३५ शब्दभेदप्रकाश ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २०. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपिकर्त्ता पं० रत्नसुख । प्रति नवीन तथा पूर्ण है ।

२३६ शलाकानिर्वेहणनिष्कासनविधि ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७. साइज ११×४ इञ्च । प्रति जीर्ण शीर्ण हो चुकी है ।

२३७ शांतिनाथपुराण ।

रचयिता मुनि श्री असग । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६१. साइज १२×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३७-४२ अक्षर । *प्रति प्राचीन किन्तु सुन्दर है । श्लोक संख्या २७३१.*

२३८ शांतिनाथपुराण ।

रचयिता आचार्य श्री सकलकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७५. साइज १२×५ इञ्च । लिपि संवत् १८५२. लिपिकर्त्ता पं० विद्याधर ।

२३९ शान्तिपूजा विधान।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। अनेक देवी देवताओं को पूजा में निमन्त्रित किया गया है तथा उनको शान्ति के लिये प्रार्थना की गयी है। प्रति पूर्ण है। लिखावट अच्छी है।

२४० शील कथा।

रचयिता पं० भारमल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ५६. साइज १०॥×५ इञ्च। प्रति पूर्ण है।

२४१ शीलकथा।

भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या २१. साइज १२॥×७ इञ्च। लिपि संवत् १९८५. प्रति नवीन है। लिखावट सुन्दर है।

२४२ श्रावकाचार।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १४. साइज १०×४॥ इञ्च। श्रावकाचार के विषय में संक्षेप रूप से वर्णन किया गया है।

२४३ श्रावकाचार।

रचयिता आचार्य अमितिगति। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या ४०. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४-४८ अक्षर। लिपि संवत् १६६१. ग्रन्थ पूर्ण है।

२४४ श्रीपाल कथा।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ४५. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १९२८. लिपि स्थान जयपुर।

२४५ श्रीपाल चरित्र।

रचयिता श्री नरसेन। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४१. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १५२३. लिपि स्थान गोपाचल गढ।

२४६ श्रीपाल चरित्र।

रचयिता श्री कविवर परिमल्ल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ७८. साइज १२॥×८॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या ३०००. ग्रन्थ कर्त्ता ने अन्त में अपना परिचय लिखा है। प्रशस्ति में अकबर के शासन काल का भी उल्लेख किया है। प्रति नवीन है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८२. साइज १२||×८||
प्रति नं० ३. पत्र संख्या ८६. प्रति नवीन है।

२४७ श्रीपाल चरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३१. साइज १०×४|| इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १८०४. लिपि संवत् १६४६. श्री पद्मकीर्त्ति के शिष्य केशव ने ग्रंथ की प्रतिलिपि बनवायी। प्रति पूर्ण है लेकिन जीर्णावस्था में है।

२४८ श्रीपाल चरित्र भाषा।

भाषाकार श्री विनोदीलाल। भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या ८१. साइज ११||×५|| इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १३५४. रचना संवत् १७५०. लिपि संवत् १९१९. प्रति पूर्ण है लेकिन अन्तिम पृष्ठ फटा हुआ है। ग्रन्थ के अन्त में भाषाकार ने एक विस्तृत प्रशस्ति लिखी है जिसमें अपने वंश परिचय के अतिरिक्त तत्कालीन बादशाह तथा उसके राजशासन का भी उल्लेख किया है।

२४९ श्रुतस्कंध पूजा।

लिपिकर्त्ता श्री मनोहर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४. साइज १०||×५ इञ्च। लिपि संवत् १७८५.

२५० श्रुतसागर व्रत कथाकोष।

रचयिता श्री श्रुतसागराचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८८. साइज ११||×५ इञ्च। लिपि संवत् १८२७. लिपिकर्त्ता पं० रायचंद। २४ कथायें हैं। प्रति की अवस्था साधारण है।

२५१ श्रेणिक चरित्र।

रचयिता श्री शुभचन्द्राचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १२२. साइज ११×४ इञ्च। लिपि संवत् १६५२. ग्रन्थकार तथा लिपिकार दोनों के द्वारा ही प्रशस्तियां दी हुई है। ग्रन्थ पूर्ण है।

२५२ श्रेणिक चरित्र भाषा।

भाषाकार भट्टारक श्री विजयकीर्त्ति। भाषा हिन्दी (पद्य)। पृष्ठ संख्या ६५. साइज १२×५|| इञ्च। रचना संवत् १८२७. लिपि संवत् १८६४. प्रशस्ति दी हुई है। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है।

ष.

२५३ षट् दर्शनसमुच्चय सटीक।

रचयिता श्री हरिभद्रसूरि। टीकाकार श्री गुणरत्नाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११५. साइज

६॥×६॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०–४४ अक्षर।

२५४ षट् पाहुड़ सटीक।

टीकाकार श्री श्रुतसागर। पत्र संख्या १६४. साइज १८×५ इञ्च। लिपि संवत् १८३१. दीवान नंदलाल ने भट्टारक श्री सुरेंद्रकीर्त्ति जी के लिये ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी। लिपि स्थान–जयपुर। प्रति पूर्ण है तथा सुन्दर है।

२५५ षट् पाहुड।

रचयिता कुन्दकुन्दाचार्य। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ६१. साइज १२×५॥ इञ्च। संस्कृत में अनुवाद भी है।

२५६ षोडसकारणोद्यापन पूजा।

रचयिता श्री सुमतिसागर देव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६. साइज ११×५ इञ्च।

स

२५७ संग्रहणी सूत्र।

रचयिता श्री हेमसूरि। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ५७. साइज ११×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७८४. ग्रंथ श्वेताम्बर संप्रदाय का है। अनेक प्रकार के चित्रों के द्वारा स्वर्ग नरक के सिद्धान्तों को समझाया गया है।

२५८ सप्तव्यसन कथा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३४४. साइज ८×६॥ प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २२–२६ अक्षर। प्रति अपूर्ण है। प्रति सटीक है। सात व्यसनों पर अलग २ कथायें हैं। भाषा सुन्दर तथा सरल है।

२५९ सप्तव्यसन कथा।

रचयिता आचार्य सोमकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३०. साइज ८॥×६ इञ्च। प्रति अपूर्ण है अन्तिम पत्र नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८६. साइज ११×५॥ इञ्च।

२६० सप्तऋषिपूजा।

रचयिता भट्टारक श्री विश्वभूषण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २०. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नवीन है।

प्रति नं० २. संख्या १६. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रति पूर्ण है। इसी पूजा की दो प्रति और हैं।

२६१ समयसारसटीक।

मूलकर्त्ता आचार्य कुन्दकुन्द। टीकाकार श्री अमृत चन्द्राचार्य। भाषा प्राकृत-संस्कृत। पत्र संख्या २३५. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर। प्रति नवीन है। लिखावट सुन्दर है। टीका का नाम आत्मख्याति है।

२६२ समयसार नाटक।

रचयिता महाकविता बनारसीदास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ७२. साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १६२७. प्रति पूर्ण है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७६. साइज १२×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७१३ माह बुदी १३.

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ८५. साइज ६×८॥ इञ्च। प्रति प्राचीन है। प्रथम पृष्ठ तथा ७८ से ८५ तक के पृष्ठ नये जोडे गये हैं।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या २६३. साइज १२॥×६॥ इञ्च। पद्यों का गद्य में भी अर्थ है। अक्षर बहुत मोटे हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर ४ पंक्तियां ही हैं। लिपि संवत् १६१५.

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ७८. साइज १०॥×४ इञ्च। प्रति प्राचीन है।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १७१. साइज १०॥×५ इञ्च। संस्कृत टीका की हिन्दी में अर्थ लिखा गया है। भाषा गद्य में है। लिपि संवत् १७२३. लिपिस्थान चाटसू।

२६३ समवसरणविधान।

रचयिता पंडित रूपचन्दजी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८७६. प्रशस्ति लिपिकर्त्ता तथा ग्रन्थकर्त्ता दोनों की लिखी हुई है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६८. साइज १०॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८८१.

२६४ समाधि शतक।

रचयिता श्री पूज्यपाद स्वामी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २१. साइज १२×५ इञ्च। प्रति पूर्ण है।

२६५ सम्मेद शिखर महात्म्य।

रचयिता श्रीमत् दीक्षतदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११४. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८६७.

२६६ सर्वार्थसिद्धि ।

रचयिता श्री पूज्यपाद स्वामी । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४१. साइज १०।।×५ इञ्च । लिपि संवत् १५७२. प्रशस्ति है । प्रति पूर्ण है ।

२६७ सहस्रनामजिनपूजा ।

स्तोत्रकर्त्ता आचार्य जिनसेन । पूजाकर्त्ता श्री धर्म्मभूषण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७४. प्रत्येक पत्र पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर । लिपि संवत् १८८१: लिपिकर्त्ता पंडित चंपारामजी । प्रति नवीन है ।

२६८ सहस्रगुणीपूजा ।

रचयिता साधु श्री पीथा । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७०. साइज १०×५ इञ्च । प्रति पूर्ण तथा नवीन है ।

२६९ सागर धर्मामृत ।

रचयिता महापंडित आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४९. साइज १०।।×५ इञ्च । लिपि संवत् १८१६. लिपिकर्त्ता पं० गुमानीराम । प्रति सटीक है । टीका का नाम कुमुदचन्द्रिका है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६६. साइज १०।।×५।। इञ्च । लिपि संवत् १६११. प्रति नवीन है । लिखावट सुन्दर है । लिपिकर्त्ता द्वारा लिखी हुई । प्रशस्ति भी है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १२९. साइज १०।।×७ इञ्च । लिपि संवत् १७७१. लिपिकर्त्ता भट्टारक श्री जगत्कीर्त्तिजी । लिपिकर्त्ता ने महाराजा जयसिंहजी जयपुर का उल्लेख किया है । प्रति सटीक है ।

२७० सामायिकपाठ ।

भाषाकार श्री श्यामलाल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ३५. साइज ६×४ इञ्च । रचना संवत् १७४६. लिपि संवत् १९२१. भाषाकार ने अपना परिचय भी दिया है ।

२७१ समायिक पाठ भाषा ।

मूलकर्त्ता आचार्य प्रभाचन्द्र । भाषाकार श्री त्रिलोकेन्द्रकीर्त्ति । भाषा हिन्दी गद्य । रचना संवत् १८९१. भाषा विशेष अच्छी नहीं है । प्रति पूर्ण है ।

२७२ सामायिक वचनिका ।

भाषा कर्त्ता अज्ञात । हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ६३. लिपि संवत् १७२० लिपि स्थान चाटसू ।

२७३ सामुद्रिकशास्त्र ।

भापा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १२×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३८.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १८४४.

२७४ सार चतुर्विंशतिका ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भापा संस्कृत । पत्र संख्या १२६. साइज १०|×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६–३६ अक्षर । विपय–स्तुति आदि । लिपि संवत् १८४८.

२७५ सार संग्रह ।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात । भापा प्राकृत–हिन्दी । पत्र संख्या १२. साइज १०×५॥ इञ्च । इसमें निम्नलिखित प्रकरण हैं ।

१ ज्ञानसार ।
२ तत्वसार ।
३ चारित्रसार ।
४ भावनाबत्तीसी ।
५ ढाढसी गाथा ।

२७६ सार्द्ध द्वयद्वीपपूजा ।

रचयिता पं० आशाधर । भापा संस्कृत । पत्र संख्या ६२. साइज १२×७ इञ्च । प्रति पूर्ण है । लिखावट सुन्दर तथा स्पष्ट है ।

२७७ सिंदूर प्रकरण ।

रचयिता श्री कौरपाल बनारसीदास । भापा हिन्दी । पत्र संख्या २३. साइज ६||×५ इञ्च ।

२७८ सुकुमालचरित्र भापा ।

भापाकार अज्ञात । भापा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ३२. साइज १०×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २४–२८ अक्षर । लिपि संवत् १८६७ आपाढ़ सुदी ६. लिपिस्थान चंपावती । श्री भागचन्दजी के पढने के लिये ग्रन्थ की प्रतिलिपि करायी गयी ।

२७९ सुकुमाल चरित्र भापा ।

भापाकार श्री गोकुल जैन गोलापूर्व । भापा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ४५. साइज १३×७॥ इञ्च । प्रति नवीन है लिपि सुन्दर है ।

२८० सुकुमालचरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३१. साइज १२×५॥ इञ्च । श्लोक संख्या ११००. लिपि संवत् १८८६. ग्रन्थ पूर्ण है । प्रथम दो पृष्ठ नहीं हैं ।

२८१ सुगन्ध दशमी व्रतकथा ।

रचयिता ब्रह्मज्ञान सागर भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ७. साइज ६×५॥ इञ्च । पद्य संख्या ४५.

२८२ सूक्तिमुक्तावली ।

रचयिता श्री सोमप्रभाचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५. साइज १०॥×४ इञ्च । प्रति पूर्ण है ।

२८३ सुभौमचरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री रत्नचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५१. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत १६५८.

२८४ सुभाषितरत्नसंदोह ।

रचयिता अमितिगत्याचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५७. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति पूर्ण है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७५. साइज ११×५ इञ्च । प्रति नवीन है ।

२८५ सुभाषितार्णव ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६७. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६४८. प्रति प्राचीन है ।

२८६ सूतकविधान ।

लिपिकर्त्ता श्री किशनलाल । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या २. साइज ६॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत १६१५.

२८७ स्तोत्र संग्रह ।

इस संग्रह में निम्न स्तोत्र हैं ।

स्तोत्र नाम	भाषा	संख्या पत्र
चौसठ योगिनी स्तोत्र	संस्कृत	२
पार्श्वजिनस्तोत्र	„	१
पद्मावती स्तोत्र	„	६

ऋषिमंडल महास्तोत्र	"	६
एकीभावस्तोत्रं	हिन्दी	४
कल्याण मन्दिर स्तोत्र	"	६
अपराध क्षमा स्तोत्र	संस्कृत	१०
विषापहार स्तोत्र	हिन्दी	५
भक्तामर स्तोत्र	संस्कृत	६
" सटीक (श्री मेघ)	"	२५
पद्मावती पटलं	"	७
समवशरण स्तोत्र	"	८
एकीभाव स्तोत्र (भूधरदास)	"	१२

२८८ स्तोत्र संग्रह।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पृष्ठ संख्या १७। साइज ६×३॥ इञ्च। संग्रह में निम्न विषय हैं-

१ अकृत्रिम चैत्यालय
२ भक्तामर स्तोत्र
३ विषापहार स्तोत्र
४ द्यानतराय जी के पद

प्रति नं० २। पत्र संख्या ११। साइज १२×५॥ इञ्च। २ से चार तक के पृष्ठ नहीं हैं।

१ ऋषि मंडल स्तोत्र
२ लक्ष्मी स्तोत्र
३ पद्मावती स्तोत्र
४ भक्तामर स्तोत्र
५ पन्द्रह का मंत्र

२८९ स्तोत्र संग्रह।

संग्रहकर्त्ता पं० सदासागर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १७७। साइज १०॥×४॥ इञ्च। संग्रह में स्तोत्र, आदि हैं जिनकी सूची ग्रन्थ में दे रखी है। प्रति की अवस्था ठीक है।

२९० स्वयम्भूस्तोत्र।

भाषाकार श्री द्यानतराय जी। पत्र संख्या ४। साइज ७×५ इञ्च। लिपि संवत् १९५६। लिपिकर्त्ता श्री देवलाल।

२६१ स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा ।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द्र । भाषा प्राकृत–संस्कृत । पत्र संख्या १६४ । साइज ८×६ इञ्च । लिपि संवत् १८६४ । लिपिकर्त्ता श्री नानगराम।

ह

२६२ हनुमंतकथा ।

रचयिता ब्रह्मरायमल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ५५. साइज १३×७ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२–३४ अक्षर । रचना संवत् १६१६. प्रति पूर्ण है । लिखावट सुन्दर है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६४. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत १७८४. लिपिकर्त्ता पं० दयाराम ।

२६३ हनुमच्चरित्र ।

रचयिता श्री ब्रह्मजित । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६५. साइज ११॥×६ इञ्च । लिपि संवत् १८०५. लिपिस्थान जयपुर । बारह सर्ग है । प्रति पूर्ण है ।

२६४ हरिवंश पुराण ।

रचयिता ब्रह्म जिनदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २२२. साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८१६.

२६५ हरिवंश पुराण टिप्पण ।

टिप्पणी कर्त्ता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३८. साइज १०×४ इञ्च । लिपि संवत् १५५५. उक्त पुराण का सार दे रखा है ।

२६६ होली प्रबन्ध ।

रचियता श्री कल्याणकीर्त्ति । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ४. साइज १०॥×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १७२५. रचना प्राचीन है ।

२६७ हैमीनाममाला ।

रचयिता श्री हेमचन्द्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५७. साइज १२×४ इञ्च । लिपि संवत् १८५६. लिपिस्थान चणिभारा (जयपुर) लिपिकर्त्ता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति ।

त्र

२९८ त्रिकांडशेष।

रचयिता श्री पुरुषोत्तम देव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३५. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत १८३४.

२९९ त्रिपंचाशत्क्रिया व्रतोद्यापन।

रचयिता श्री विक्रम स्वामी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २७. साइज ११×५ इञ्च। रचना संवत १६४०. प्रथम १० पत्र नहीं हैं।

३०० त्रिलोकपूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २८६. साइज १०॥×५ इञ्च। सभी तरह की पूजाओं का संग्रह है। लिपि संवत् १९१७.

३०१ त्रिलोकसार।

रचयिता श्री नेमिचन्द्राचार्य। भाषा प्राकृत। पृष्ठ संख्या ७६. साइज १२×५ इञ्च। प्रति पूर्ण है। १,४४,५७ वें पृष्ठ पर सुन्दर चित्र हैं। प्रति प्राचीन है। लिपिकर्त्ता श्री स्वरूपचन्द।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या १५८. साइज ११॥×५ इञ्च। प्रारम्भ में लिपिकर्त्ता ने छोटे २ अक्षर तथा अन्त में मोटे २ अक्षर लिखे हैं।

३०२ त्रिलोकसारभाषा।

भाषाकर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ५०. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। ५० से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

३०३ त्रैलोकसार सटीक।

टीकाकार माधवचन्द्र त्रैविद्य। भाषा प्राकृत संस्कृत। पत्र संख्या १७१. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति नवीन है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १६५. साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६७२. टीकाकार श्री सागरसेन।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ८१. साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपिकर्त्ता श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति। प्रथम पृष्ठ पर ५ सुन्दर चित्र हैं।

३०४ त्रिवर्णाचार।

रचयिता आचार्य सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५८. साइज १०×५ इञ्च। अधिकार पांच हैं। लिपि संवत् १६३५. लिपिकर्त्ता वोदीलाल।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५० साइज १४×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। ५० से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

३०५ त्रिवर्णाचार।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २४. साइज १०॥×५ इञ्च।

३०६ त्रैलोक्य प्रदीप।

रचयिता इंद्रवामदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६६. अध्याय तीन हैं। लिपि संवत् १८२७. वैशाख बुदी १४. प्रति पूर्ण है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८६. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १४३६. लिपिस्थान योगिनीपुर। लिपिकर्त्ता ने फिरोजशाह तुगलक के शासन काल का उल्लेख किया है। लिखावट सुन्दर है।

३०७ त्रैलोक्य स्थिति।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११. साइज ११×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८२३. लिपिकर्त्ता नैणसागर। तीनों लोकों के आकार प्रकार सम्बन्धी विषय को रेखागणित द्वारा समझाया गया है।

ज्ञ

३०८ ज्ञानार्णवसार।

रचयिता आचार्य श्रुतसागर। भाषा संस्कृत गद्य। पत्र संख्या ६. साइज १२×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७८५. लिपिकर्त्ता पं० मनोहरलाल। लिपिस्थान आमेर। संक्षिप्त रूप से ज्ञानार्णव का सार दिया हुआ है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १३. साइज ११॥×५ इञ्च।